



ज्ञान भारती

4/14, रुयनगर, दिल्ली-110007

पानी का पेड़

कृष्ण चोपड़ा



प्रकाशक
नान भारती,
- 4/14, रूपनगर
दिल्ली 110007

सर्वाधिकार
सुरक्षित

मूल्य 38 00

प्रथम संस्करण
1990

मुद्रक
जतिन प्रिंटस,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

क्रम

पानी का पेड	1
बया बरू	18
अमरीका से आने वाला हिंदुस्तानी	32
सौ रुपय	41
सपनों के इशारे	52
घर	67
हवा के बेटे	75
प्रखर ज्योति	93
परमात्मा	103

पानी का पेड़

जहाँ हमारा गाव है वहाँ दाना आर सब मूखे पवतो की पथरीली श्रृखलाए है। पूर्वी पवत माला बिलकुल नगी है, वनस्पति नाम का नही, केवल उनक अदर नमक की खाने ह। पश्चिम पवत माला पर बूड, बटकड, अमलतास और कीकर क वक्ष उग हुए है। उसकी चट्टाने श्यामल है परतु इन श्यामल चट्टाना म मीठे पानी क दा जनमोल चश्मे है और इन दा पवत मालाआ क बीच, घाटी म हमारा गाव आबाद है।

हमार गाव म पानी बहुत दुलभ है। जब म मैंने होश सभाला है, अपन गाव के आकाश का तपत हुए पाया ह, यहाँ की धरती को हाफत हुए दखा है और गाव वाला क परिश्रम करन वाल हाथा और चहरा पर एक एसी तरसी हुई भूरी चमक देखी है, जो शताब्दियो की अतृप्त तृष्णा से उत्पन हाती है।

हमारे गाव के मजान और जामपास की धरती भूरी दिखाई पडती है। धरती स बाजर की जो फमल पदा होती है, वह भी भूरी बल्कि श्यामल-सी होती है। यहीं दशा हमार गाव क किसाना की है और उनके कपडो की है। केवल हमार गाव की स्त्रिया का रग सुनहरा है, क्याकि वे चश्म से पानी लाती ह।

बचपन स ही मेरी स्मृतिया, पानी की स्मृतिया ह। पानी की तडप और उसकी मुस्कान, उमका मिल जाना और फिर उसका खो जाना— यह धरती इसी क विरह की तथा इसी क मिलन की कहानी की पृष्ठ-भूमि है।

मुझे याद है, जब मैं बहुत छाटा-ना था, तो दादी व माय गाव की पाटी व नीच बहती हुई रवल नदी व किनार कपडे धान जाता था। दादी कपडे धाती थी मैं टह सूखाने व लिए नदी व किनार की चमकती हुई भूरी रत पर डाल दिया करता था। इस नदी म पानी बहुत कम था। यह बड़ी दुबली पतली नदी थी—छरहरी और म गामिनी, जस हमारे मरपार पदा या की लडकी बाना। मुझे इस नदी व माय खेलनम उनना ही जानद मिलता था जितना बाना व साथ खनन म। बाना की मुक्वान मीठी और मधुर थी और मिठाम का मूल्य वही लोग जानन है जा नमक की खाना म काम करत है।

मुझे याद है हमारी खनन नदी मान म केवन छ महीन बहती थी—छ महीन व लिए सूख जाती थी। जब चत्र का महीना जान लगता, तो नदी सूखनी शुरू हा जाती और जब बमाख उनगन लगता तो बिलकुल सूख जाती और उमकी तह पर वही वही छोट नीन पत्थर पडे रह जात या नम नम कीचड जिस पर चलत हुए एसा लगता जम रशम व माट गलीचे पर घम रह हो।

कुछ ही दिना म नदी का कीचड भी सूख जाना और उसक मुख पर दराने और पपडिया का जाल मा फल जाता—ठीक बम ही जम किसी परिश्रमी किसान व हाठा पर सूखी पपडिया जम जाती है। फिर एसा लगता जस उसकी गम गुदगुदी रत न वपों स पानी की एक बूँ भी नहीं चधी।

मुझे याद है, पहली बार जब मैं नदी को इस तरह सूखत पाया था तो बिलकुल व्याकुल और चिंतित हा उठा था और उम चिता म रात को सो न सका था। उस रात दादा न गोम म लकर मुझे अजीब-अजीब कहानिया सुनायी थी। और मागे रात दादी की गाद म लट लट मुझे खेलन नदी की बहुत सी प्यारी प्यारा बान याद आती रही थी। उसका हीन हीन पत्थरा पर ठुमकत हुए चलना और पत्थरा व बीच स उसका वेग स और कतराकर निकलना—जस कभी-कभी बाना त्रोध म गली के मुककड से गुजर जाया करती थी।

नदी जहा एसे पत्थरो पर म गुजरती थी जा पास-पास होन थ, बहा

मैं और वानी वाजर के डठना से बनी हुई पनचक्की लटका लैत और गीला आटा पिसवात रहत थे। और पनचक्की नदी की मन् गति के बावजूद कैसे-कस तज चक्कर लगाकर घूमती थी ।

परतु अब यह नदी सूख गयी थी ।

इन सब बातों को याद करके मैंने दादी से कहा, "दादी, यह हमारी नदी कहा चली गयी?"

"घरती के अदर छिन गयी है।"

'क्या?'

"सूरज क डर से।"

"क्या? यह सूरज से क्यों डरती है? सूरज तो बहुत अच्छा होता है।"

'सूरज एक नहीं है बटा, सूरज दो हैं—एक तो जाड़ा का सूरज है, वह बड़ा अच्छा और दयालु है। दूसरा गर्मिया का है यह बहुत ज्यादा चमकीला और गुस्से वाला है। और ये दोना सूरज चारी-वारी स हमार गाव म जान ह। जब तक जाड़ा का सूरज रहता है वह नदी स खुश रहता है। परतु जब गर्मिया का जालिम सूरज आता है ता हमारी नदी क शरीर स उसका वस्त्र उतारना शुरू कर देता है। हर रोज कपडे की एक तरह उनरती चली जाती ह। और जब बैसाख का अतिम दिन आता है ता नन्ही के शरीर पर पानी की एक पतली सी चादर रह जाती है। और उस रात को हमारी नन्ही लाज के मारे घरती म छिप जाती है और बाट जोहन लगती है जाड़ा क सूरज की, जो उमक लिए पानी की नयी पाशाकें लायेगा।"

मैंने आखें थपकात हुए कहा, 'सबमुच गर्मियों का सूरज तो बहुत बुरा है।"

ता लो, अब सा जाओ, बटा।"

मगर मुझे नीद नहीं आ रही थी इसलिए मैंने एक सवाल और पूछा, 'दादी, यह हमारे नमक के पहाड का पानी कडवा क्या है।'

हमार गाव क बच्चे पानी के बारे म बहुत सवाल करत हैं। पानी उनकी जिनासा को सदैव सचेत करता रहता है। दूसरे गाव म जहा पानी

बहुत हाता है, वहा क बच्च शायद सान के द्वीप दूदत होग या परिस्तान का रास्ता पोजत हाग । लकिन हमार गाव म ता बच्चे हाश सभालत हा पानी की खोज म निकल पडत ह—घाटी म और पहाडी पर पानी खाजन का खल खलत है । मैंन भी अपन बचपन म पानी खोजा या और नमक के पहाड पर पानी के दो-तीन चश्मे खोज निकाल थ । किस तरह कापत हुए हाथो स मैंन चटाना क बीच से झिझकत हुए पानी को अपनी छोटी छाटी उगलिया का सहारा देकर बाहर निकाला था । और जब पहली बार मैंन उस अपनी आक म लिया, तो पानी हाथ म या काप रहा था जस काइ नयी नयी पक्की हुई चिडिया किसी बच्च क हाया म फडफडाती है ।

फिर जब म उस जाक म भरकर अपनी जीभ तक ल गया, तो मुझे याद है, मेरी कपकपाती छुशी कम एक कट्टु प्रतिश्रिया म बदल गयी थी । पानी ने जीभ तक जाते ही विच्छू की तरह डक मारा और उसक विप न मेरी जात्मा तक को कडवा कर दिया । मैंन पानी थूक दिया और फिर किसी नय चश्म की खोज म चल पडा । परतु नमक के पहाड पर मुझे अब तक भीठा चश्मा न मिला इसलिए जब नदी सूखन लगी ता भीठे पानी के चश्मे की याद ने मुझे बिह्वल कर दिया और मैंन दादी से पूछा, “दादी, यह नमक के पहाड का पानी कडवा क्या है ?”

दादी न कहा, यह एक दूसरी कहानी है ।’

“तो सुनाओ !

‘ नही, जब सो जाओ ।

“नही, सुनाओ ! नही तो हम रो देंग ।

“जच्छा बाबा सुनाती हू, पर तुम चिल्लाओ तो नही ?”

“नही ।’

‘ और न बीच बीच म टोकाग ? ’

‘ नही ।

“अच्छा तो सुनो ! यह उस आर जो नमक की पहाडी दखत हो, किसी जमान म एक औरत थी जो उस पहाड की ब्याहता थी जहा आज कल भीठे पानी के चश्मे है ।

“फिर ?”

‘ फिर एक दिन दानवों में बड़ी लड़ाई छिड़ी और यह सामने का पहाड़, जो इस औरत का आदमी था, लड़ाई में भर्ती हो गया और अपनी औरत को छोड़ गया। जाने समय अपनी औरत से कह गया कि वह उसके आने तक वहीं न जाये किसी में बात न बने, वरन्, अपने घर का खयाल रखे।’

“अच्छा !”

‘ फिर कई वर्ष तक वह औरत अपने पति दानव की राट जोहती रही। परन्तु उमका पति लड़ाई से न लौटा। आखिर एक दिन एक मफेद दानव उमने घर आया और उमका रूप देखते ही उससे प्रेम करने लगा।’

“प्रेम करना किसे कहते हैं, दादी ?”

दादी रुन गयी बोली, “तूने फिर टोका !”

मैंने मन में साचा अगर दादी रुठ गयी तो बाकी कहानी सुनने को न मिलगी। कहानी दिलचस्प होती जा रही है इसलिए चुपके से सुन लेनी चाहिए। प्रेम करने का मतलब बाद में पूछ लगे। इसलिए मैंने जल्दी से मोचकर कहा, “अच्छा अच्छा दादी, अब आगे सुनाओ। अब नहीं टोकेंगे।”

दादी बड़ी खलाई में बोली, जैसा उह कहानी का आगे वाला हिस्सा पसंद नहीं है।

कहने लगी “होना क्या था। पश्चिमी पहाड़ की औरत व वफा निकली। जब उसे सफेद दानव ने झूठमूठ विश्वास दिलाया कि उसका पति लड़ाई में मारा गया है तो उमने मफेद दानव से ब्याह कर लिया।’

“दानवों में लड़ाई क्या हुई थी ?”

‘ तूने फिर टोका !” दादी बहुत नाराज होकर बोली, “बल, आने नहीं सुनाऊगी।’

‘नहीं दादी जी, मेरी अच्छी दादी जी अब अब बिलकुल नहीं टोकेंगी’—मैंने खुशामद करते हुए कहा।

इस पर दादी कुछ पसीजी, ‘ फिर एक दिन बहुत वर्षों बाद बूढ़ा दानव घाटी में आया। यह उमी औरत का पहला पति था। जब उमने

अग्नी जोरत को सफेद दानव के साथ दखा, ता उसे बड़ा क्रोध आया। उसन कुल्हाड़ा लेकर अपनी औरत और सफेद दानव को कल कर दिया। फिर वह स्वयं भी मर गया। फिर य दानव लोग पत्थर व पहाड़ बन गये—बूटा दानव भी और उसकी औरत भी। चूँकि बूटे दानव का अपनी औरत में प्यार था, इसलिए उसमें मीठा पानी है। इसका विपरीत चूँकि जोरत न ब-बफाइ की थी, इसलिए उसमें खारा पानी है। खारा पानी का कारण यह है कि वह औरत पश्चात्ताप व आसू रोती रहती है जब उसके आसू सूख जाते हैं तो नमक के टुकड़े बन जाते हैं जिन्हें हर राज तुम्हारा बाप पहाड़ के अंदर से खोदकर निकालना है।'

फिर ?

'फिर कहानी खत्म।'

कहानी खत्म हो गयी और मैं भूल गया कि मैंने क्या पूछा और मुझे क्या जवाब मिला। मैंने कहानी सुनी, चने की साम लिया और लट्ट ही गहरी नींद सो गया। सात मात मेरी आंखों के सामने नमक की खान का दृश्य आया जहाँ मर जव्वा काम करते थे और जहाँ जवान हाकर मुझे काम करना था। 'आह कितनी बड़ी खान थी। चारों ओर नमक की दीवारों नमक के खंभे नमक के आईने। एक ओर नमक की थैली थी, जिसके चारों ओर नमक की दीवारें थी और नमक की छत थी जिससे बूद बूद नमक का पानी रिसता था और नीचे गिरकर थैली बन रहा था।'

मेरे अन्तर्गत इस थैली को देखकर बाल 'यहाँ इतना पानी है, परंतु फिर भी कहीं पानी नहीं है। दिन भर नमक की खान में काम करते करते सारा शरीर पर नमक की पतली सी तह जम जाती है, जिससे खुरचों का नमक चूरा चूरा होकर गिर पड़ता है। उस समय कितनी अकुलाहट होती है। जो चाहता है कहीं मीठे पानी की झील हो और अदमी उसमें गोत लगाता जाये।'

पानी !

पानी !!

सारे गाँव में पानी कहीं नहीं था। पानी नमक के पहाड़ पर भी नहीं

था। पानी था ता सामन क पहाड पर जिनन प्रेम के साथ छल नही किया था, या पानी फिर रवेल नदी म था। परतु यह नदी भी बप मे छ महीन गायब रहती थी। एक दिन ता यह बिलकुल ही गायब हो गयी, हमेशा के लिए। आज उसकी जगह नील पत्थर है और सूखी रेत। और उसके किनारे चलन वाली औरता की निराश आँखें आज तक उसकी राह तबती ह।

परतु यह मेर बचपन की कहानी नहीं है। यह मेर लडवपन की कहानी है, जब हमार गाव स बहुत दूर, उन पहाडी श्रृंखलाओं के दूमरी ओर, सक्ढा भील लवी चौडी जागीर क मालिक राजा अकबर अली खा न हमार दहात वाला का इच्छा क विरुद्ध रवेन नदी का बहाव मोडकर अपनी जागीर मे कर लिया। आर हमारी घाटी को तथा निकटवर्ती प्रदश को सूखा, बजर और वीरान कर दिया। उन समय हमार गाव वाले इस तरह यथित हा उठे जैम बहुत-स बालक अपनी मा के मरन से अनाथ हा जात ह। इस प्रकार रवेल नदी हमार लिए मर गयी, उसका पानी मर गया। और हमार लिए एक कसवती याद छाड गया।

मुझे याद है, उन समय हमार गाव वालो न दूसरे गाव वाला से मिलकर सरकार का एक अर्जी दी, राजा अकबर अली खा के अत्याचार के विरुद्ध। उहान सरकार म अपनी खोयी हुई नदी मागी थी, क्याकि नदी घर की औरत की तरह होती है। वह घर म पानी दती है, खेता को सींचती है। कपडे धानी है, शरीर का साफ करती ह। नदी के बिना हमारा गाव एसा था जैम बिना औरत का घर। गाव वालो को बिलकुल ऐमा लग रहा था, जैसे किमी न उनके घर स उनकी बटी का अपहरण कर लिया हो। उनके अदर वही रोप था, वही क्राध था, उनके वही तवर थे, वही मरने मारन के अदाज थे।

लेकिन राजा अकबर अली खा चकवाल क इलाके का सबसे बडा जमीदार था। अफमरा क साथ उसका मेल जाल था। नमक की खान का ठेका भी उसी के पास था।

नतीजा यह निकला कि गाव वाला का उनकी नदी न मिली, उलट हमार गाव के बहुत स लाग, जो नमक की खान मे काम करते थे, निकाल दिये गय। उनका दाप केवल यह था कि उहोन अपने गाव की अपहरित

नदी का बापम लौटान की माग की थी। मुझे याद है उस दिन बन्दा कापत कापत घर में आया था। उनके चहर का रंग उड़ा हुआ था और वे बार-बार अपने कानों को हाथ लगाकर कहते 'तोबा-ताबा, कसी गलता हुई'। उनके कुछ ऊपर वाल की महक थी कि बच गया, बरना राजा मानव तो नुझे भी निमान दन। मैं तो जब बमी राजा नाहब क विरुद्ध जर्जों न दगा चाहब पानी छाड, मरा लडकी हा क्या न उठाकर स जाय। तोबा नाबा !'

और यह भी सच है कि हमारे गांव में पानी की इज्जत, बटा की इज्जत की तरह बहुमूल्य है—पानी, जो जीवन प्रदान करता है पानी का नमा में श्वेत बनकर प्रवाहित होता है पानी जो मुह्र धान को नहीं मिलता, पानी जिसके अभाव में वस्त्र भंग आर गट रहते हैं, मिर में जुए, शरीर पर पगाम की धारिया और आत्मा पर ग्यार जमा रहता है। यह पानी तो मान में अधिन मूल्यवान है और बटा में अधिक रूपवान। उसका मूल्य और मान तो हमारे गांव वाला में पूछिए जिनका जीवन पानी के लिए लड़ते भगडते व्यतीत होता है। एक बार मामन क पहाड क मीठे चश्मे में पानी लान क लिए सरवर खा की बीबी मला और अय्युव खा का बीबी आयशा—दोनों आपस में लड पडी थी, यद्यपि दाना इतनी गहरी सहालिया थी कि हर समय भाय रहती थी। घर भी उनका भाव-भाय ये चश्मे में पानी लान इकट्ठे जाती थी। पहल एक फिर दूसरी पानी भरती थी। बारी-बारी एक दूसरे का घडा उठवाकर मिर पर रखना और फिर बर्त करती घर लौटती थी। परंतु उस दिन न जान क्या हुआ, दाना को जाने क्या जल्मी थी कि एक कहती पहने पानी में भस्मी और दूसरी कहती कि पहल मैं। शायद उह एक दूसरे पर नाश नहीं था शायद उह काय दम बात पर था कि यहा मीठे पानी का एक ही चश्मा था जहा नगी के मूख जान क बाद लोग दूर में पानी नन जान थ। मुह्र अघेर ही औरतें घडा नवर चल पटना। जब वहा पहुंचतीं तो या तो एक लबी लागन पहल से लगी हाती या चश्मे के मुह्र में एक एमी पतली-मा धार निकलन दखती, जो आध घट में मुक्किन में एक घडा भग्नी और तीन कोम का आना जाना एक आसन में कम न था। लगाद का कारण कुछ भी हो, अमली

लड़ाई पानी की थी। दोनों औरतों ने देखते देखते एक दूसरे के मुँह नोच डाले, घड़े फोड़ डाले, कपड़े फाड़ डाले और फिर रोती हुई अपने-अपने घरा को लौट आयी। वहाँ पहुँचकर सदा ने सरवर खा को भड़काया और आयशा ने अम्यूब खा की। दाना के पति क्रोध से पागल होकर, कुल्हाड़िया लेकर बाहर निकल पड़े और इससे पूरा कि लोग आकर बीच-बचाव करें दोनों ने कुल्हाड़ियों से एक दूसरे को ढेर कर दिया। शाम होते होते दोनों पड़ोसिया का जनाजा निकल गया। हमारे गाँव के कब्रिस्तान में बहुत सी कर्तों पानी ने बनायी है।

मेरे लड़कपन के दिनों में जब य दोना कलन हुए, उम समय सामन के पहाड पर ही मीठे पानी का चश्मा था। परतु यान् म जत्र मैं और बडा हुआ, तो यहा एक और चश्मा निकल आया। इस नये चश्मे की कहानी भी बडी अनाखी है। यह तब का जिक्र है जत्र हमार पूठूहार म बडा भयकर अक्ल पडा था और गर्मी के कारण सार नदी नाल और कुए सूख गय थ। केवल कही कही उन चश्मा म पानी रह गया था, जो पहाडा के खड्डो म थे, जहा सूर्य की किरणे नही पहुँच पाती थी। उन टिना हमारे घरा की औरतें रात के दो बजे ही उठकर चल दती और चश्म क नीचे सदा घडा की एक लबी कतार दिखाइ देती, प्यास घडा की एक लबी कतार, जिमम स प्यास से बिलखत बच्चा की आवाजें जाती थी।

उम जमान म बहुत से लोग भगवान मे सच्चाई म और नकी म अपनी आस्था खो बडे। उन लोगो मे एक जलदार मन्िक खा था। उमन थानपार फजल अली से मिलकर उस चश्मे पर पहरा लगा दिया और फिर तहसीलदार गुलाम नबी म मिनकर चश्मे के आमपास की सारी धरती खरीद ली। फिर रातोंरात उमके चारो ओर दीवार खडी कर दी और उसके द्वार पर ताला लगा दिया। इस चश्मे से कोई आदमी, बिना अनुमति के, पानी नही ले सकता था क्योंकि अब यह चश्मा जलदार की मिल्कियत था और जलदार न चश्मे से पानी ले जाने वाला पर टक्कम लगा दिया— एक घडे पर एक आना दा घडा पर दा आन।

तब सार गाँव म हम अयाय अत्याचार के बिरुद्ध शार मच गया। परतु पुलिस और मरकार जलदार के पक्ष मे थी, और इसलिए कानून भी

उसकी आर था। और जिगकी आर कानून था, उसा का ओर पानी था। इसलिए गाव के गाँव जवान जोर बूढ़ और बच्च हवटठे हाकर मेर अब्बा के पाम आय जोर वात चचा गुलाबगन अब तुम ही हम इस मुसीबत से छुटकारा दिला मकन हा।'

अह कस? मर अब्बा न विस्मिन होकर पूछा।

माद है यर मीठे पानी का चश्मा, जा अत्र जनदार मनिव या का हा गया है, बूटे हाकिम या न कहा, 'तुम्हारा ही याजा हुआ है। क्या तुम दूसरा चश्मा नहीं खोज सकते? जाग्रिइ इन पहाड क गम म, इनकी गहान्या म और भी ता वही मीठे पानी का चश्मा हागा, जा प्रस मानव का अमत पान करा सक। तुम हम सबम बडे हा, अनुभवी हा, अपना बुद्धि दौडाआ। हम तुम्हारे साथ दौड धूप करन को तमार है। हमार गाव म पानी नहीं है और पानी अब अवश्य चाहिए।

मर अब्बा चाँपाइ पर उकडू नैठे व। तुरत जल्नाह का नाम लेकर उठ खड हुए। माग गाव उनक साथ था। पहाड पर चलाइ थी जोर पाना की तनाश थी। परहाड के पहाड काटन स पानी की तलाश अधिक बठिन है यह बात उम दिन मालूम हुइ, क्याकि पानी दष्टि क सामन नहीं हाता। वह ता छलावे का भाति पहाड की मिलवटा म छिपा हाता है। पानी ता एक घानाबदाश है। जाज यहा कल कहा। पानी एक परदशी है जिसक प्यार का कोई भरामा नहीं। पानी का अस्तिव उस भीनी सुगध का भाति है जा तज धूप म उड जाती ह। दस पूठूगर के प्रदण म जहा जोरते चरित्रवती और लज्जाशील है, वहा पानी छलिया जोर हरजाई है। वह कभी किसी एर का हाकर नहीं रहता। वह सदा महा स वहा, एक स्थान स दूसर स्थान पर, एक प्रदण स दूसर प्रदण म विचरता रहता है। एसे छलिया, एसे हरजाई की खोज क लिए एक कुदाल नहीं, एक एसा शीशा चाहिए जिसके सामन पहाड का वश खुली किताव की तरह रोशन हा जाय। मेर गाव वाला न कुछ समझकर ही मेर पिता को इस काम के लिए चुना था।

उम राज हम दिन भर ऊचे ऊचे पवतो की धूल छानन रहे। हमन कहा कहा पानी नहीं खोजा—वरिया की घनी झाडिया म चटटाना की

गहरी गहरी दरारा में, गहरे अधेर खड्डों में, जगली जानवरो की मादा में । पानी की खोज में हमन सार पुरान चश्मे खोद डाले । लेकिन इनका खोदना एसा ही था, जैसे आदमी जीवन की खोज में कर्बें खाद डाले । पानी कहीं नहीं मिला । एक चोर की भाँति उसन स्थान स्थान पर अपने चिह्न छोड़े थे । परंतु अंत में वह जुल दकर कहीं लोप हो जाता था । जाने प्रकृति ने किस कौन में, किस स्थान पर, किस गहरी खोह में बैठा हुआ वह अपने चाहन वाला परहस रहा था ।

परंतु गाव वाला न आशा नहीं छोड़ी । वे मारा दिन मेरे पिता के पीछे-पीछे पानी की खोज करते रहे । अंत में जब शाम होने को आयी तो मेरे पिता ने माथे का पसीना पोछकर, एक ऊँचे टीले पर खड़े होकर, उधर दृष्टि दौड़ायी, जिधर सूर्य अस्त हो रहा था । सहसा उन्हें अस्त होत हुए सूर्य के नारंगी प्रकाश में चट्टानों की एक गहरी दरार में, फरन की घास दिखाई दी । और कहते हैं जहाँ फरन उगी होती है, वहाँ पानी अवश्य हाता है । फरन पानी की पताका है और पानी एक विचरन वाला जीव है । पानी जहाँ जाता है, अपना पड़ा साथ ले जाता है ।

एक चीख मारकर मेरे पिता उम ओर लपके जिधर फरन उगी हुई थी । गाव वाले उनके पीछे पीछे भागे । जल्दी-जल्दी में मेरे पिता ने धरती को नाखूना ही से खोदना शुरू किया । धरती जो ऊपर से सटती थी, नीचे कामल होती गयी, गीली हाँती गयी । अंत में जोर में पानी की एक धार ऊपर आयी और सकड़ा मुखे हुए कंठ से हँस की ध्वनि निकली ।

पानी ! पानी !!!

मेरे पिता ने कपकपात हाथा से ओक में पानी भरा । सबकी दृष्टि उनके मुख पर थी । सँकड़ा दिल आशा और आशंका से धडक रहे थे—
“भगवान ! पानी मीठा है ! अल्लाह ! पानी मीठा है !!!”

मेरे पिता ने पानी चखा ।

‘पानी मीठा है !’—व खुशी में चिल्लाया ।

‘पानी मीठा है !’—गाव वाले जोर से चिल्लाये ।

‘पानी मीठा है !’—सारी घाटी गूँज उठी, “पानी मिल गया, पानी मीठा है ।”

सारी घाटी में ढाल बजने लग। बच्चे शोर मचान लगे। गाव वाला न जल्दी से चश्मे को खोदकर अपन घेर में ल लिया। अब चश्मा उनके बीच में था और वे उमके चागे ओर थे। और वे मुड मुडकर उस इस तरह दख रह थे जम मा अपन नवजात शिशु को निहार निहारकर पुलकित हाती है।

वह रात मुझे मदव याद रहगी। उम रात का कोई आदमी गाव न चोटा। उस रात गाव वालो में चश्मे क किनारे जशन मनाया। उस रात तारा की छाव में बरियो की छाया में माओ ने चून्ट सुलगाय और बच्चो को थपन थपक कर सुलाया। उस रात कुमारिया न तहक-तहक कर मद भरगीत गाय—एस गीत जा पानी की तरह स्वच्छ और निमन थे जिनम जगली चश्मा की गूज और जल प्रपाता का प्रवाह था। उस रात सारी ओरते सुदर थी सारी धरती उपजाऊ थी, सारी जडे हरी थी और मारे बीज अकुरित हाकर फूट पडे थे।

यह रात हमारे गाव में तप आयी थी, जब मर पिता न भीठा पानी बढ निकाला था। पानी जा मानव क श्रम का द्रव था, पानी, जो उमकी चाह का अमत था, हमारे गाव में इस तरह आया था जम वारात की डाली आती है। वह नया चश्मा हमारे बीच आज इस तरह होले-होल तजाना पड रहा था जस नयी दुन्हन ठिठकती हुई अनजान आगन में पग रखती है।

उम रात मेर एक हाथ में पानी था दूसर में बाना का हाथ था और आकाश पर घुन घुन तारे थे।

इस नय चश्मे क माय मेर योवन-वाल की अनक मुग्ध स्मृतिमा सबधित है। म चश्म क किनार में बानो में प्रेम बिया—बाना, जिनका गोप्य पानी की भाति हुनम था। जिन दम्यकर विचार आता था कि धरती क य त म भीडे पानी क जान बितन चश्म छिप ह सुदर स्मृतिया की जान बितनी बर्षोमी मिनो जमीन पर पडी है। बाना का प्रेम बितना मोन बुरवार था—धरती क नीच बहन बान चश्म की भाति। वह माया क पधमक म था प्रात बाल क झुटपुट म इस चश्म क किनार आता थी—अब दहा का न हाता—मर बिया। मात म्यकर उमक मुग्ध पर मुग्धान की

आभा ऐसे झिलमिला उठती, जस रात्रि के अधकार म प्रभात का प्रकाश । वह घडे को चश्मे की धार के नीचे रख देती । पानी घडे स बाते करने लगता ओर मैं बानो म । समय बीतता रहता ओर फिर घडा पानी से भर जाता । हमार मन खुशी से भर जात ओर हमार जाने बिना, कही दूर मे, सुबह यो धीरे धीरे चलकर हमार पास आ जाती कि हम चींक उठते । फिर मैं उसका घडा उठाकर उसक सिर पर रखी लाल रंग की इडली पर रखता ओर वह मुस्कराती, पलटती, घूमती ढलवानो पर चली जाती ओर मैं उस निहारता रहता । मैं उम समय भी उसे निहारता रहता जब दूसरी औरत मेरी आर दखकर मुस्करान लगती । ओर मुझे वह दिन याद आ जाता, जब मैंने दानी से पूछा था, 'दादी ! प्रेम करना किसे कहत है ?'

ओर फिर उम चश्मे के किनार की वह रात भी मुझे याद है जब म खान मे काम करता था ओर दिन भर का थका घर लौटता था ओर चारपाई पर लेटत ही सा जाता था । सवेर ही मेरी आख खुलती थी । कई दिना सबानो स मिलन नहीं गया था, परतु का चिंता न थी । वह साथ ही के घर म तो थी । उ ही दिना उसके चाचा का लडका गुफरान आया ओर चला भी गया, परतु मुझे उससे मिलने का अवकाश ही न मिला, क्याकि मैं खान मे नया नया नौकर हुआ था ओर मुझे काम मीखन का बडा धाव था । ओर यह तो सब जानते हैं कि नमक की खान मे जाकर आदमी भी नमक हो जाता है ।

एक रात बानो ने कहा कि रात म दो बजे चश्मे पर उससे मिलू ।

मैं बोला "म बहुत थका हुआ हू ।"

वह बोली, 'नहीं, जरूरी काम है । आना होगा ।'

चुनाचे मैं गया ।

दो बजे, आधी रात का, चश्मे पर कोई नहीं था—हम दानी के अतिरिक्त । मैंने उसस पूछा, "क्या बात है ?"

वह देर तक चुप रही ।

मैंने फिर पूछा, "बताओ भई, बात क्या है ?"

वह बोली, "मैं गाव छोडकर जा रही हू ।"

मेरा दिल धक से रह गया। मुझे लगा, जैसे चश्मा बहुत-बहुत रक गया हो।

मेरे गने स एक क्षीण सी आवाज निकली, 'क्यों ?'

"मेरी शादी तय हो गयी है।"

'किससे ?'

"चाचा व लड़के के साथ, जो लाम से होकर जाया है।"

'और तुम जा रही हो ?' मैंने कटुता स पूछा।

"हां।"

वह चुप हो गयी। मैं भी चुप हो गया। सोच रहा था इमे अभी जान से मार दू, या शादी की रात कत्ल कर दू। थोड़ी देर ठहरकर वाना फिर बोली 'सुना है चक्कवाल मे पानी बहुत हाता है। सुना है, वहा बहुत बडे नल होत ह। उनस जब चाहा, टाटी खोलकर पानी ले सकन हो।'

उसका स्वर आह्लाद से विक्रित था। वह शायद कुछ जोर भी कहती, परतु मेरी उदासी का खयाल करके रक गयी।

मैं उसके बिलबुल निकट जाकर उसे दोना कधो से पकड लिया जोर ध्यान से उसकी आखो मे दखा। उसन एक क्षण मेरी ओर दखकर निगाहे झुका ली। उसकी निगाहा म मेरी मुहब्बत स इनकार नही था परतु पानी के प्रेम का इक्कार था। मैंने धीरे स उसक कद्वे छोड दिये और उमम जलग हाकर खडा हो गया। सहसा मुझे ज्ञात हुआ कि प्रेम मत्य, निष्ठा और भावना की प्रगाढता के साथ साथ थोडा-सा पानी भी चाहना है। वानो की आखो म एक ऐसा मार्मिक चाह का उलाहना था मानो वह कह रही हो "जानत हो, गाव म पानी कही नही मिलता। यहा मैं दा दो महीने नहा नही सकती। मुझे अपने आपमे, अपन बदन से नफरत भी हो रही है।'

वानो चुपचाप चश्मे के किनारे बठ गयी। मैं रात्रि के उस अधकार मे भी उसकी आखा के अदर प्रेम का एक रुपहला स्वप्न दख रहा था—स्वप्न जो गदे, बदबूदार, जूओ, पिस्सुआ और खटमला स भर चौपडा म लिपटा हुआ न था, वह स्वच्छ और निमल था। उससे धुले वस्त्रा और नय जोडे की महक आ रही थी।

मैं बिलकुल हताश और बेबस होकर एव आर बैठ गया।

रात के दो बजे।

बाना और मैं।

दोनों मौन और निस्तब्ध।

कभी ऐसा सनाटा, जैसे सारा ससार भूय है, कभी लमी निस्तब्धता जैम सार स्वर सो गय है।

चश्मे व बिनार बँठी हुई बानो धीरे-धीरे घडे म पानी भरनी रही। पानी धीरे-धीरे घडे म गिरता हुआ बानो से बातें करता रहा—मुझमे कुछ कहता रहा, उससे कुछ।

पानी की बातें मनुष्य की सुदरतम, स्वच्छतम और स्वस्थतम बातें हैं।

बानो चली गयी।

जब बानो चली गयी तो मुझे मुहब्बत की वह कहानी याद आयी, जिसम मुहब्बत रोयी थी और आसू नमक के डल बन गय थे। उस समय मेरी आवा म एक भी आसू न था। परतु मेर हृदय म नमक व बडे बडे डल इकट्ठे हा गय थे। मेरे अतर म नमक की एक पूरा छान थी—नमक की दीवारें, नमक के छब, नमक की छन और चार पानी की एक पूरी झील। मेर मन और मस्तिष्क पर नमक की एक बागीक भी सह जम गयी थी। और मुझे विश्वास हो चला था कि यदि मैं अन शरीर का कत्री से भी खुरचूगा ता आसू फूटकर बह निकलेंगे। इमीलिए मैं मौन बैठा रहा था—निश्चल, निश्चष्ट, भाव शून्य। जब बानो उठी थी, तो भी मैं बैठा ही रहा था, और उसमे घटा उठाकर स्वय ही सिर पर रखा, तो भी मैं बैठा ही रहा था और जब वह डलवान पर से उतरकर चली गयी थी, तो भी मैं चुपचाप बैठा ही रहा था क्योंकि मेरे पास पानी नहीं था और बानो पानी के पास जाना चाहती थी।

जिस रात बानो का ब्याह गुफरान के साथ हुआ, मैंने एक अलीश्रा स्वप्न देखा। मैं देखा हमारी छापी हुई नदी हम वापस मिल गया है और नमक के पहाड पर मोठे पानी के चश्मे उबल रहे हैं और हमारे गाव के बीचोबीच एक बहुत बडा पड खडा है। यह पड सारा का सारा पानी का

है। इसकी जड़ें टहनियाँ, फूल पत्त, पत्तियाँ सब पानी की हैं और इन सबसे पानी गिर रहा है और यह पानी हमारे गाँव की बजर धरती का सींच रहा था।

जोर मैन दगा कि विमान हल चला रह है, औरतें पपड़े धो रही हैं, खान में काम करने वाले अपने शरीर सानमान धा रह है, और बच्चे पूजा के द्वार लिये पानी के पड़े के चारा आर नाच रह है और बाना मर कंधे से लगी मुझमें बन् रही है, “अब हमारे गाँव में पानी का पड़े उग आया है, अब मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगी।”

यह बड़ा विचित्र सा स्वप्न था। लेकिन जब मैं अन्धा को मुनाया ना के द्वार डर के वापस लग।

बोले ‘तुमने यह सपना किसी और को तो नहीं सुनाया?’

मैंने कहा नहीं ता। लेकिन आप डर क्या गये अन्धा? यह तो सपना ही है।

वे बाले “अर, सपना तो है, लेकिन यह लाल सपना है।”

मैंने हमसे कहा ‘नहीं अन्धा जो सपना मैंने दगा था, यह लाल नहीं था। उसका रंग तो बिलकुल वैसा था, जमा पानी का होना है। यह पानी का पड़े था। उसकी टहनियाँ पत्तियाँ—सब पानी की थी। उम पड़े पर फला की जगह धीरे की सुराहिया लटक रही थी और उनमें पानी बच्चों की किलकारियाँ की तरह चमक रहा था।

वे बोले “नहीं बेटा, कुछ भी हा, यह सपना खतरनाक है। अगर पुलिस ने मुन लिया। या इसका तुमने किसी में जिक्र किया, तो वे तुम्हें उसी तरह पकड़कर ले जायेंगे जिन तरह वे उन मजदूरों को पकड़कर ले गये थे जिन्होंने गाँव की नदी को वापस लाना चाहा था इसलिए खर इमी भ है कि तुम इस सपन का जिक्र किसी से न करा। इस भूल जाओ, जैसे तुमने यह सपना कभी नहीं दखा। क्योंकि इस सपन की चर्चा से कुछ न होगा। सूखी नदी सदा सूखी रहेगी और प्यासे सदा प्यासे रहेंगे।”

मुझे अपने अन्धा के बठ का विषाद और उनके स्वर का निराशा आज तक याद है। शुरू-शुरू में इसका जिक्र मैं किसी से नहीं किया।

लेकिन जब कुछ दिन बीत गये तो मैंने डरत-डरत अपनी छान के मजदूरों से अपने सपने का जिक्र किया।

परन्तु मेरा सपना सुनकर भयभीत होने के बजाय वे हसने लगे और जब मैं उनसे पूछा कि इसमें हसने की क्या बात है तो उन्होंने कहा कि भला इसमें डरने की कौन सी बात है ! यह सपना तो बहुत शुभ है और यहाँ छान में हर एक देख चुका है।

“क्या सब कहते हैं—उसी पानी के पड़ का सपना ?”

“हाँ हाँ, उसी पानी के पड़ का सपना—सबने देखा है पानी का एक पड़ हर गाँव में, मोठे पानी का चश्मा हर नमक की छान में। घबराओ नहीं, एक दिन यह सपना अवश्य पूरा होगा।”

पहले मुझे उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। किन्तु अपने साथियों के साथ काम करते-करते अब मुझे विश्वास हो चला है कि हमारा सपना अवश्य पूरा होगा। एक दिन हमारा गाँव में पानी का पड़ अवश्य उगाएगा, और जो जाम खाली है, वे भर जायेंगे, और कपड़े जो मले हैं, वे धुल जायेंगे, और जो दिल तरस हुए हैं वे तृप्त हो जायेंगे।

वे तृप्त हो जायेंगे। और सारी धरतियाँ, सारी मुहब्बतें, सारे वीरान और सारे मरुस्थल पानी से सतृप्त होकर लहलहा उठेंगे।

क्या करूँ ?

नगभग माडे नी वज मरदार मटावहारगिह की फिन्म प्राइवशन न० 1—
चन चन र वाचवान क पहन दो गानो का रिकार्डिंग लक्ष्मी स्टूडियो
म समाप्त हा गया। बचान मरदार मटावहार सिंह फिन्म इन्स्ट्री म नये
नये जाय थ इसलिए मास्टर अच्छन राव न और गीत गान वाली मिस
धनाथ्री न और माज बजान वाला न अपने-अपने पम वही स्टूडियो म
रिकार्डिंग म पहल ही बसूल कर लिय थ।

रिकार्डिंग समाप्त हान क बाद जब तीना साज बजाने वाल स्टूडियो
से बाहर निकल तो उ हान साचा कि इस जवमर पर सबसे निकट का
शराबघाना र राड पर पडेगा। छोटा आखा और लबी दाडी वाला
सरमुख सिंह लोलकिया आग जाग हो लिया। उसके पीछे वायलिन बजाने
वाला डिमला और बसरी बजान वाला नवाज (जा स्वय भी इतना दुबला
पतला था कि दूर स देखन पर एक बमरी नही ता वास की एक छपची
अवश्य दिखाई देता था), चल पडे। य तीना पीन वाल थ। और इम समय
तीनो ही बुरी तरह प्यास दिखाई पड रहे थ। इम समय उह तड्डी-
स्टूडियो स र राड के शराबघाने तक पदल जाना भी अछर रहा था।
इसलिए इन तीना ने मास्टर अच्छन राव की पकाड कार को धेर लिया।
उसम उम समय मास्टर जी की प्रेमिका मिस धनाथ्री बैठी हुई थी, किंतु
शराब का प्रेम औरत क प्रेम से कम नही होता। बल्कि पीन वाले ती
कहत हैं कि शराब का नशा औरत के नश स अधिक बढ़िया और गहरा

होता है। खर, यह एक लंबी बहस है जो सड़कें बंधों से चल रही है और सड़कें बंधों तक चलती रहेगी। तो मिस धनाश्री की पोजीशन का खयाल न करके तीनों ने मास्टर अच्छन राव से प्राथना की कि वे अहम रोड के शराबखाने पर उतार दें।

“तुझ पर साईं बाबा मेहरबान हा, मास्टर।” सरमुंछ सिंह मीरासिया के-स ढग में बोला।

मास्टर अच्छन राव ने मुस्कराकर मिस धनाश्री की आर दया। साबल रग की, प्यारी-मी, नाजुक-सी लडकी आखें झुकाये एक कोन म दुबकी बैठी थी। उसने मास्टर अच्छनराव की ओर देखा भी नहीं। किंतु मास्टर अच्छनराव का पता था कि इस समय मिस धनाश्री इस गाडी में एक क्षण के लिए भी इनलोगों की मौजूदगी को सहन नहीं करगी। मामला टढा था। इधर साज बजाने वाली का वार-वार निवेदन, उधर उम मनमोहिनी मूरत का नि शब्द विरोध। आखिर मास्टर अच्छनराव ने एक जोर का बहकहा लगाकर कहा ‘बैठ जाओ गाडी म बवस्तो। साईं बाबा की दुहाई दकर कहत हा तो में कसे टाल सकता हूँ? क्या जानिया?’

यह कहकर मास्टर अच्छनराव ने अपना काल बालों वाला खुरदरा हाथ मिस धनाश्री के कोमल कंधों पर टिका दिया और मोटर स्टार्ट कर दी।

साईं बाबा का नाम सुनते ही धनाश्री अच्छन राव के कंधे म लग गयी। साईं बाबा बबई का सबसे बडा पीर है। वह हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइया सिक्खों—सबका पीर है। बबई जैसी कॉस्मोपॉलिटन जगह म जहा हर धर्म, जाति और विचार के लोग बसते हैं वहा एक कॉस्मो-पॉलिटन टाइप के साधु महात्मा, पीर पैगबर की भी आवश्यकता है जो ‘साईं बाबा’ ने पूरी कर दी है। फिल्म इंडस्ट्री के लोग तो विशेष रूप से साईं बाबा के बडे भक्त हैं। प्रत्येक नयी पिक्चर के मुहत्तम पहल साईं बाबा के मजार पर चढावा चढाया जाता है। पिक्चर बनने के बीच में फूलों की चादरें भेजी जाती हैं। यदि पिक्चर सफल हो जाये तो यह साईं बाबा की कृपा समझी जाती है, असफल हा जाये तो पिक्चर बनाने वाल की गलती। दोनों अवस्थाओं में साईं बाबा का कोई दोष नहीं। मानव और

देवता में यही अंतर है कि आप मानव को—चाह वह कितना ही महान क्या न हो—दोषी ठहरा सकते हैं, किंतु आप देवी देवताओं पर किसी प्रकार का कोई दोष नहीं लगा सकते। इसलिए साईं बाबा का नाम सुन कर मास्टर अच्छन राव की जानियाँ मिस घनाथी चुप होकर रह गयी।

रुड़क अड्डे पर अच्छन राव न गाड़ी का दरवाजा खोलकर सरमुख सिंह, डिमलो और नवाज को उतार दिया। वायलिन बजाने वाला डिमलो, जिसकी ठाड़ी बात चीत करत हुए भी गरदन के साथ ऐसा कोण बनाती थी जैसे वह अब भी किसी वायलिन पर टिकी हुई है, मुस्कराकर बोला 'मास्टर, एक गिलास हमारे साथ पीना मागता?'

'नहीं, नहीं डिमलो, अच्छन राव अपनी प्रेयसी की ओर देखकर बोला 'अब रूंगा तो जानिया नाराज हो जायगी। क्या, जानिया!'

और यह कहकर अच्छन राव ने एक जोर का कहकहा लगाया।

जब अच्छन राव कहकहा लगाता है तो इसका शरीर इस तरह कांपने लगता है जैसे भूचाल आ रहा हो। साधारणतया लाग कहकहा लगात ही नहीं और जो लगात है तो इतना सक्षिप्त-सा लगात है जस मह कोई कहकहा नहीं है मडक है, जिस जहोन मुह में दाव रखा था, जरा मुह खाला और मडक फडाके से बाहर। कुछ लोग ऐसा कहकहा लगाने हैं, जिसमें आवाज ही नहीं हाती। बस, मुह होठा से तालू तक खुला हुआ है—अदर सास की नलकी तक दिपाई द रही है किंतु आवाज नहीं आ रही है। हा, आंखों के बार बार खुलने और बंद होने से पता लग रहा है कि रोगी पर कहकहा का दौरा पडा हुआ है। कुछ लाग कहकहा में आवाज तो निकालत है किंतु यह आवाज इतनी पतली इतनी बारीक 'हि हि किस्म की हाती है कि ऐसा लगता है जैसे यह आवाज फेफड़ों में से नहीं आता म से निकल रही है। किंतु अच्छन राव का कहकहा इस किस्म का कहकहा नहीं है। उसके कहकहा उसके शरीर की भांति भारी भरकम है। वह जब कहकहा लगाता है तो उसके शरीर की सारी विल्डिंग हिलने लगती है। ऐसा मालूम होता है कि कहकहा आतिशबाजी के अनंतर की भांति उसके सार शरीर से फूट रहा है। हू-हू हा-हा की गगनभेदी आवाज बढ़ती ही चली जाती है, यहां तक कि दूसरे लोग का भी बिना कारण ही, उसके

कहकहे म सम्मिलित होता पडता है। अच्छन राव का कहकहा बवडर की भाति आगे आगे बडता ही जाता है।

उस समय यही हुआ। कहकहे के मैच म सरमुख सिंह, डिमैलो और नवाज को भी सम्मिलित होना पडा। हसत हसते सरमुख सिंह की दाढी के किलप छुल गये, और डिमैलो दोहरा हो गया। जब मिस धनाश्री ने जरा क्रोध से कहा, "अब चलो भी", तब मास्टर अच्छन राव ने झट से कहकहा लगाना बंद किया, अपन साधिया से क्षमा मागी और अपनी 'जानिया' को लेकर चला गया।

तीना माथी र रीड के शराबखाने मे दाखिल हुए। यह शराबखाना एक दो मजिली इमारत म है। निचली मजिल मे 'वार है और ऊपर की मजिल मे अलग अलग कमरे हैं—जहा जरूरतमदो के लिए मनोरजन के साधन जुटाये जान ह। इस शराबखान का वातावरण बहुत ही धरेल सा है। बेटर बडे नम और समयदार हैं। शकल व चाल-ढाल से पेशेवर राजनीतिज्ञ दिखाई देने ह। मेजे न बहुत गदी है न बहुत साफ, और न वे बहुत मूल्य वान है, न बहुत घटिया। महा हर प्रकार की शराब मिलती है—बडिया से बडिया विलायती शराब और घटिया से घटिया देशी शराब। मजदूर, क्लक दुकानदार, फिर्म उद्योग मे काम करने वाले घोच के दर्जे के पूजी-पति, इंजीनियर, विद्यार्थी—मि न मि न मेजो पर बैठे हुए बातें कर रहे है। वातावरण मे तबाकू और शराब की गध रची हुई है, पकौडिया और बरावा की गध फली हुई है, भूषफली के घी' मे तले जाने वाले अडा की वसाद है और मिली जुली सासा की गध हवा मे तैरती हुई मालूम होती है। दीवारा पर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नहरू और माई बाबा के कैलेंडर है। पारसी बार मन की मोटी, लाल नाक पर नीली नमो का जाल उभरा हुआ है। कभी कभी ऊपर की मजिल से कोई जनाना कहकहा तैरता हुआ आता है, ता एमा लगता है जैसे एक क्षण के लिए बादलो के गुबार म बिजली चमक गयी। नीचे बार मे सबके कान खडे हो जात हैं। चेहर उस बिजली की रोशनी से एक क्षण के लिए चमक उठन हैं। कोई सुंदर स्वप्न कोई आतिरिक्त तडप, कोई मुप्त भावना मचलकर जाग उठती है।

नवाज, सरमुख सिंह और डिमैलो न चार मधुमत् ही चारों ओर निगाहें दौड़ायीं। किंतु, कहीं कोई मेज पाली नहीं थी। केवल एक बोन म एक मेज खाली थी जिसके ऊपर किन्हीं की पुरानी विद्ययात अभिनत्री मिस कज्जन का चित्र उल्टा लटका हुआ था। तीनों व्यक्ति जल्दी से उस मेज की ओर लपक। उन्हें उधर जात देखकर बैरा उनका पीछे लपका। व अभा बैठन भी न पाय ये कि बैरा न बड़ी नम्रता से कहा, "हुजूर, यह मज दा जा चुकी है।"

"किसको?" सरमुख सिंह न दाढी में क्लिप लगात हुए कहा।

"एक साहब है।"

"चार कुमिया हैं, हम तीन ह। हमार बैठने के बाद भी एक कुसी खाली रहगी। व साहब उस पर बठ सकत हैं।" नवाज न तनिक शोध म कहा।

'किंतु यह मेज ता दी जा चुकी है, हुजूर।'

डिमैलो न वायलिन का बस दीवार पर टागत हुए कहा, "बाई बात नहीं। जब व साहब आयेंगे, हम उठ जायेंगे। तुम लपककर स्काच ह्विस्की के तीन बड़े पैग ले आओ।"

बैरा अब क्या कहता? वह एक क्षण रुका। फिर ह्विस्की लने चला गया।

तीनों मिस कुसिया पर आराम से बठ गय। वे अपन चारों ओर के दृश्य का अवलोकन करने लग। नवाज की निगाह सहसा मिस कज्जन के उलट लटक हुए चित्र की ओर गयी। वह चिल्लाया, 'अर, यह किनन मिस कज्जन का चित्र उलटा लटका रखा है?' वह उठा और उसन चित्र को सीधा करके टाग दिया फिर वह परशान-सा होकर बाला, 'बड़े आश्चर्य की बात है कि यहा हर राज सैकड़ों आदमी आत है और किसी का ध्यान इस बात की ओर

'लो, पिया।

तीन बड़े पैग आ गय थे। डिमैलो नवाज और सरमुख सिंह न जल्दी से गिलास उठा लिय।

सरमुख के होठा और आखा के बीच शायद कोई माग था, इधर

उसके होठा से शराब लगी नहीं और उधर उसकी आँखों में छनकी नहीं। दूसरे ही घूट में उसकी आँखें शराबी हो गयीं। बड़े मजे में बोला, 'यह शराबखाना है प्यार! यहाँ थोड़ी दूर में हर चीज उलटी दिखाई देने लगती है। तुम मिस कज्जल के चित्र को रो रहे हो। यहाँ अपने मित्र भी उलट दिखाई देने लगते हैं।'

ऊपर के किमी कमरे से किसी लड़की की हसना की आवाज आयी। सरमुख एकदम गभीर हो गया, और धीरे से कहने लगा, "वह साला तो अपनी जानियाँ के साथ चला गया। हम किसके साथ जायें?"

सरमुख के लहजे में घुटन, दुःख और निराशा के तीव्र भाव भरे हुए थे। उसने जल्दी से गिलास खाली कर दिया और बँरे का दूसरा पग खाने के लिए कहा।

"इतनी जल्दी न चलो," नवाज ने बड़े स्नेहपूर्ण लहजे में कहा।

'बहुत अच्छा, मेरा बाप!' सरमुख ने हाथ जोड़ते हुए और दाढ़ी हिलाते हुए कहा।

इतने में एक दुबला पतला, लंबा आदमी हाथ में छाता लिये धीरे धीरे चलता हुआ उस मेज के निकट आया। उसके साथ साथ वही बराबर आ रहा था।

"यह हुजूर की मज है" बँरे ने कहा।

सरमुख सिंह और नवाज खड़े हो गये। डिमैला भी खड़ा होना चाहता था कि इतने में नवागतुक ने बड़े मीठे और धीमे स्वर में कहा, 'नहीं, आप अपना गिलाम पूरा पी लीजिए। तब तक मैं यहाँ कान में खड़ा रहता हूँ।'

नवाज ने उस व्यक्ति को सर से पाव तक देखा। मर पर गोल टोपी, गहरे रंग का बदन के का बोट उसकी सफेद पतलून जिसके पायचे टखना से ऊपर थे, जूत काल और मल, चेहरा पर मूँछें भी काली और मैली सीजिनक कोने गिरे हुए थे। आँखें भी बहुत मैली और काली थीं जिनमें अस्थिरता नाचती हुई दिखाई पड़ती थी और वे कभी किसी एक जगह न ठहरती। वह बार-बार अपने खुशक होठों पर अपनी जीभ फेर रहा था। उसका माथा तग और घुटा हुआ था और उस पर गहरी चिंता के कारण बल पड

गये थे। नवाज को वह आदमी बीमार लगा। उमन खाली कुर्मी को सनेत करके कहा, 'आप गड़े क्या है? यहाँ बठ जाण न। हमार साथी ने दूसरा पैग मगवा लिया है। अगर कोई हज न हा तो हम भी—और वह भी अगर आप वजाजत दें तो—हम भी दूसरा पग मगवा लें। आप क्या पीयेंगे ?

कार् हज नही ' उस आदमी न टोरी उतारकर मज पर रखी छान को काने म टिनाया और स्वय कुर्मी पर बठकर कहन लगा, 'मेरे बर का मालूम है में क्या पीता हूँ। दो कुत्ता वाली रम।'

दा कुत्ता वाली रम बार म सबम घटिया माना जाती थी। बर न उसकी बोतल सामने लाकर रखी और नवागतुक न पहला पैग पी लिया। फिर उसन दूसरा पग पीया। फिर वह तीमरा पीना चाहता था कि नवाज ने कहा 'तो इम हिमाव म तो आप रम की शायद तीन बोतलें पी जायेंगे।

तीमरा पैग पीकर आगतुक न कहा "नही, म तो बस एक बानल रोज पीता हूँ। हा किमी किसी दिन जब मन पर वाप ज्यादा होता है तो डेढ पी लेता हूँ। और कभी कभी दो भी पी लेता हूँ।

चौथा पग उडेलत हुए आगतुक की निगाह दीवार पर पड गयी। वह उसी क्षण क्रोध म भरकर चडा हो गया और चिल्लाकर बोला, 'यह चित्र किसन उलटा लटकाया है?'

सरमुख ने चकित हावर कहा 'उलटा नही साधा लटकाया है। मैंने सीधा किया है। पहल यह उलटा लटक रहा था।

आगतुक अपनी कुर्मी को ढकेलकर दीवार के निकट गया और उसन मिस बज्जन के मीधे चित्र का फिर उलटा करके लटका दिया, और कहन लगा, 'यू नही, यू सीधा है।'

इम पर सरमुख को बहुत क्रोध आया। उसन उठकर मिस बज्जन के चित्र को फिर मीधा लटका दिया। आगतुक फिर उम उलटा करने जा रहा था कि सरमुख मिह ने गरजकर कहा, 'यदि चित्र को उलटा किया तो जान से मार दूंगा।'

आगतुक वापन लगा।

डिमलो ने सरमुख से कहा, "तुम गामधा क्यों झगडना है ? यह टेबल इसका है, यह छाता इसका है, यह टापी इसका है, यह सामने का दीवार इसका है, यह इस पर मिस कज्जन का फोटो रक्खेगा, अपने बाप का रक्खेगा, उलटा रक्खेगा, सीधा रक्खेगा । अम को क्या है ? तुम सरमुख-सिंह क्या झगडा करता है ?"

"नही, हम औरत का अपमान नहीं सहन करेगा । हम इस चित्र को सीधा रक्खेगा ।" सरमुख सिंह ने मेज पर धूसा मारकर कहा ।

'हम उलटा रक्खेगा,' जागतुक न बहुत नरमी से कहा ।

'हम सीधा रक्खेगा ।'

"हम उलटा 'जागतुक' न अपना वाक्य पूरा नहीं किया । उसने जल्दी-जल्दी से अपन गिलास में दा पैंग एक-दूमर व वाद उडेल और पी गया । फिर वह मेज पर आग झुककर बाला, सुना, हम तुम्ह एक घात बताते हैं । इसके बाद तुम अपन-आप निणय कर लेना कि इस चित्र का क्या उलटा लटकाना चाहिए या सीधा ।'

उसने जाम का अपन हाथ से घुमाया । उमकी आँखें स्वप्नमय हो गयी । धुध चारो आर गहरी हो गयी ।

'आज से आठ वष पहल की बात है, आगतुक न अपनी कहानी शुरू करत हुए कहा, 'मैं शोलापुर में छगनभाई की मिल में फोरमन था । वेतन ठीक था, मालिक भी ठीक थे । मैं किसी हडताल बडताल व झगडे में नहीं पडता था, इसलिए बडे मजे में कट रही थी । न किसी का लना, न किसी का दना, बस, अपने काम से काम । दुनिया जाय चूल्ह में, अपन को क्या ?

"मेरा एक छोटा सा घर था जिसे मेरी प्यारी प्यारी घमपत्नी सदा दुल्हन की भाँति मजाये रखती थी । मेरी पत्नी बहुत अच्छी थी, बहुत रूपवती, गहृत गुणवती, सुघड और समयदार । जब देखो साफ-सुथरे कपडे पहने एक गुडिया भी दिखाई देती थी । हमारा घर बहुत छोटा था, बस, एक कमरा था जिसके एक कोने में नल था, किंतु मेरी पत्नी न उस एक

कमर को इस तरह मजा रखा था कि यदि तुम दखते तो चकित रह जात। कभी कभी जब मगनलाल हमारे यहाँ आता "

मगनलाल कौन था ?" नवाज ने पूछा।

मेरा मित्र है। मडी मे दलाल है।"

'तुम्हारी उसकी मित्रता कैसे हुई ?'

'एक बार मुझे अपनी घमपत्नी की बीमारों के सिलसिले में चार सौ रुपये का आवश्यकता पड़ गयी थी। उस समय मुझे मगनलाल द्वारा हुश पर रुपया मिला था। तब से हमारी जान-पहचान शुरू हुई थी। बाद में यह जान-पहचान मित्रता में बदल गयी। किंतु यह बहुत बाद की बात है। जिस समय की बात मैं सुना रहा हूँ उन दिनों तो राधारण जान-पहचान ही थी। फिर मगनलाल कभी-कभी हमारे घर आया करता था। वह जब भी आता, मेरी पत्नी के सुघडाप का देखकर चकित रह जाता। कहता, इस घर की सजावट को देखकर एमा लगता है जैसे तुम दोनों का आज ही विवाह हुआ हो। और सचमुच मैं और मेरी पत्नी एक दूसरे से ऐसा ही प्रेम करते थे जस हमारे विवाह को कुछ घटा से अधिक का समय नहीं हुआ।'

इतना कहकर वह महाशय चुप हो गया और कुछ सोचने लगे। कुछ क्षणा के बाद उन्होंने बोतल में से रम गिलास में उडेली और गिलास को अपने दोनों हाथों में घुमाने लगे। फिर वह गिलास का अपने माथे के सामने लाया। उसके माथे के बल और गहरे हो गए।

'फिर क्या हुआ ?' डिमलो ने पूछा।

'ठहरो,' वह बोला, "दो मेरे जीवन का सबसे बढ़िया दिन थे। उन दिनों की याद में मैं हर रोज एक जाम पीता हूँ। आज तुम भी पियो।"

उसने अपना गिलास बढ़ाया उसका तीनों साथियाँ न उसके गिलास से अपना गिलास टकराये और पी गये। उस महाशय ने अपना होठों पर जीभ फेरकर कहा, 'उसके बाद—आज से पांच वर्ष पहले—तुम्हें याद होगा कि बर्दई पूना और अहमदाबाद में कितनी जोर की प्लेग फैली थी "

हां-हां, याद है' डिमलो ने उदास होकर कहा, "मेरा बड़ा भाई उसी प्लेग में मरा था।'

उमी प्लेग का जिक्र है। यह प्लेग शोलापुर में भी फली। शहर खाती होन लगा। हमारे वाला कारखाना बंद हो गया। सड़को पर व गली कूबा में साशे पड़ी दिखाई दन लगी। मेरी पत्नी मारे डर के घर से बाहर न निकलती थी, किंतु मुझे ता सौदा लेन और इधर उधर का काम करने के लिए घर से बाहर जाना पड़ता था। हा, अपनी प्यारी पत्नी का घर से निकलना मैंने बंद कर दिया था, क्योंकि यह छूत की बीमारी हाती है, और कौन जाने क्या हो जाय और मुझे मेरी पत्नी बहुत प्रिय थी।

“एक दिन मुझे रात के समय हल्का सा बुखार हुआ। कंधे में दर्द होन लगा। फिर गिल्टी निकल आयी। मैं बुखार में फुक्न लगा। मेरी पत्नी मेरी आर पटी पटी आंखों से देखने लगी। मैंने उसे तसल्ली दंत हुए कहा, ‘घबरान की कोई बात नहीं है। शीघ्र किसी डाक्टर को बुला लाओ।’

‘किंतु श्रीमती जी मेरी ओर उमी तरह पटी आंखा से देखती रही।

“मैंने तनिक क्रोध से कहा, ‘क्या देख रही हो? जल्दी से नुक्कड़ वाले डाक्टर कामथ का बुला लाओ। न आये तो नक्कड़ फीस साथ लेती जाओ।’”

मेरी पत्नी ने अपना टुक खोला, जिसमें वह नक्की रखती थी। देर तक वह सड़क में उथल पुथल करती रही। मुझे यह दरी बहुत बुरी लगी। मैंने कहा, ‘क्या कर रही हो? यहाँ प्राण सकट में है और तुम सड़क छोले बैठी हो।’

‘क्या करू? बाहर जाना है तो इन्हीं कपड़े में कस जा सकती हू?’

‘मेरी पत्नी ने कपड़े बदले। थोड़ी देर तक और सड़क को उथल-पुथल किया और फिर जल्दी से बाहर निकल गयी। जात जात उससे मैंने कहा ‘बहुत जल्दी से डाक्टर को लेकर आओ।’”

आध घंटा बीत गया, किंतु मेरी पत्नी डाक्टर को लेकर न आयी। उन दिनों डाक्टर भी बड़े सकट में फस हुए थे। कहा-कहा जाते? किस-किस को सभालत। न जाने डाक्टर कामथ इस समय कहा हागा? मैंने

अपन आपन पूछा ।

एक घटा और बीत गया । मैं बहोश होन लगा । फिर मुझे पता नहा क्या हुआ । मैं महान हो गया । जब होश म आया ता दया कि कमर म प्रत्य जल रहा है और मरी आया । सामन दा चहर धुधन म खियाई दे रह है । मन बहुत कमजोर आयाज म बहा, मनोग्मा पानी दा ।

डाक्टर न मुझे पानी पिलाया ।

मगनलाल न डाक्टर क वान म कुछ कहा । किन्तु मैं नही मुना कि उमन क्या कहा, क्योंकि उम समय मर वान म भयानर शार हो रहा था, बहुत स चूह हम रह थे, लव लत्र दाता वाल राशम अटूहास कर रहे । आग की लपटें अपनी लवी नवी जाम निजाउ मेर गरीर का घाट रही थीं । एक चीत्कार क माथ मैं बहोश हो गया ।

' मुझे पता नहा, म कितन दिन बहाश रहा—कितन दिन इसी तरह मृत्यु और जीवन क बीच लटकता रहा । आखिर जीवन की विजय हुई । मृत्यु की विजय होती ता भी थैम तो मुझे दुःख न होना । और भी तो हजारों लाग थ—जा प्लग म मर गये थे और राज मर रहे थे । मैं भी मर जाता ता क्या बुरा होता । खैर मैं बच गया । मगनलाल की दिन रात की सवाशुश्रूपा, अनथक परिश्रम, और उसक स्नह की प्रबल शक्ति न मरा जीवन बचा लिया । जिम तरह उमन अपन प्राणा की परवाह न करत हुए मेर लिए दिन रात एक कर दिय उस तरह शायद कोई मा भी अपन बेटे क लिए न कर सके । मैं चकित हू । ससार म एमी भी महान आत्माए है—मनुष्य नही, देवता । मगनलाल न सात आठ दिन तक एक पलक न झपकायी '

' और तुम्हारी पत्नी ? ' डिमलो न पूछा ।

' वह ता पहल ही दिन भाग गयी थी—सदूक म म खया और जेवर लेकर । '

' वह तो डाक्टर को बुलाने गया थी न ? '

हा किन्तु वह फिर वापस न आया । "

वह ध्यानपूर्वक अपने गिलास को देखत लगा ।

थोड़ी देर सनाटा रहा। उस सनाटे में दूसरी बेजो पर बैठे हुए लोगों की आवाजें बहुत विलक्षण और किसी दूसरी दुनिया से आती हुई मालूम हों रही थीं। डिमैला का ऐसा लग रहा था जैसे य आवाजे इस दुनिया की नहीं हैं। वे वही शोलापुर में बैठे हैं, एक छोटा सा कमरा है, एक स्त्री चार दृष्टि से अपने बीमार पति को ताकती हुई अपनी साड़ी में जेवर अटकाती हुई भाग रही है, अपनी आप बीती सुनाने वाला प्लेग से कराह रहा है, याहूर एक चिंता जल रही है, दिल के अंदर भी एक चिंता जल रही है, रम पानी नहीं है, अलफोहल है—यह आग बुझाती नहीं, लगाती है।

उस व्यक्ति ने अपना पैग खाली करके कहा, “ फिर प्लेग दब गयी। मैं शोलापुर छोड़ दिया और यहाँ बंबई में आकर काठनूर मिल में नौकरी कर ली। मेरे साथ मेरा मित्र मंगलान भी आ गया। हम दोनों साथ रहने लगे। और यह एक बिलकुल सीधा-सी बात थी कि वह मेरे साथ रहे, क्योंकि ससार में मेरे सिवाय उसका और कोई नहीं था। और फिर उसने मेरे प्राण बचाए थे, तो क्या मैं उसका इतना सा उपकार भी न मानता ?

“ अब वह परल में मेरे घर में रहता है। मेरा घर उसी शोलापुर वाले घर की तरह है। अब वह फिर उसी तरह सज गया है, बन सवर गया है। मेरे घर में फिर एक पत्नी है—स्ववती, गुणवती, सुघड, पहली पत्नी तो भी अच्छी। जब मैं उसे शादी करके लाया था तो सारी बिल्डिंग चौकनी हो गयी थी—जैसे किसी की आँखें आश्चर्य से पट्टी की पट्टी रह जायें। ऐसी सुंदर थी मेरी पत्नी। भगनलाल को भी मेरी पत्नी बहुत पसंद आयी। फिर धीरे धीरे मेरी पत्नी को भी भगनलाल पसंद आने लगा। धीरे धीरे मैं उन दोनों की आँखों को परछाने लगा। धीरे धीरे मैं उन दोनों के हृदय टटोलने लगा। धीरे धीरे मैं उन दोनों की अंगुलियों की सरसराहट से परिचित होता गया। जब उनकी आँखें मिलती, या जब वे मेरे पीछे कभी चोरी से मिलत और मैं सहसा आ निकलता तो उन दोनों को ऐसा मालूम होता वे सनाट में चुप-से रह जात—तुम जानते हैं न, प्रेम जब निस्तब्ध होता है तो कितना स्पष्ट होता है, इसकी चुप्पी में कितनी प्रबल अभिव्यक्ति होती है। मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं अपने ही घर में अजनबी

हू। उनकी व्याकुल आँखें, उड़ती उड़ती, रुकती रुकती भावनाएँ—तुम जानत हो न ? और तुम नहीं जानत तो मैं तो जानता हूँ—क्याकि जिस आदमी ने प्रेम को एक बार देखा है वह उसे मदा पहचान सकता है।”

उसने कापत हुए हाथा से एक पैग और उडोला।

‘धीर धीर मैं कमरे के बाहर बान्कनी म सोन लगा और व दोनों कमरे के अदर सोन लग। धीर धीर मुझे मालूम हुआ कि जब मैं मिल से लौटकर अपन कमरे म आता हू। ता सारी बिल्डिंग चौकनी होकर मुझे देखने लगती है—जसे मैं एक साधारण मनुष्य नहीं वरन कोई बिलक्षण-सा पशु हू। जब मैं घर से बाहर निकलता हू तब भी इसी तरह, एक बिलक्षण मी भावना के साथ लोग मुझे घूरते है। कभी कभी जब रात की शिपटें होती है और मिल म काम अधिक होता है और मिल व मालिक मुझे बुला लेत है ता मैं बिल्डिंग की सीडिया पर लोगो को खुसर पुसर करत दखता हू। मैं उनकी बातें सुन नहीं पाता, किंतु अच्छी तरह समझ सकता हू कि वे क्या कह रहे है। व भी समझ रहे है कि जा रहा है कबघ्ट, अपनी बावी का भडवा जा रहा है, कमजार निक्म्मा, भीरु, कायर, नामद जा रहा है, आज रात के शिपट मे जा रहा है और आज रात इसकी पत्नी और इसके मित्र के ठाठ है। और फिर कोई सीडिया के ऊपर से हस देता है और मैं जल्दी जल्दी सीडिया उतरकर बिल्डिंग स बाहर निकल जाता हू और फिर काम समाप्त होन पर यहा आता हू—सीधा इम शराब खाने मे आता हू। यह मेज मेरे लिए सदा रिजव रहती है, यह मेज, यह दो कुत्तो वाली रम की बातल। पाच बरस से मैं यहा आ रहा हू—वरावर रोज आ रहा हू, मैं अभी तक मह निश्चय नहीं कर सका कि किसका गला घोटू—अपनी पत्नी का, जिसे मैं प्यार करता हू, या अपने मित्र का, जिसने मेरे प्राण बचाये थे ? अपनी पत्नी का या अपन मित्र का ? अपन मित्र का या अपनी पत्नी का ?”

उसकी आवाज ऊची होती गयी। उसने मुह से झाग निकलने लगे। उसने इतन जोर से गिलास को अपनी हथेलिया स दबाया कि गिलास हाथा म ही धक्काचूर हो गया और उसके हाथों से खून बहन लगा।

खून उसके हाथों से बह-बहकर सगमरमर का मेज पर गिर रहा

था। सगमरमर के टुकड़े में एक लबी-सी दराज थी। खून उस दराज में घुसकर लोप होता जा रहा था। वह आदमी इस तरह उस बहत हुए खून को देख रहा था जैसे यह उसका खून न हो, किसी दूसरे का खून हा। घाड़ी देर के बाद वह उठा और नल से हाथ धोकर और रुमाल बांधकर वापस आ गया। वापस आकर उसने टोपी सर पर रखी, छतरी उठायी, दीवार पर लटके हुए मिस कज्जत के चित्र को उलटा कर दिया, फिर उसने उन तीना को थुककर सलाम किया और शराबखाने से बाहर निकल गया।

अमरीका से आने वाला हिंदुस्तानी

एक दिन की बात है ।

मैं चक्क गेट स्टेशन से निकलकर, रिटज हाटल की जार सिर चुकाय चला जा रहा था कि एकाएक किसी ने मेरे निक्ट आकर जोर से कहा, “हाइ किड ।

मैं धरती से दो फीट ऊपर उछल गया । उछलन के बाद जो नीचे गिरा तो मेर पाव फुटपाथ पर न थे, बल्कि चनवाले की टोकरी म थे । दूसरे क्षण टोकरी ओंघी हो गयी थी, और चन धरती पर बिखर गय थे, और चनेवाला मुझे गालिया दे रहा था । मैं मुडकर दखन भी न पाया था कि इतने जार से कौन चित्लाया है कि किसी ने जोर से मेरी पीठ पर हाथ मारा “हाइ सकर ।’

अब जो भडक्कर पीछे देखता हू तो एक नोजवान नीले रग की शाक स्किन की पतलून पर गुलाबी रग का ब्रुश कोट जिस पर हरे रगक तरबूज बने थे पहने खडा था, और मेरी ओर देखकर हस रहा था । मैं इतना क्रोध मे था कि दो चार क्षण तक उसे न पहचान सका । मेरे क्रोध का अनुरचित लाभ उठाकर उस नोजवान ने नाक म गुनगुनाकर फिर कहा, ‘डोट यू नो मी ? (Don't you know me ?)—जगमाहन कापडिया ।’ सहसा मैंने उसे पहचान लिया और मेरे मुह से निकला, “अरे लॉवड,तुम हो ?

मैं हाथ मिलान के लिए आगे बढ़ा।

जगमोहन कापडिया, हु! हम सब इसे लौचड कहा करते थे। घर वाले जग या जगजग कहा करते थे। यहा तक कि उसकी पत्नी भी उसे जगजी कहकर पुकारती थी, जो आप समझ जायेंगे कि लौचड से काई बहुत दूर की चीज नहीं थी। खैर मैंने अपने त्राघ पर काबू पाते हुए पूछा, "कोई तीन साल से तुम्हें दया नहीं, कहा गया थे?"

"स्टेट्स (States) में।"

अमरीका में आने वाला आदमी अमरीका का 'स्टेट्स' कहकर पुकारता है। स्टेट्स को ये लोग क्या कहेंगे इसके बारे में कुछ मानूँ नहीं।

'वहा क्या करन गया थे?'

"हाटल में चला वहा सब बनाऊंगा। जाल्ड पाक में ठहरा हुआ हूँ। हम दोनों ओल्ड पाक की आर जानें लगें। इनमें चनेवाल न टाककर कहा 'क्या शान है'।"

"क्या हुआ भाई? मैंने बड़ी गभीरता से चनेवाल की आर देखत हुए पूछा।

"जरे सायब, आपन मेरी टाकरी ताड दी, मेर चने गिरा दिय, मरी कोयला की हड्डिया लुढका दी। और इस पर पूछते हो कि क्या बात है?"

लौचड ने अपनी पतलून की जेब की जिप खींची। उसमें अदर एक पील रंग का बटुआ था। उसकी जिप खोली। उसमें से पांच रूपय का नोट निकाला और चनेवाल को दे दिया। चनेवाला बड़े ध्यान से और बड़े अचरज से नोट को उलट पुलटकर देखने लगा कि शायद नोट में भी कोई जिप लगी हो। फिर अच्छी तरह तसल्ली करके उसने नोट को जेब में डाल लिया और जब हम जागे चल गये तो हमारी आर जोर से कहकर लगाकर कहने लगा, 'क्या निराली शान है!'

जब होटल के कमर में पहुँचकर हम आराम से बैठ गये तो मुझे अच्छी तरह निरीक्षण करने का अवसर मिला। वह सचमुच पहले से अधिक स्वस्थ हो गया था और माटा भी। अब वह बातें भी तेज-तेज करता था। इससे पहले जब वह भारत में था, तो सीधे-सादे ढंग से हलक या मुह से बातें करता था। परंतु अब ऐसा लगता था कि प्रत्येक वाक्य, जो वह बोलता

था, हाथ से निकलकर नाथ की नालिया में घुस जाता था और वहाँ से घूमता हुआ, नयुना की राह बाहर निकलता था। इस वाक्य के स्वर में ऐसी गोलाइया पदा हो जाती थी, जो भापा का एक नया रूप और अक्षर वाक्य का नये अर्थ प्रदान करती थी। मैं बहुत दूर से उसकी बातें, बल्कि उसकी बातों की गोलाइया सुनता रहा—यह ध्यान दिये बिना कि इन गोलाइया के अंदर क्या है। इस बीच में मुझे वह घटना याद आ गयी जब जगमोहन और मैं मिटगुमरी के एक स्कूल में साथ पढ़ा करत थे।

जब जगमोहन एक बड़ी पगड़ी और तहमद बाघे स्कूल में पढ़ने के लिए आया करता था, तो सब लोग उस पर हसा करत थे। और चल बच्चे उसकी आर उगली उठा उठा कहत थे

लाचड दीन
बजाय बीन
तहमद मोटा
पग महीन

उस समय लोग जगमोहन का लौचड कहा करत थे। इस समय भी मैं उसकी बातें सुनते सुनते वही गीत जोर-जोर से गुनगुनाने लगा। जग मोहन बात करता करता चुप हो गया। फिर कुछ क्षणों के बाद शिकायत भरे शब्दों में बोला, 'भइ अब तो मुझे लौचड न कहा करा। अब मैं स्टेटस होकर आया हूँ—ट्रेनिंग लेकर आया हूँ।'

बाहे की ट्रेनिंग लेकर आय हो ?'

तेल निकालने की।'

'किसका तेल निकालने की ?'

'काजू का तेल निकालने की ट्रेनिंग।'

'काजू का तेल यहाँ भी तो निकल सकता है।'

'निकल सकता है किंतु अमरीका में तेल बहुत अच्छी प्रकार निकालना सिखाया जाता है।'

'वाह !'

इसके बाद उसने बार्ता का रुख बदलने के लिए मुझे वे चीजें दिखायीं

जो वह अमरीका से साथ लाया था। जूतो के दस-बारह जाड़े थे। उन जूतो में फीता के स्थान पर लोह की महीन जजीरें, जिन्हें 'जिप' कहते हैं, लगी हुई थी। जूता पहनकर जजीर खींच लेने में जूता पाव में स्वयं फिट हो जाता है। सामने पतलून में बटन के स्थान पर जिप लगी हुई थी। कोट की जेबा में जिप लगी हुई थी। कमीजों और स्वेटरों से लेकर जुराबों तक में जिप लगी हुई थी। फिर उसने मुझे कलंडर दिखाए, जिनके हर महीने के नये पन्ने पर एक नयी नयी अमरीकी औरत का चित्र था।

मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, "भई, इन औरतों की जिप कहा है? ये तो बिल्कुल नयी हैं।"

उसने मुस्कराकर कलंडर बंद कर दिया और उसके ऊपर एक जिप चढा दी और कहने लगा, "देखो, यह रही। अब बताओ अमरीका कौनसा देश है कि नहीं?"

सचमुच लौचड। वहाँ मोजे से लेकर औरत तक, प्रत्येक वस्तु लोहे की जजीरा में बधी हुई है।"

"श्योर, श्योर" जगमोहन बात न समझते हुए भी सिर हिलाने लगा।

लौचड हर बात में श्योर श्योर (sure sure) और फाइन फाइन (Fine) कहता था। और जब कोई वस्तु उसे अधिक पसंद आ जाती, तो जोर से 'हूकी' (Hookie) कहता।

इसलिए उसकी पतलूनें फाइन थी, और स्वेटर हूकी। उसकी कमीजें फाइन थी, और बुशट हूकी। उसके जूते फाइन थे और उसकी टाइया हूकी। हूकी के आगे यदि कोई शब्द है तो रेस कोस का 'बुक्की' है। किंतु कभी-कभी

फिर लौचड की टाइया बहुत सुंदर थी। ये दाहरी टाइया थी, अर्थात् सीधी भी पहनी जा सकती थी और उलटी भी। इसके अतिरिक्त उन पर अजीब-अजीब तरह के चित्र बने हुए थे।

कुछ टाइया तो ऐसी थी, जो पुरानी छीटा के कपड़ों को काटकर तयार की गयी थी। कुछ टाइयों पर पुराने गलीचों का धोखा होना था। कुछ टाइया, ऐसा प्रतीत होता था कि बच्चों ने अपने हाथों से रगी है। कुछ टाइयों की गाँठ इतनी मोटी आती थी कि ऐसा लगता था जस य घड़े

की गदन म बाधन क लिए तैयार की गयी है ।

लौचड न एक टाइ मुझे दिखायी । उस पर एक आर पहली बना हुई थी दूसरी जोर शयन कक्ष क भीतर एक स्त्री सा रही थी । मैं पूछा, "यह क्या है ।"

वह बोला, 'यह अमरीकी दाशनिका की टाइ है ।'

वह कैसे ?

वह बोला, 'तुम बताओ ।'

मैंने कहा मैं अमरीकी दाशनिक होता ता बता दता । अब तुमका बताना पड़ेगा ।

वह बोला श्यार श्यार ! देखो यह टाई कहती है, दिन को पहलिया हटा करा । रात को किसी क शयन कक्ष म घुस जाआ ।"

बहुत खूब, बहुत खूब । क्या दर्शन है ।" भर मुह स एकत्र निकला ।

और यह टाइ दखा ।"

यह भी दाहरी टाइ थी । इसक एक आर पाइप से धुआ निकल रहा था दूसरी आर दा ऊंची एडी के जूत थे, एक टाई के निचले भाग पर, दूसरा विलकुल ऊपर—और दानो जूता की एडियो म दस इंच का फासला था ।

उसने कहा अनुमान लगाओ, यह क्या है ?'

मैंने साच साचकर कहा, यह टाई कहती है कि तबाबू-नाश करोग ता पत्नी पीटगी ।

हा हा हा ! लौचड हसत हुए बोला 'तुम विलकुल गौंग-गाजा हो एक दम गौंग गाजा ।"

मैंने क्रोध से कहा "और तुम एकदम लौचड एकदम लौचड ।"

वह मेरी पीठ थपकत हुए बोला, "देखा प्राध मे मत आआ । यह टाई सायकाल क समय पहनी जाती है । जब शराब पीन क लिए बार म जाओ, ता इस पाइपवाली तरफ को सामन कर तो । शराब पीओ और सुंदर छाकरिया की चिट्ठी टांगो की ओर देखो । और फिर अगर कोई पसंद आ जाय तो टाई का रूख बदलकर उसके साय डास करा, डास ।

समझे ? डाम अर्थात् एक एडी ऊपर, एक एडी नीचे, बीच में दस इंच का अंतर—रभा नाच की तरह। हा हा हा !”

इसके बाद उमन बुशकोट उतारकर एक अमरीकी कमीज पहन ली, जिसके कट अवे कालर (cut away collar) एक दूसरे से इतना बड़ा काण बनाते हुए अलग हो गये थे कि उनके बीच एक छाड़, तीन तीन टांग्या बांधी जा सकती थी। परंतु इस समय मेरे मित्र ने केवल वही धुआ निकालने वाले पाइप और ऊंची एडी के जूते वाली टाई पर सतोप किया और चूकि शाम हो चुकी थी बर्रई में उस समय तक, शराब बंदी न हुई थी इसलिए वह मुझे अपन स्पेशल 'बार' में ले गया।

वह बोला, 'तुम क्या पियोग ?'

मैंने कहा, 'मिफ ह्विस्की पीऊंगा, और अगर ज्यादा जोर दोगे तो उसमें घाड़ा मौड़ा टाल लूंगा।'

वह बोला, "क्या जगली ड्रिंक है। इसे केवल अग्रेज या अध अग्रेज हिंदुस्तानी पीते हैं। इसमें अच्छा तो यह है कि तुम कोला-कोला पियो और च्यूइंग गम खाओ।"

"गम तो मैं रोज खाता हूँ," मैंने उत्तर दिया, "कोई नयी बात बताओ।"

वह बोला, "बाएँ, ओ बाएँ! आज तुम्हें अमरीकी कॉन्टेल पिलाता हूँ।"

इसके बाद वह अपनी मगरमच्छ की पटी सहलाता हुआ 'बारमैन' के पास चला गया और न जाने क्या अट शट शराबें मिलाने को कहता रहा। आखिर जब वह पंद्रह बौस मिनट बाद प्रसन्नता से हाथा को रगड़ता हुआ लौटा, तो बरे ने दा गिलास हमारे सामने लाकर रख दिये, जिनमें भूरे रंग का द्रव था, जो शराब के मुकाबले में घाड़े के पसाब से अधिक मिलता था और हमने अदर जून का एक बड़ा टुकड़ा पड़ा था।

इस अमरीकी फाक्टल का मजा बड़वा, भीठा बकबका और कसला था। ऐसा लगता था कि यह कॉन्टेल होनोलूलू में जगली घोपरे को मूअर के मांस में सड़ाकर तैयार की गयी है। मैंने मूह का जायवर उदलन के लिए जून का टुकड़ा उठाकर मुह में रख लिया—उफ कितना तज,

तीखा, छट्टा, सिरके की तरह जीभ को घाटन वाला जायका था।

“जर लौचड, यह काकटेल है या तेजाब ?” मैं झल्लाकर कहा।

मगर लौचड बड़े मजे से चुसकिया ल-लेंकर काकटेल पी रहा था और वार्ने करता जा रहा था। दा-तीन काकटेल पीने के बाद उसका हालत अजीब हो गयी और उसकी आँखें बार-बार रुम की बेलबूटेदार छत पर गड़ गयीं और वह अमरीका की स्मृतिमा में खा गया।

‘हाय, मुझे अमरीका में हाट डोग्स (hot dogs—गम कुत्ते) याद आत है।’

‘गम कुत्ते क्या हात है ? अजीब सा नाम है।’ मैं पूछा।

वह बोला, “अमरीका में गम कुत्ते एक प्रकार के कबाब का कहते हैं।”

“जीर गम कुत्ता का अमरीका में क्या कहते हैं ?”

उसने मुझे घूरकर देखा और फिर निगाहें फेरकर छत पर गड़ दा।

‘हाय मुझे हेम बगर (Home bargar) याद आता है।’

‘यह क्या बला है ?’ मैं पूछे बिना रह न सका।

लौचड चारट्या करन लगा। दस मिनट की लंबी व्याख्या के बाद पता चला कि हेम बगर में तली हुई मछलिया बेची जाती हैं।

मैंने जल भुनकर कहा, ‘साल, ता इसके लिए अमरीका जान की क्या जरूरत थी ? यहाँ हर घर में हेम बगर है।’

वह बोला, ‘हाय, वह बेस बाल’।’

‘यह क्या हाता है ?’

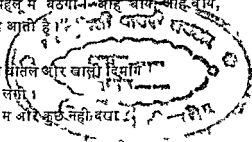
बीस मिनट की व्याख्या के बाद पता चला कि अमरीकी बस बाल वही था, जिसे हम बचपन में मकड़-डाडा के नाम से खेतत थे। हिमालय की गाद में और अमरीका से बहुत दूर आज स हज़ारों साल पहले से हमारे पुरखे इस खेल का खेलत आय ह—बस बाल, डूह !

‘और नीकिंग पार्टी (neeking party) !’

यह क्या ?

लौचड की आँखें अध मुदी हो गयीं। वह बोला, नीकिंग पार्टी का पहला नियम यह होता है कि कोई पति अपनी पत्नी के पास नहीं

जायगा और पत्नी सदा दूसरे व पहलू में बैठेगी—आह बाँके, आह बाय,
 मुझे सनसनाटी की वह पार्टी याद आती है।”



वह स्मृतियाँ मँखो गया।

गम कुत्ते, गम औरतों, खाली धातिल और खाली दिमाग।

सहसा मुझे मितली-सी हाने लगी।

मैंने कहा, “तुमने अमरीका में और कुछ नहीं देखा?”

वह बोला, “क्या?”

“हावड फास्ट का देखा?”

“कौन?”

‘पाल रावमन का देखा? वाल्ट व्हिटमन की कविताएँ पढ़ी? बच्चा को स्कूल जात हुए देखा?’

जगमोहन ने कहा, ‘मैं सटेटस में इन निरर्थक बातों के लिए नहीं गया था।’

मेरा क्रोध बढ़ता जा रहा था। मैंने लावड की टाई पकड़ ली और कहा, “तुम अमरीका से यह टाई लाय है जिसकी एक ओर जूएवाजी है और दूसरी ओर विलासिता का नय, एक ओर शराबखारी है, दूसरी ओर वेश्यावृत्ति एक ओर ट्रुमन है दूसरी ओर एटमबम। परंतु यह तुम्हारा अमरीका है। मेरा अमरीका ऐसी टाई नहीं। मेरा अमरीका तो ऐसी टाई है, जिसके एक ओर अब्राहम लिंकन है तो दूसरी ओर श्रम करने वाला हवशी, एक ओर वाल्ट व्हिटमैन है तो दूसरी ओर अमरीकी मल्लाह। एक ओर पुत्र से प्रेम करने वाला पिता है तो दूसरी ओर पति की पुजार्ति पत्नी, एक ओर पैक्सिबल की शूरवीरता है तो दूसरी ओर शांति की फाखता। इस टाई को मैं गलत मँबाधता हूँ और इसको सौ बार चूमता हूँ।

उसने अपनी टाई छुड़ाने हुए कहा, “तुम सदा में वैसे वैसे राजनीतिक बुद्ध रहें।”

फिर उसने मेरी आँसु दृष्टि फेरकर छत पर गाड़ ली और बड़े हमरत भरे सहजे में बोला, “हाय, इस देश में बितनी घुटन है। बाश, मैं फिर अमरीका जा सकता हूँ।”

“बाश, तुम जा सकते हैं।” मैंने भरपूर सहानुभूति और घुणा में कहा।

‘ परतु अबके कौन सी ट्रेनिंग लू’ —मेरी घणा को न समझकर बड़ उनावल पन स उमन कहा, “स्कालरशिप तो मैं किसी न किसी तरह प्राप्त कर लंगा।”

अबक तुम इमानी टायपडिमा का तल निवास्तन की ट्रेनिंग लना। इसके लिए तुम्ह स्कालरशिप भी आमना स मिल जायेगी। और अमरीका के शामक वग न इसके लिए सुविधाए भी बहुत जुटा रखी हैं।”

एतना कहकर मैं उठा और बाहर चला जाया। लीचड कुछ क्षण हक्का बक्का मेरी ओर देखता रहा। फिर उस एक पुतगाली लडकी नजर आयी जा अपनी सीट पर बठी बँड की गति पर ताल दिय जा रही था। उसकी टांगे बडी सुधर थी।

लीचड ने बडे जार से कहा, “हूकी !” —और अपनी टाई का रंग बदलने म व्यस्त हो गया।

सौ रुपये

मैंन सौ रुपये का काम किया था, मुझे सौ रुपये मिलन चाहिए, इसलिए मैंन मठ न बात की।

सेठ न कहा, "सोलह तारीख का आना।"

मैं सालह तारीख को गया।

सेठ वहा नहीं था। उसका बूढा मनेजर, जिसकी चाद साफ़ थी और जिसका एक दात बाहर निकला हुआ था और जो अपन असिस्टेंट का किसी गलती पर डाट रहा था, मुझसे बड़ी नम्रता से पश आया, "तुमने सौ रुपये का काम किया है, तुमको बराबर सौ रुपये मिलेग। किंतु आज सेठ यहा नहीं है कल आना।

मन पूछा 'यदि कल भी मेठ यहा नहीं हुआ ता ?'

मनेजर वाला 'तो मैं प्रवध कर दगा, तुम चिंता न करा। तुम्हारा पैसा तुमको मिल जायगा।'

मैंन दफ्तर मे बाहर निकलकर, दो पैसे का पूना पत्ता सकेली ममाला और हरी पत्ती वाला पान खाया। दो पस मे देमेरी काला काडी और ठडक वाला पान भी खा सकता था और मुन्ठो लाल ममाला वाला पान भी और बनारसी छाटा पत्ता, गोली, डली और इलायची वाला पान या मोहनी तबाकू वाला। किंतु मैंने केवल पूना पत्ता सकेली ममाला और हरी पत्ती वाला पान ही खाया, क्याकि मुझे भूख बहुत लग रही थी। मेरी जेब मे केवल डेढ़-दा आन थे, और यह पान जो मैंन खाया, काफी माटा

हाता है जोर दर तक मुह मे रहता है ।

और फिर मैं एक आन का टाम का टिकट लिया और ट्राम मे बठकर मैंन जार से सेठ की बिल्डिंग की आर थूक दिया ।

दूसर दिन फिर सठ वहा नही था । उमके मैंनजर न वहा, "सठ आज भी यहा नही है । और फिर तुम्हारे हिसाब म कुछ गडबड भी है ।"

मुझे क्रोध जा गया । मैं हिसाब द चुका था । मनजर उमे दस बार चेक कर चुका था । फिर भी कही से गलती निकल आती है । परतु मैं कुछ कह न सका, क्याकि मनजर का स्वर बहुत ही कामल था, और उसका प्रत्यक शब्द रेशम मे लिपटा हुआ था । इसलिए मैं भी नम्रता-भूवक कहा मेरा हिसाब तो बहुत साफ है ।

इतना कहकर मैंन अपनी खाकी पतलून की जेब स एक भला-सा कागज का टुकडा निकाला जोर मैंनजर क साथ ग्यारहवीं बार हिसाब चेक करान बठ गया । इतन पैसे रंगमाल फेरन के बतन पम रोगन क, इनन पैसे मजदूरी क । रंगमाल जोर रोगन की रसीदे मेर पास थी । मजदूरा पहल म तय हो चुकी थी । सेठ का फर्नीचर मरी मेहनत स जगमग-जगमग कर रहा था ।

मनजर न कहा, हा हिसाब ठीक है । अच्छा, बल आना ।'

किंतु बल अवश्य मैंने तनिक जार दकर कहा ।

हा बल अवश्य 'मनजर न चदिया का सहलात हुए कहा । बाहर आकर मैंन दो पस का पान भी नही खाया । एक आन का टाम का टिकट भी नही लिया । फारोजशाह महता राट स साइन तक पदल गया ।

किंतु दूसर दिन मैं फिर सठ के दफ्तर गया । आज भी दफ्तर म सठ उपस्थित न था । मनजर भी गायब था । मनजर का असिस्टेंट अपनी चुधियार हुई आधा स एक सिगल चाय अपन सामन रखे कुछ साच रहा था । उमका मुख अत्यत पीला था मस्तक के निकट मफेद गांता क निकट पाला और ठोड़ी क पास मटियाला-सा था । एमा प्रतीत होता था, जैसे किमी न उमक मुख की हडिडया क ऊपर खाल की बजाय मल-मल पील-पान कागज काटकर मड दिय हा । मैं उसक मुख का ध्यान स देखन लगा ।

अमिस्टट न प्याली से दष्टि उठाकर मेरी ओर देखा, और हाथ के सकेत म मुझे कुर्सी पर बैठन को कहा ।

मैन पूछा, "सठ जी कहा है ?"

वह बोला, "मेठ अपन दूसरे दफ्तर म गया है ।"

"और मनजर कहा है ?"

"मैनजर सठ के तीसरे दफ्तर म गया है ।"

"ना मुने यहा बीबी मजिन म किकमलि बुलाया है ।" मैन जर शोध म तज होत हुए कहा ।

अमिस्टट ने चाय का अंतिम कड़वा घूट भी निगल लिया । धीर स वाला, "तुम यहा वठ जाओ, मनेजर अभी आता होगा । उससे बात कर लेना ।"

मैं एक कुर्सी पर साढ़े दस बजे स लेकर पौन दो बजे तक बठा रहा ।

पहल मैन साचा कि एक शीशे का टुकड़ा लेकर इस सार रोगन को उतार दू, जो मैन इतनी मेहनत से फर्नीचर पर चढाया था । फिर मैन भोचा कि अपन दोनो हाथो स अमिस्टट क नकली चहरे स पीले-पाल कागज के टुकड़ा का उतार दू, ताकि भीतर की हडडी नगी हो जाय । फिर मैन भोचा कि मनजर को जान से मार दना अच्छा होगा । बहुत देर तक सठ के लिए दड सोचता रहा । अंत म विचार आया कि इसक समस्त शरीर पर प्री नबर मोटा रगमाल रगड दू तो उसकी समस्त खाल उधड जायेगी । इतन म मनजर आ गया । मुस्करात हुए बोला, 'तुम्हारा काम हो गया है किंतु चक मिला है—मौ रुपये का । परतु अब पौन दो बज चुक है, दो बजे बक बढ हा जाता है, और बैंक यहा स दो मील दूर है । कल छुट्टी है, और परसा श्तवार है ।'

मैन निराश हाकर कहा, 'हाय !'

"हा'—मैनजर प्रमनना से हाथ मलता हुआ वाला ।

मैन रुखाई स कहा, 'चक मुझे द दो ।'

पाच मिनट और चक नन म बीत गय, क्याकि चेक पर मरा नाम गलत लिखा हुआ था । मुहम्मद शेख के स्थान पर मुहम्मद रफीक लिखा हुआ था ।

“हाय हाय”, मैनेजर ने कहा, “बड़ी गलती हो गयी। मुहम्मद शीघ्र लिखत लिखते मुहम्मद रफीक लिख गया। किंतु कोई बात नहीं। अब तुम सामचार को आकर नया चेक ले जाना।”

मैने कहा, किंतु यह तो वेयरर चेक है, नाम की गलती से कोई जतर नहीं पडता। तुम मेरे नाम की रसीद ले लो और मुझे चेक दे दो। सोमवार को मैं कहा आऊंगा, कहीं और घघा करूंगा।”

“अच्छा तो ले जाओ”—मैनेजर ने हकन हकत कहा।

चेक लेकर बाहर आया तो दो बजने में दो मिनट थे। किसी प्रकार भी मैं पैदल चलकर बैंक नहीं पहुंच सकता था, सौ रुपये का चेक मेरे हाथ में था। किंतु अभी कागज का टुकड़ा था। उसे सौ रुपये में परिवर्तित करने के लिए बैंक तक पहुंचना आवश्यक था—दो बजने से पहले केवल एक बात ही सकती थी।

मैंने निणय कर लिया और चिल्लाकर कहा, “ए टैंकसी !”

पीली छत और काले शरीर वाली टैंकसी मेरे सामने आकर रुक गयी।

मने भीतर बठने हुए कहा कालबादेवी रोड के नाके पर चलो और जरा तेज चलाओ !”

जब कालबादेवी के नाके पर पहुंचा तो दो बजने में दो मिनट थे। परंतु बैंक कालबादेवी रोड पर नहीं था। यद्यपि चेक पर यही लिखा हुआ था किंतु बैंक कालबादेवी रोड के नाके पर दिखाई न दिया। दो एक दुकानदारों से पूछा किसी को इतना अवकाश न था। कोरिया में जग तब थी। भाव भी ऊंचे जा रहे थे। किसी को गरीब वारनिश करने वाले के सौ रुपये की चिंता न थी।

हारकर मैं एक पंजाबी सिख हारमानियम वान की दुकान में घुस गया।

आइए आइए क्या बाजा चाहिए आपको ?” सरदार ने अपनी उस आरी को छोड़कर जिसमें वह लकड़ी काट रहा था, मुझसे मुस्कराकर पूछा।

मैंने कहा, “सरदार जी, मुझे बाजा नहीं चाहिए—मरकनटाइल बैंक का पता चाहिए। चेक पर लिखा है कालबादेवी रोड, जोर यहा कहीं

मिलता नहीं।”

सरदार जी ने मुस्कराकर कहा, “बादशाहो, वह बैंक तो साथ वाली गली में है। इतर घूम क सट्टा बाजार के उम ओर, पुरान चादी बाने मंदिर क पास।”

मैन सरदार जी का धन्यवाद किया। भागा वापस टैंकमी के पास। जब बैंक पहुंचा ता दो बजकर दो मिनट थ। नियम ता यह था कि मेरा चेक कतक का नहीं लेना चाहिए था। किंतु शायद क्लक चेक पढने के अतिरिक्त चेहरा भी पढना जानता था। उसने चुपचाप चेक मेरे हाथ से ले लिया। फिर उल्टा करके दया। मुथस कहने लगा, “इस पर दस्तखत कर दो।”

मेरा नाम मुहम्मद शख था, किंतु मैन मुहम्मद रफीक लिखा। यह मुहम्मद रफीक कौन था यहा कहा से आया था, कब जम हुआ था उसका, उसकी सूरत कैसी थी, उसके माता पिता कौन थे—कौन जानता है। कुछ जिदगिया एसी हाती ह जिनका नाम चेक पर ही लिखा जाता है और चेक पर ही काट दिया जाता है।

मैं टैंकमी वाले का बिल चुकता करने लगा। दो रुपय दो आने—टैंकमी छोटी थी इसलिए मीटर बढ़ा नहीं। टैंकमी बड़ी होती तो पाच-सात रुपय खुल जाते। मैन प्रसन्नता से शांति का सास लिया। इतने में किसी ने आकर जोर से मेरे कंधे पर हाथ मारा, और कहा “कहा, दोस्त, मेर घार, बडे टैंकमी में घूम रहे हो आज।”

मैन घूमकर दखा, मेरा दोस्त इसहाक था। इसहाक बडे खुल दिल का आदमी था। वह स्वयं तो अब्दुल रहमान स्ट्रीट में एक छोटे क मकान में, एक तग से कमर में रहता है, और वही धधा करता है जो मैं करता हूँ—अर्थात् वारनिश का और पुराने फर्नीचर को फिर से नया कर देने का, किंतु उसकी प्रेमिका मुहम्मदअली रोड और ट्राफड मारकेट के नाबे पर एक अच्छे होटल में रहती है। मैन उसे दखा है बड़ी सुंदर औरत है। बडे बडे सेठो के पास जाती है। इसहाक इससे पहल उसके पास ड्राइवर था। इसहाक को यह काम पसंद नहीं आया। और वह उससे अलग हो गया।

वह औरत इसको बहुत पसंद करती है। यह भी उसको चाहता है।

किंतु वह इसे अपन ढर्रे पर लाना चाहती है, और यह उसे अपन तराव पर रखना चाहता है। दाना में सदैव लड़ाई होती है, और फिर यह उससे दम चारह दिन नहीं मिलता, फिर वह इससे मिलने का आती है। एस ही यह चक्कर चलता रहता है। कभी कभी जब इसहाक कोई मोटी रकम कमा लेता है तो उस जाकर द आता है। और उसको एक लेक्चर भी पाठ आता है। किंतु जिम म्प्री के पाम अच्छा होटल होगा, यौवन हागा, सुन्दर मुडौल शरीर हागा और सोने चादी वाले सेठ होंगे, वह वारनिश करने वाल इसहाक की बातें क्यों मुनेगी? साचने की बात है न मित्रा।

मैंने इसहाक से पूछा, 'मुझे भूख लगी है, कुछ खा-जोग?'

वह बोला "हा भूखा तो मैं भी हू। चला फीरोज का दुकान पर।'

फीरोज कबाबिय की दुकान से खा-पीकर निकलन के बाद इसहाक ने मुझसे दस रुपये उधार लिये, और अपन रास्त पर चला गया।

मुझे इसहाक बहुत पसंद है। उसके पास पैसे हो तो 'ना नहीं करेगा। सबको खिलायगा। और जब पस नहीं हाग तो मेरे अतिरिक्त किसी से कज नहीं मागगा—भखा मर जायेगा, किंतु किसी से उधार नहीं नगा। एसा मित्र, जो ससार में मेरे अतिरिक्त किसी और से उधार न ले कहां मिल सकता है। मुझे इसहाक की मित्रता पर बड़ा नाज है। मैं जब भी इसहाक से मिलता हू, एक विचित्र-सी प्रसन्नता, निश्चितता, बच्चों जैसे आह्लाद का अनुभव करता हू। मुझे ऐसा लगता है, जस मन में काइ क्लेश नहीं है, कोई कष्ट नहीं है। जैसे समस्त ससार खिलौना से सजा हुआ है, और उसके सारे खिलौने मेरे लिए हैं। कई-कई यक्तियां में कुछ एमी खूबी होती ही है।

इस समय इसहाक से मिलकर मेरा मन हल्का फुल्का हो गया। मैंने फ्राफड भारकेट से दो सेब भाल लेकर खाय। एक भिखारी का दो आने दिये। वहा से चलता चलता बोरीबदर आ गया। किंतु जब मैं रुपये दे, इसलिए अभी घर जाने को जीन चाहता था। इसलिए बोरीबदर से हानवी रोड पर हो लिया। हानवी रोड की दुकानें मुझे बहुत पसंद हैं।

कैसी-कैसी सुंदर वस्तुएं पढी हुई हैं—सुंदर टाइया, मोजे पतलून के

कपड़े, मफलर जूते। हर सप्ताह इन शो-वेसों के भीतर सुंदर वस्तुएँ बदलती जाती हैं और पुराने डिजाइनों के स्थान पर नये डिजाइनों आ जाते हैं। शाम को घर जाने से पहले मैं प्रायः हानवी रोड के शो-वेसों को देखा करता हूँ। जेब में पैसों का हाथ न था, इससे कोई मतलब नहीं। परन्तु मैं प्रायः अपना काम घटम करके बोरीबंदर जान के लिए हानवी रोड से गुजरा करता हूँ और हर एक शो-वेस से नाक रगड़कर भीतर की सुन्दर वस्तुएँ देखा करता हूँ। इसमें मुझे इतना आनंद आता है, जितना बचपन में नये विलीन देखकर प्राप्त होता था।

मैं अपनी जेब में हाथ डालकर नये-नये कुरकुरे नोटा का चपथपाया और बड़ी शान में ईवान एंड फ्रिजर के नि-आन साइटा से जगमगान हुए शो-वेस के सामने जा खड़ा हुआ। हाथ कितनी सुंदर कमीजें थीं! वादामी रंग की साफ सुंदर कमीज, उम पर नील और लाल रंग की धारियाँ। मेरा तो जी मचल गया। मैं अपनी कमीज के फट हुए कालर को सहलाया। इस लाल रंग की धारीदार कमीज को पहनकर मैं कैसा दिखाई दूँगा। मैं कल्पना में अपने आप को यह कमीज पहनकर एक बड़े दपण के सामने देखा। वाह, क्या ठाठ थे! और कमीज के दाम थे केवल तीस रुपये। इससे तीन गुना अधिक रुपये इस समय मेरी जेब में थे। मैं यह कमीज मोल ले सकता था। किंतु और अच्छी चीजें देखने के लिए आगे बढ़ गया।

अगले शो-वेस में सुंदर साबुन थे, झाग वाले स्पंज और तौलियाँ। इन्हें देखकर आप ही आप नहाने की इच्छा उत्पन्न होती थी। यह सब मैं मोल ले सकता था। इससे अगले शो-वेस में पुरुषों के लिए गाउन थे। भडकील, रेशमी, कढ़ाईदार गाउन जिन्हें पहनकर वारनिश करने वाला भी मिला का पाशा दिखाई दे। सत्तर रुपये का गाउन, और उससे अधिक रकम मेरे पास थी। मैंने उन गाउन को कल्पना में पहना, और एक ईरानी गलीचे पर उड़ता हुआ, बहुत दूर चला गया। व्याम निमल था। मेरे नीचे सुंदर बागा वाली धरती घूम रही थी। और हरी-हरी दूब में एक पतली-दुबली नदी, किसी कोमलागी की भाँति, घूँप सँक रही थी।

मैंने इस गलीचे को नदी के किनारे उतरने की आज्ञा दी। गलीचा

नदी के किनारे उतर आया, और स्वयं ही विष्ट गया। फिर स्वयं ही कहा से एक मुराही आ गयी और एक कोमल हाथ, और दो आँखें और एक सुंदर मुग्ध। फिर मुझे किसी ने ठहोका दिया और कठोर स्वर में क्या, "आग बढ़ो, अब किसी और का भी देखने दो। आँधे घंटे से यही छडा है। न लेना न देना।"

मैंने मुम्बरावर र्वान एड फ्रेजर के बरदी पोश गुलाम की ओर देखा जो मुझे डाट रहा था और आग चल पडा। बेचारे को क्या मालूम था कि मेरे पास एक वायु में उड़ने वाला गलीचा, और जैव म सतर स भी अधिक रूपयो की रकम है। मैं इस समय भीतर जाकर इन गाउन का भी माल ले सकता था, परंतु जो नहीं किया। हानवी रोड पर इससे अधिक सुंदर वस्तु भी अवश्य होगी, आग चलकर दखा जाय। इस बर्दी पोश गुलाम को तो किसी भी समय भुगता जा सकता है।

आग चलता चलता, बहुत सी दुकानें दखता भालता जगदबालाल पाटिल की दुकान पर पहुच गया। यहा सुंदर शो केसो म कमर पडे थे जिहे मैं मोल ल सकता था। कैमरे मोल लेकर मैं उन सब फर्नीचरो का चित्र ले सकता था जो पुरान थे, किंतु जिह मेरी वारनिश, मरी मेहनत ने इतना सुंदर बना दिया था कि बिलकुल नये फर्नीचर की भांति जगमगा रह थे। मैंने सोचा—य कमरे लेकर मैं इसहाक के पास जाऊंगा, और उससे कहूंगा, 'चल आज तेरी और तेरी प्रेमिका की इकट्ठी तस्वीरें लू।' मैंने अपना ईरानी गलीचा मगवाया और कमरा हाथ में लेकर सारे सप्ताह के सुंदर दृश्यो के चित्र उतारने लगा।

कैमरे के साथ एक जादू बीन पडी थी, जिसमें देखने से तस्वीरें बिलकुल अपनी गहराई के साथ दिखाई देती है—अर्थात् जैसे मनुष्य बिलकुल आपके सामने चल फिर रहे हो, और मकान आपके सामने है, जस आपका घर। तस्वीरें अपनी लवाई-चौडाई और मोटाई के साथ इतनी अच्छी दिखाई देती है कि सिनमा में भी इतनी भली मालूम नहीं हाती। बचपन में एक बुढिया एक बडी-सी जादू-बीन हमारे मुहल्ले में लाया करती थी। और हम लोग एक पैसा देकर तमाशा देखत थे। इस जादू-बीन का देखकर मेरा मन प्रसन्नता से नाच उठता था।

मैं दुकान के भीतर चला गया ।

काउंटर पर मैं एक युवक से पूछा, “यह जादूबीन कितने की है ?”

“साठे सैंतीस रुपये की ।”

युवक बड़ी सुंदर कमीज पहन था । उमक वाल घुघराले और पीछे को सवारे हुए, नि-आन की रोगनी म नय फर्नीचर व वारनिश की भाति चमकत थे । उसके होंठा पर भी यौवन की वारनिश थी । उसके होठो पर एक गवपूर्ण मुस्कान थी—जा ववल चेक लिखत समय पदा हाती है । उसने मेरी ओर दृष्टि उठायी और फिर घुमाकर उस सुंदर युवती की आर दखा, जो अभी-अभी दुकान म मेर म पीछे जायी थी । वह उसकी आर आकपिन हा गया आर एक भल मुरषाय चेहर वाला गुजराती जा उसका अमिस्टेंट लगता था, मेरी ओर आ गया । मैं देखा उसके मुख का वारनिश जगह-जगह से उखडा हुआ ह । उसन मुस्कराने का यत्न भी नही किया ।

मैंने कहा, ‘यह जादूबीन मुझे दिखा दो ।’

उमने जादूबीन म एक लपटी हुई फिन्म रखकर मरे हाथा म थमा दी और मुझसे कहा, “इसे घुमात जाओ । इस प्रकार स्विच दबात जान स नय नय चित्र तुम्हार सामन आत जायेंगे ।” मैंने बटन दबा दिया । टारजन हाथी पर सवार सामन से चला आ रहा था ।

मैंने बटन दबा दिया

टारजन जल प्रपात म छलाग लगा रहा था । नीचे मगरमच्छ कितन भयानक प्रतीत हो रह थ ।

मैंने बटन दबा दिया

फूना के गजर, फूना व हार और फूना के लहग पहन हुए, हवाई द्वीप की सुंदरिया नृत्य कर रही थी ।

मैंने बटन दबा दिया

किनार की रेत पर शराब, मीठे फल, लजीज बिस्कुट और खाने की चीजें एक साफ तश्तरी म पडी थी, और एक स्त्री रत पर आख बंद किय बठी थी । उसका मुख मरे इतने समीप था कि मैंने शीघ्रता से बटन दबा दिया

ईरानी गलीचा धरती पर आ गया ।

मैंने छुजली पे मारे गुजराती बनक से कहा, "यह जादूबीन ता बहुत अच्छी है—मर बचपन की जादूबीन स हजार गुना अच्छी है । कितन मे दोने ? "

"साढे सतीस रुपय की जादूबीन आती है । य सपेटी हुई एक दजन रगीन फिल्म इमके साथ लेनी पड़ेगी । दस रुपय की ये हागी । सलटकस इसके अलावा—पचास से ऊपर रकम जायेगी ।"

मैंने जेब म हाथ डालकर दस दस के नये धुरधुर नोटा को गिना । आपका विश्वास नहीं आयेगा, किंतु यह विलकुल सत्य है कि इससे पहले मेरे मन मे जादूबीन के अतिरिक्त कोई चित्र न था । परतु नोटा को हाथ लगात ही एकदम मुझे झटका-सा लगा, और बहुत स चित्र बिना बटन दबाय मेर सामने धूमन लग

एक बच्चा पटी हुई कमीज पहन गली क फश पर बठा हुआ है और रो रहा है । मैंने पहचाना, यह मेरा बच्चा है ।

एक स्त्री की सलवार का पायचा दूसरे पायच स ऊचा है । उसकी ओढनी स उसके सिर के उलझे हुए बाल बाहर निकले हुए दिखाई दे रहे हैं । मैं समझ गया कि वह मेरी ।

एक व्यक्ति द्वार पर खडा है । इसकी सूरत हर क्षण बदलती जाती है । उसका प्राध प्रत्येक क्षण बढ़ता जाता है ।

कभी यह मकान मालिक का मनेजर बन जाता है,

कभी दूध वाले सठ का मुनीम,

कभी रिजली कंपनी का इस्पेक्टर

कभी पानी के दफतर का अफसर ।

मैंने बटन दबा दिया

अब मेर सामने घर के फश पर, एक खाली तश्तरी पडी थी, जिस पर एक गिलाम औधा पडा था ।

नोट मरी जेब मे बाहर निकले, पर वही हाथ मे रह गये ।

फाउटर वाला सुदर युवक, उस सुदर युवती को कमरा बेचकर, मेरी आर आ गया । मैं शीघ्रता से धूमकर दुकान से वापस जान लगा ।

मैं जानता था कि वह कलक अपनी सर्वोत्तम गवॉली वारनिश फिरी मुस्कान से मेर फट हुए कालर को देख रहा है। मेरी छात्री जीन की पतलून देख रहा है, जिसके पीछे की ओर दो एक पैदल लग हुए हैं। मुझे मालूम था कि वह मुझ पर व्यगपूवक हस रहा है।

मैं अच्छी तरह स दात भीच लिय। अच्छी तरह से जेया म हाय डालकर नोटा को अपनी मूट्ठी में ले लिया, और नुमायशी शो वेसा मे भाखें चुराता सीधा वारीबन्दर की ओर चल दिया।

चलन चलन मुझे अनुभव हुआ कि किसी न मेर साथ घोर छल किया है। किसी ने मुझे सौ रुपय दकर दो सौ रुपय छीन लिय हैं। साथ ही मरा ईरानी गलीचा और जाडूवीन छीन ली है। किसी न जार स मेरे मुह पर चपत मारी है। किसी न मेर हर नाट पर लिय दिया है, 'तुम्हार लिए नहीं है।'

मेर बंदम प्रत्येक क्षण भारी हान गये। और मैंने अनुभव किया कि मेरे श्रम का प्रत्येक नाट जभाव की एक लबी जजोर है जिम में स्वय अपन हाथो मे खीच रहा हू।

वारीबंदर पहुचकर एकाएक मैं निणय किया कि मैं आज गाढी से अपना घर वापस नहीं जा सकता। आज मैं पदन ही वारीबंदर न माइन जाऊंगा।

बहुत रात बीते मैं थका हारा अपने घर लौटा। मेरी पत्नी चिंतित हो रही थी और मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। किंतु जब उसन नाट दख ता प्रमन हो गयी। मेरी उदामी का कारण वह नमझ न मनी।

वाली, "किंतु यह क्या बात है कि तुम आज प्रसन्न होन के बजाय उदाम हा?"

मैं चारपाई पर बठन हुए कहा, "मेरी जान, आज मुझे यह पता चला है कि यह दुनिया बहुत बूढ़ी हो चुकी है और मुझे ऐसी दुनिया चाहिए, जो बच्चो की तरह नयी, मुस्कराती हो।"

वह बोली, "मैं नहीं समझी तुम क्या कह रह हो?"

मैंने कहा, 'मेरी जान, मैं कह रहा हू कि अब पुराने फर्नीचर पर वारनिश करन से काम नहीं चलेगा अब नया फर्नीचर लाना होगा।'

सपनों के इशारे

एक बार मैं सपना देखा कि मैं बच्चा हूँ और गंगा चूसत चूमत परिया के देश में आ निकला हूँ। परिया के देश में वह रास्ता जाता है जो घास के मैदान के नीचे से जाता है, जहाँ खजूर के बड़े ऊँचे ऊँचे बस हैं और झाड़ियों के जंगल, जिनमें चींटियाँ न बड़े-बड़े पहाड़ बना रख हैं। यहाँ तितलियाँ रंग बिरंग घरों में रहती हैं और परियों के लिए शहद तयार करती हैं। इस देश में कभी रात नहीं होती, कभी दिन नहीं होता, प्रकाश धरती पर आकाश से छन छनकर आता है। इसलिए यहाँ की धूप बच्चा सुहावनी और सुगंधित होती है और घास पर पानी की तरह बहता है और नदियाँ बनाती हुई परिया के देश को प्रकाश से सींचती हैं। इस देश में कभी वारिण नहीं होती कभी बादल नहीं गरजते कभी बिजली नहीं चमकती, कभी बर्फ नहीं पड़ती। गर्मी, बरसात, जाड़े का यहाँ पता नहीं लगता। हर समय बहार का सा समा छाया रहता है। कहीं से माती लुढ़कत आ जात है—एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, इस प्रकार मोतिया का ताता बंध जाता है। कभी तो ये माती बिलकुल श्वेत और पारदर्शी होत हैं और कभी सगमरमर की भाँति ठोस। कुछ समय बाद ठोस मोती पारदर्शी बन जात है और फिर घास के गुच्छों में लुप्त हो जात है। जो ठोस माती बच रहत हैं वे धूप की नदी में बहत रहत हैं। और परिस्तानी बच्चे उनसे खेलते रहत हैं। उन पर सवार होत हैं, उन पर बैठ कर नदी की सर करत हैं। और किनारों पर खड़े हुए फूल इन परिस्तानी

बच्चों का तमाशा देखने हैं, और तितलिया बेसर की कोपलो पर झूलती रहती हैं। और यहा इत्र की वर्षा होती है। और हवा ऐसे चलती है कि सारा परिस्तान झूम झूम उठता है। यहा हवा, हवा नहीं होती, एक रागिनी होती है। और रागिनी की लय म हर परी सास लेती है। अजीब देश है यह परिस्तान।

जब मैं गना झूमते-चूसते पहुचा, तो बच्चा था। इसलिए किसी ने मुझमे पूछ-ताछ या रोक टोक न की। मैं हर जगह घूमता रहा, मोतियों की नावा म बैठकर नदी पार करता रहा। किसी ने मुझसे न पासपोट मागा, न टैक्स था कर, न मेरा गना छीना। केवल एक राजकुमार को देखा जो कि उदास उदास घूमता था और एक फून के द्वार से दूसरे फूल के द्वार मे झाकना फिरता था तथा खुबा और झाडियो के जगलो मे मारा मारा फिर रहा था। वह उडा ही सुदर था। परतु उमके होठो पर पपडिया जमी हुई थी और तलबो म छाले पडे थे। और जब वह सास लेता था तो उसकी सास की लय मे से आह निकलती थी। परिस्तान के लोग उमकी आर दखकर मुस्कराते और चुप हो जाते और खामोशी मे उस रास्ता दे देते। मैं कई दिन उसके पीछे पीछे घूमता रहा। वह मोतियों की नाव म जान वाले हर यात्री को ध्यान से देखना जगल मे झाडियो की झापडिया और पत्तो की छतरियों और टहनियां के खबा के पीछे किसी का दूढता। हर वार उसे निराशा होती और वह लोट आता।

मैंने एक दिन एक तितली से पूछा, 'यह राजकुमार क्या खोजता फिरता है?'

तितली मुस्करायी, कहने लगी, "तुम्ह मेरी पचरगी साडो पमद है?'

मैंने कहा, "मैं क्या पूछ रहा हूँ, तुम क्या जवाब दे रही हो।'

तितली ने फूल के अदर पीले पीले कामल रेशो का झूला बना रखा था। वह उम पर जा बैठी और झूले की हिलोरा से फूल का मुनहरी जीरा चारो ओर उडने लगा।

क्यो धूल उडाती हो?" मैंने क्रोध से कहा, "बडी बदतमीज मालूम होती हो।"

वह हसी ।

कहने लगी ' शहद खाओग ?'

मैन कहा, ' पहन मेर सवाल का जवाब दो ।'

ऊह"—उमन इनकार से मिर हिलाया और फूल की पत्ती से द्वार बंद कर लिया । मैं चकित हा उस बंद द्वार की ओर दखने लगा । उमन बाहर आस का एक बहुत बड़ा मोती लटक रहा था । मैं जो उसम झाक कर देखता हू तो एक निराली ही दुनिया पाता हू ।

नीलम के जडाऊ फश पर एक ऐसी सुंदर राजकुमारी नाच रही थी कि उसकी मुस्कान पर परिस्तान 'योछावर हो सकता है । वह अपना सहलियो के साथ नाच रही थी और मेरी ओर देख देखकर मुस्करा रही थी ।

मुचे विस्मित दखकर बोली, 'आआ, नाचोगे ?'

मैन कहा, "जी, मुझे नाचना नहीं आता ।'

"जच्छा यह क्या है ?" उसने गाने के टुकडे की आर सकेत करत कहा ।

' यह गाना है । इसका रस मीठा होता है । हमारे यहा इस नशकर भी बोलते हैं । इसका गुड बनता है खाड बनती है और शक्कर तथा चीनी भी ।

राजकुमारी कहने लगी, ' तुम बहुत राचक बात करत हो । तुम कहा से आय हा ?'

"मैं घरती से आया हू ।"

बह बोली, 'हम भी तो घरती पर रहत है । क्या परिस्तान के अतिरिक्त कोई और देश भी है ?'

अब उन पर मैं हसा । मैन कहा, 'आपको कुछ पता ही नहीं—इस परिस्तान के अतिरिक्त इस घरती पर और बहुततर दश हैं । भारत है, इंगलड है अमरीका है जमनी है, जापान है । और ये देश आपस में लडते झगडत रहत है ।'

राजकुमारी बात काटकर बोली ' यह गाना मुचे दे दो ।'

मैन हाय बढाया, तो गाना एकाएक ओस के मोती स जा टकराया ।

धीरे वह एक झटके से टूटकर लाखों कणों में बिखर गया। टूटते समय मुझे राजकुमारी और उसकी सहलियों के कहकहों की विलीन होती आवाजें सुनाई दीं। और मैं अपनी हरकत पर लज्जित खड़ा रह गया।

आग चला ता बहुत दूर जाकर मुझे एक द्रुतगामी टिड्डा दिखाई दिया, जो अपने कंधे पर उठी राजकुमार को उठाये लिय जा रहा था। मैंने राजकुमार से पूछा, “कहा जा रहा है?”

“खुबों के जगलों में—हटा, रास्ता न रोका, मुझे देर हो रही है। ओस के मोती उड़ जायेंगे। गुलाब का सारा जगल मैंने छान मारा है— अब खुबों का जगल देखूंगा—हटो भी।”

मैंने कहा, “भलेमानस, यह तुम प्रतिदिन किस खोजत हो और असफल रहत हो? इस परिस्तान में मैंने केवल तुम्हें उदास देखा है।”

टिड्डे ने गाकर कहा, “प्रेम ही जीवन है।”

मैंने कहा, “तो क्या राजकुमार का किसी से प्रेम है?”

टिड्डा बोला, “वाह, तुम्हें पता ही नहीं।”

मैंने गाना चूमते हुए कहा, ‘भई, मैं परिस्तान में नवागत हूँ, मुझे क्या मालूम? आज आया हूँ, कल चला जाऊंगा।’

राजकुमार ने टिड्डे से कहा ‘दर हा रही है, और तुम्हें बाते बनाने का बहुत चस्का है।’

टिड्डे ने कहा “धबराआ नहीं, आज दिन भर मैं तुम्हें माय हूँ। हम राजकुमारी को खोज निकालेंगे।”

मैंने मुस्कराकर कहा, “तो तुम राजकुमारी को खोज रहे हो? अरे भई, एक राजकुमारी तो मैंने अभी-अभी देखी थी—आस के मोती में नीलम के फल पर, अपनी सहलियों के साथ नाच रही थी। वह उधर रास्ते में एक फूल के द्वार।”

राजकुमार यह सुनते ही टिड्डे के कंधे से उतरकर, भागा भागा उस ओर गया, जिधर मैं सकेत किया था।

टिड्डे ने राजकुमार की आर देखकर सिर हिलाया, और फिर अपनी टांगें धूप की नदी में डाल दीं। और फिर मुझे अपने पास बैठने का सकेत करते हुए बोला, “आओ, तुम्हें इस बेचार राजकुमार की कहानी

सुनाऊ ।”

‘ बहुत अच्छा, यह ला गना ।’

“नही नही, मैं तनिक कमर के साथ गहना मिलाकर खाना हूँ—
डाक्टर न परहज करन को कहा है ।”

‘ अच्छा ता वह कहानी क्या है ?’

‘ बहुत लंबी कहानी नहीं, एक छोटी-सी कथा है । तुम्हें ता यह मालूम
है कि सितारा से आगे जहाँ और भी है ।’

मैंन कहा, ‘ हा, मैं जानता हूँ बिना जीन ’

टिड्डा बोला हमारा यहा माना पिता नहीं हात । अच्छा, यह अलग
बात है । तो सुनो ।’

परतु मैंन अनुरोध करत हुए कहा “माता पिता नहीं होत तो
तुम्हारा पालन पोषण कौन करता है ? तुम्हें पढ़ना लिखना कौन सिखाता
है ? तुम्हारी शादी ब्याह कौन करेगा है ? और बाजार से गना मोल
लेकर कौन देता है ?”

“अर भई” टिड्डा बोला, हम जीवन की भाँति स्वयं प्राकृतिक
रूप से, उत्पन्न हात है । हमारे हर मास में पान रचा हुआ है । यही हम
स्वयं सब कुछ बता देता है । हमारे यहा बाजार नहीं है, क्योंकि किमी
को खरीदन प्रचन या अपन अधिकार में रखन का चाय नहीं है । यह जगल
पत्त फूल यह धूप य जीम क मोती, यह शहद, यह धरती की उपज—सब,
सार परिस्तान के लिए काफी है । क्या तुम्हारे यहा धरती उपजाऊ नहीं
हाती ?

‘ उपजाऊ ता है, और सबके लिए पर्याप्त हा सकती है, परतु ।’
मैं रुक गया ।

परतु क्या ?

‘तुम नहीं समझाने ।

टिड्डे ने कहा ‘तुम सब कहत हो । हम तुम भिन्न भिन्न ससारी
में रहत हैं । तुम हमारी बात नहीं समझ सकत, हम तुम्हारी बात नहीं
समझ सकते । किंतु जो कहानी मैं तुम्हें अब सुनाना चाहता हूँ, वह दोनो
ससारी में समान है । यह प्रेम की कहानी है ।’

“प्रेम !” मैंन कहा, ‘हा, मा मुये प्रेम करता है—कभी कभी एक ऐसा भी प्रेम है, पिता मुये अपने वक्ष से लगा लेते हैं—कभी कभी एक ऐसा भी प्रेम है। यही प्रेम है न ?”

“हा, यही प्रेम है। परतु प्रेम एक और प्रकार का भी होता है।”

“वह क्या प्रेम होता है ?”

“जैसे जस ।” वह मेरी ओर देखकर मुस्कराया।

“ओह—तुम्हारा मतलब ‘इश्क’ से है।”

टिडडा घबरा गया, “ओह, तुम्हारा यहा इस प्रेम को ‘इश्क’ कहते हैं ? अजीब-सा लगता है—इश्क। सच यह है कि हमारा यहा ऐसा प्रेम नहीं होता, जिसे इश्क कहत हो। हमारा यहा प्रेम होना है, परतु पीडा पहुंचान वाला नहीं। किसी पर अधिकार पाकर उसे वश म रखन की इच्छा नहीं होती। यह रोग पहली बार केवल इस राजकुमार को लगा है। पहल-पहने इस राजकुमारी से प्रेम ही था। राजकुमारी का भी इससे प्रेम था। दाना सुखी थे और परिस्तान के उद्यानो म नाचत फिरत थे। राजकुमारी अपनी सहेलिया के साथ और राजकुमार अपन साथिया के साथ रहता था। किसी को कोई दुख न था, कोई अभाव न था। टिडडा सहमा रुक गया।

दो मोती कही स लुडकन जाम और नदी की मतह पर नाचन लगे। नाचत नाचत अलग हो गय। और फिर जलग हीकर लुडकन लग। फिर इकटठे होकर नाचन लग। फिर दा-तीन मोती कही म आय। फिर नत्य शुरू हा गया। अजीब मनोहर दृश्य था।

टिडडे न कहा, “यही हमारा जीवन है। हमारा यहा प्रेम है, ‘दासता’ नहीं। उल्टाम है, इश्क नहीं। हम इकटठे मिलकर नाचत हैं, फिर अलग हो जाते हैं। एक से दो, दो से तीन—और फिर हम एक वृत्त बना लेते हैं और उसम सारे परिस्तान को अपनी परिधि मे ले लेत ह। परतु राजकुमार न चाहा कि राजकुमारी को सारं परिस्तान से अलग कर दे। वह केवल उसकी हांकर रह जाये—किसी से बात न करे किसी के साथ न हसे, किसी क साथ न गाये। वह दिन भर उसको निहारता रहता। उसके खिले हुए चेहर पर विपाद की परछाइया आती गयी, हाठा पर पपडिया जमती

गयी और सास की ली से आहें निकलन लगी ।”

‘फिर क्या हुआ ?’

राजकुमारी को भी राजकुमार से अथाह प्रेम था, परतु उसक प्रेम म अधिपार भावना का अशन न था । अपन अह का, अपन ध्यकितत्व को अलग रखकर वह प्रेम करती थी । उनने राजकुमार का सममान का बहुत प्रयत्न किया, परतु राजकुमार का प्रेम वढना गया, वढता गया । यहा तक कि वह परिस्तान के वातावरण म काला बादल बनकर मडराने लगा । परिस्तान क सब लोग भयभीत हो गय—‘ह भगवान, अब क्या हागा !’

फिर क्या हुआ ?’

‘ फिर यह हुआ कि राजकुमारी ने खुवा क जगल म जाकर, खुवा के सबसे बडे वक्ष की परिश्रमा की और अपनी सहूलिया को लेकर नाचने लगी और आवाहन करन लगी कि वह उसे राजकुमार की दामता म बचा ले । खुवा के सबसे बडे वक्ष ने उसकी प्रायना मुन ली और उसे अपन अचल म आश्रय द दिया । अब राजकुमार मारा मारा फिरन लगा— राजकुमारी की खोज म । परिस्तान के लोग उस पर हसत थ परतु अब तो वह उस पर हसते भी नही । खैर, जब राजकुमारी नही मिली, तो वह भी खुवा के सबसे बडे वक्ष के पाम गया और विनती करन लगा । तब वक्ष न उस समझाया कि राजकुमारी किसी की निजी सपत्ति नही बन सकती । इसलिए उसे यह दड दिया गया कि राजकुमारी उससे छीन ली गयी ।

इम पर राजकुमार ने बडा विलाप तथा रुदन किया और अपने सच्चे प्रेम की सौगध खान लगा ।

जन म वक्ष का हृदय पसीजा और उसने राजकुमार का बता दिया कि उसन राजकुमारी को एक ओस क भाती म छिपा दिया है । जिम दिन वह राजकुमारी को ढूढ निकालगा राजकुमारी उसकी हो जायगी—सदा सदा क लिए ।

बम, उसी दिन स राजकुमार राजकुमारी की खोज म ओस के मोतिया म झाकना फिरता है । परतु परिस्तान म ओस के मोती अनगिनत हैं और

उनका जीवन बहुत थोड़ा है। वह चमकत है और फिर ताप हा जात ह। और राजकुमारी जोस क एक मोती से दूसर मोती म नृत्य करती फिरती है। और कोई उसे दख नही पाता। कोई नही जानता कि वह किस बूद, किस मानी मे छिपी है। और राजकुमार सुबह शाम उसे खाजता फिरता है और अमफल रहता है। हा, कभी-कभी वह किसी बच्चे को दिखाई द जाती है—जैस अभी तुम्ह दिखाई दी।

इतन मे राजकुमार भागता हुआ वापस आया। उसकी आखा म आसू थे। मुमन कहने लगा, “वहा तो नही है—अब मैं क्या करू ? कहा जाऊ ?”

फिर टिड्डे का सवोधित करके कहन लगा, “चला, जल्दी स चलो। धुवाँ क जगल म अभी ओस होगी।’

टिड्डे ने उमे कधे पर बिठा लिया। जब वह टिड्डे पर सवार हा गया तो मैंन राजकुमार से पूछा, “तुम्हारी राजकुमारी का क्या नाम है ?”

“मौदय।’ उसन आह भरकर कहा।

“और तुम्हारा ?”

‘इश्क’ उसन मिर झुकाकर कहा, “तुम्ह मेरा नाम जानन की क्या पढी ?”

“कुछ नही,’ मैंन कहा, ‘या ही पूछ लिया। लो यह गना।”

“नही नही,” राजकुमार न कहा, “मुझे गने स कोई दिलचस्पी नही। मुझे आग पसद है।”

‘गन का रम आग को बुझा देता है” मन मुस्कराकर कहा, “लो चसो झमे।”

टिड्डा सहसा कहकहा मारकर हसा और वातावरण म छन स लाखा बुलबुने पैदा हा गय और छन स टूट टूटकर गिरन गये जल-प्रपाता के कोलाहल मे सारा व्योम गूज उठा, धूप की नदी ऊपर ही ऊपर चढती गयी और जाकाश की छन से लगकर फध्वारे की तरह लाखा बूदा मे गिरने लगी और हर बूद म राजकुमारी का नृत्य था और वर्षा की फुहार थी और धुध का रग गहरा होता जा रहा था। और फिर अध-कार, और अधकार, और अधकार। और फिर कुछ न था—न ज्याति, न

अधकार, न धरती, न आकाश, न अनुभूति, न पान—बस शून्य, महाशून्य,
अनंत शून्य ।

शून्य और अधकार और घटिया का घीमा जीमा राग बढ़ने-बढ़ने
सारे वातावरण में भर गया । और अधचेतन इन्द्रिया फिर से चेतन होने
लगी । अध प्रकाशित वातावरण में जडाऊ स्तम्भ दृष्टिगोचर हुए । अगर
और धूप की सुगंध आने लगी । देवता की प्रतिमा के सामने एक हाथ
घटी बजाने लगा । मैंने देखा, यह मेरा ही हाथ था जो घटी बजाकर देवता
की पूजा कर रहा था । मैं एक ब्राह्मण पुजारी था और घोटी बाघे,
माथे पर तिलक लगाये मंत्र पढ़ रहा था । और मेरी निगाह देवता से भी
परे, मंदिर की छत से भी परे आकाश की जोर उड़ती चली गयी ।

मुझे पालत हुआ मैं बड़ा धर्मात्मा, साधु और विरक्त प्राणी हूँ । दिन
रात ईश्वर की महिमा का गान करने वाला, उसकी भक्ति में लीन रहने
वाला । मेरी दाढ़ी मुड़ी हुई थी । मेरा सिर भी मुड़ा हुआ था । मुड़े हुए
सिर के बीच में गाय के खुर के बराबर मोटी चोटी थी जिसमें गांठ लगी
हुई थी । मेरा हाथ में लाल थैली थी और उम थली में एक माला जिसके
मनके को मैं दिन में एक हजार एक बार घुमाना था । माला में एक सौ
एक मनके थे, दिन में चौबीस घंटे थे एक घंटे में गांठ मिनट और एक
मिनट में साठ मिनट और एक सैंकिड में एक बार गम नाम । सोते
सोते भी मेरा हाथ माला फेरता रहता, और सोते मान भी मेरे मुह में
राम राम निकलता रहता । मेरी आँखें सदैव आकाश की ओर उठी रहतीं ।
ऐसा अनुभव होता कि सोने जागने, उठने-बैठने नाचने गान, हसने बोलने,
घटी बजाने पूजा-पाठ करते मेरी ली भगवान से लगी है—‘ऐ भगवान तू
कहा है ?

किमी ने मुझसे कहा, ‘हे भगवान, मेरी पत्नी बीमार है, उस अच्छी
कर दो ।

‘जो भगवान की इच्छा ।’

‘हूँ महामा आज सटट में नौ सी आ जायें ।’

“जो भगवान की इच्छा !”

“हे महात्मा, मुझे पर रिश्वत का मुकदमा चल रहा है बचा लो !”

“जो भगवान की इच्छा !”

“हे महात्मा, मैं एक रिश्वतघोर के विरुद्ध कायवाही की है। उसे दंड दिला दो !”

“जो भगवान की इच्छा !”

मैं हर समय आकाश की ओर ताकता रहता और भगवान के चरणा में पहुँचने की कोशिश करता। मन में, आत्मा में, शरीर के रोम रोम में भगवान को प्राप्त करने की इच्छा बसी थी, उस भगवान का जा नील गगन के पीछे अपने सिंहासन पर विराजमान था। मेरी आँखें जनायास ऊपर उठ जाती। हाथ स्वतः आराधना में जुड़ जाते और कठ से एक ही राग निकलता—ह भगवान, मुझे दशन दो। मुझे अपने पास बुला ला, प्रभो !

मुझे हर समय अनुभव होता कि मैं अब उड़ा अब उड़ा। परंतु पाव अभी धरती की गदी भिंटी में फसे थे। ऐसा लगता था जैसे मैं कीचड़ में फस गया हूँ और प्रयत्न के बावजूद बाहर नहीं निकल सकता। इसीलिए बहुधा मैं व्याकुल हो उठता और मेरी आत्मा बुरी तरह खड़खड़ाने लगती। परंतु मैं निराश रहता, क्योंकि मेरी नजरें आकाश की ओर होती पर पाव धरती में गड़े हात। और मैं न उड़ सकता और न अपने भगवान तक पहुँच सकता था। यद्यपि तपस्या के तज से मेरी आत्मा इस प्रकार प्रकाशमान थी, जैसे पानी की बहुतायत से धान की धेती परंतु फिर भी मन में एक अभिलाषा थी—मेरे स्वामी, मेरे प्रभु, मुझे मिल जायें। और इसीलिए मेरी आँखें सदा ऊपर की ओर लगी रहती। बहुधा मैं सोचता करता—अगर किसी यत्न से मैं उड़कर आकाशों के परे जा पहुँचूँ, और अपने ईश्वर के चरणों में पकड़ूँ, तो क्या वे मेरी आत्मा को अस्वीकार कर देंगे—मेरी आत्मा को, जो ब्रह्म का एक अंश है।

परंतु मैं उड़ूँ कैसे !

हाय, यह ऊँचा ऊँचा आकाश ?

मंदिर में, घर में, गली में, सड़क पर, बाजार में, नदी के किनारे, कुँज

म, उद्यान में हर जगह मुझे वही न-वही नारी दिखाई दे जाती थी। परंतु मेरी तपस्या न अभी तक मुझे नारी से विमृष्ट कर रहा था। मैं नारी का एक दवी मानता था एक मा, जिसका मीन्य एक पवित्र भावना को जगाता था। जिसका स्नेह हर समय मुझे उमका पुत्र बन जान को विवश करता। और यह पवित्र भावना और यह आध्यात्मिक प्रेम, सष्टि कर्ता परमात्मा के स्वरूप का प्रतिबिम्ब था, जिसके स्नेह को एक किनारी नारी के हृदय में भी जा पहुंची थी।

और मैं नारी को देखकर आसू भरी आंखों से अपने प्यारे भगवान को देखने लगता, जो मेरी आंखा में दूर, बहुत दूर, अपन मिहामन पर विराज मान था।

मैं अपनी योज, अपनी लगन, अपनी आराधना में इतना लान रहता था कि जीवन के पच्चीस वष बीत जान पर भी मुझे नारी प्रेम का ध्यान न आया। इसीलिए मैं जूही की भाव भंगिमाओं को न समझ पाया—वह जूही जा सचमुच जूही की भाति सुंदर थी, वह जूही जो सदा श्वेत वस्त्र पहनकर आती थी, वह जूही, जो मेरे सस्कृत के श्लोक बोलत समय भी मेरे मुख की ओर ताका करती, वह जूही, जो माथा टकत समय अपन आंखा के भातिया स घटा मेरे चरणों को घोंती थी वही जूही जो घटा मंदिर की दीवारों से, ड्योढी से तगी लगी घड़ी रहती थी और अपने उस आराध्य को निहारती रहती जो ससार से विरक्त, अपनी पूजा में लीन रहता और हाथ उठाये मंदिर की छत से भी ऊपर उम अमीम शाय की आर देखता था, जिसके परे उसका परमात्मा रहता था। और जूही उसके तेजमान चेहरे की ओर देखती उसकी बलिष्ठ नगी भुजाओं की ओर देखती और फिर उसके पावों की ओर देखती जो सरगराती हुई रेशमी घोली की रगीन किनारी और सलवटों के बाहर कमल की तरह खिले नजर आत।

और जूही की आंखा स आसू जारी हो जाते।

और नौजवान पुजारी जा मैं था, उसे सात्वना देता 'धवराओ नहीं जूही, तुझे परमात्मा अवश्य मिलेंगे। हे भगवान, तरी लीला अपरपार है।'

और मेरी आँखें फिर ऊपर की ओर उठ जाती ।

परतु कभी-कभी मुझे लगता, यह ब्राह्मण मैं नहीं हूँ, कोई और है । मैं होते हुए भी नहीं हूँ । मैं भगवान के चरणों में जा गिरा । गिड़गिड़ाकर दशना की विनती करने लगा । फिर मुझे ऐसा लगा, मैं अचेत हुआ जा रहा हूँ । मुझमें हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रही । मैं देवता के चरणों में वेसुध पड़ा हूँ । एकाएक प्रकाश की एक किरण पत्थर के देवता के नेत्र से फूटी और सारा मंदिर जगमगा उठा । और प्रकाश बढ़ता गया, और आरती के शब्द घड़ियाल बजने लगे, और उनके शोर ने मुझे अपनी लहरो पर उठा लिया और उछालकर आकाश की ओर फेंक दिया । 'अहा—अब मैं अतिरिक्त में उड़ा जा रहा था—हल्का फुल्का, सूक्ष्म । चारा आर नीला आकाश था—और कुछ न था । ऊपर नीचे सब ओर नीलिमा । एक गहरी, अनंत, असीम नीलिमा में ऊपर-ही ऊपर उड़ता चला गया । फिर भी यह नीलिमा समाप्त होने में नहीं आयी । फिर मुझे यह भी ज्ञात नहीं रहा कि मैं ऊपर उड़ा जा रहा हूँ या नीचे धसा जा रहा हूँ । यह आकाश है या अंधा कुआ है, जिसमें नीलिमा के अतिरिक्त कुछ नहीं है । दिन हफ्ते, महीने, वर्ष बीतते गए और मैं उस नीलिमा के भवर में चक्कर काटता रहा । अब मैं ऊपर का जोर देखता तो वही नीलिमा जोर गहरी होती दिखाई पड़ती । अगर नीचे देखता तो बिलकुल अपने पाँव तले मक्खड़ी के लाखों जाल पुरे दिखायी पड़ते । ये मक्खड़ियाँ मुझे जीवित खा जायेंगी—इसलिए मैं उनके जालों से ऊपर ही ऊपर उड़ता रहता । परतु य जालों मेरे पाँव से जरा ही नीचे रहते । उनसे ऊपर मैं नहीं उठ पाता । ऐसा लगता कि मैं अब गिरा, अब गिरा । मेरे लिए नहीं ऊपर रास्ता था, नहीं नीचे । मैं त्रिशाकु की भाँति बीच में लटक गया था । ऊपर नीला शून्य था, तो नीचे मक्खड़ियों के जाने और मैं बीच में चमगादड़ की तरह लटका रह गया था । एकाएक मुझे अपने अंदर का विरोधी आवाज़ें, एक-दूसरे से लड़ती हुई सुनाई दी । ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था । मुझे लगा, जैसे मेरे व्यक्तित्व के दो टुकड़े हो गये हैं । दोनों के सिर अलग-अलग हैं, परतु घड़, जुड़वा बच्चों की भाँति, जुड़े हैं । दोनों ब्राह्मण अब मेरे अंदर लड़ने लगे । परतु क्या दोनों ब्राह्मण थे, विश्वास नहीं होता, क्योंकि एक की शक्ति तो इतनी

भयानक थी, मनहूम थी कि उसे देखकर मुझे अपने स घिन आन लगी । निश्चय ही उनमें से एक राक्षस था और दूसरा ब्राह्मण, एक जकिल, दूसरा हाइड । पर ये—दोनों मेरे ही अंश । मैं भी दानो ही के अस्तित्व में जीविन था । य दोना हर समय घाद विवाद करत रहते, तू-तू मैं मैं करत रहत गाली गतौच करत और गुत्थम गुत्था हो जात । य मेरे उस अवस्था को पहुचन के लिए एक दूसरे को दापी बताते । अत मैंने निणय किया कि यदि इस अतद्धद से मुक्ति पाना ही है तो मैं मकड़ी के जाले में फस जाऊँ । शायद इस जाल को तोडकर मैं धरती की ओर चला जाऊँ और धरती मुझे अपनी ओर खींच ले । भवर स निकलन का एकमात्र तरीका यही है कि आदमी भवर के केंद्र में सबसे नीचे चला जाय और फिर अपन का भवर की लहरा का सौप दे । मुझे मालूम है कि जब मैंने भवर में गोता लगाये, ता मैं बहुत अधिक आशावादी न था । मेरे पाव जाल से टकराय और उसे तोडकर नीचे गिरत गय । एकाएक मैंने देखा—मैं पीपल के एक पड की ऊपर की टहनिया पर आ रहा हूँ । मुझे नीचे आत देखकर एक कौआ जार जोर स कहकह लगान लगा । फिर मैंने देखा मेरे व्यक्तित्व के निकट दानो भाग वही पीपल की टहनियो पर लटक रहे है और मैं मरिचक गली में खडा हूँ ।

इतने में जूही आयी और निकट खडी हा गयी । मन पूछा, "तुम क्या चाहती हो ?"

वह पीपल के पड की ओर सकेत करके बोली, "ये दोना ब्राह्मण कब तक लडत रहेगे ?"

मैं जो अब उन दानो से अलग था, और शायद नहीं भी था, क्याकि ये दोना अब भी मुझे अपना जापा ही प्रतीत हाते थे अब उनसे पूछ-ताछ करन गया ।

मैंने उनसे पूछा "तुम क्या चाहत हो ?"

एक ने कहा ' मैं धरती पर उतरना चाहता हूँ ।'

दूसरे ने कहा मैं त्रिशकु बनकर अधर में रहना चाहता हूँ ।

पहले ने कहा 'मुझे जूही के चरणा की धूल ला दो और मेरे मस्तक से लगा दो ।'

दूमर न कहा, "मुझे माक्ष चाहिए।"

पहल ने कहा "मैं भूषा हू। मैं भूषा हू।"

और व दोनो लड़ने लगे। एक दूमरे को खाने लगे। और पहला चिल्लाने लगा, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मुझे धरती पर अ न दो।"

मैं भागा-भागा जूही के पास गया और उसके पाव की धूल चुटकी म ली और पीपल की ऊपरी टहनी पर पहुचकर उन दोना पर छिडक दी। एकाएक मुझे घटका-सा लगा और पीपल क पड की सब टहनिया टूटती गयी, और मैं धम स धरती पर आ गिरा।

वातावरण म एक कहकहा गूजा और व दाना एक दूमर म लीन होत दिखाई दिये। एसा लगा जैसे एक साप ने दूसर साप को खा लिया है। न मानूम राक्षस ने ब्राह्मण का हडप कर लिया था या ब्राह्मण न राक्षस का। किंतु मन उन दोना को जोर अपन आपका एक अदभुत तरीके स एक होत पाया। अग जग दु ख रहा था और मंदिर की चारदीवारी थी और मैं मंदिर के फश पर आघा पडा था। जोर जूही मर पास थी।

एकाएक वह पुजारी, जा मैं था, उठ बठा और जूही स पूछन लगा, "तुम कौन हो?"

"मैं एक विधवा हू।"

"मक्षसे विवाह करागी?"

जूही ने कहा "मैं पापिन हू, तुम पुण्यात्मा हा। मुझे हप न दो, विपाद दे दो।"

ब्राह्मण न उसका हाथ पकडकर कहा "आआ, बाहर चलें। अब यह घर उजड चुका है। इस मंदिर म अब कोद नहीं है—ठहरो, अपन घरणो की धूल मुझे दा। यह धूल पाप को पुण्य म परिणत करती है।"

और वे चलन लग।

और मंदिर भी उनके साथ साथ चलता गया। दवता के होठो पर प्रकाश की किरण फलती गयी और आगन विस्तत होत-होत, लहलहात सब आडे तिरछे खेता म बदल गया। और उनम गेहू के सुनहरी पौध लहलहाने लग। पुजारी न फिर निमल आकाश की आर दखा और उस एव बार फिर प्रतीत हुआ कि उसके पाव फिर धरती स उठ रहे है। और

उसने घबराकर फिर जूही का हाथ पकड़ लिया। और वह फिर धरती पर था। किंतु वे दाना एक दूसरे में हाथ म-हाय दिय, बघ्रे-म बघा मिताने, चल गये—क्षितिज की ओर—भित्तिज से पर।

मैं सपना की घाटी में गुजरकर विवेक के वास्तविक समार में वारम आ रहा था कि भाग में एक पानी मिल गया। बाल, "क्या समये?"

मैंने उस बच्चे की तरह जिसे नया पाठ मिला हा, रुकत रुकत कहा, 'यही कि परिस्तान इस समार में है और—भगवान भी इन समार में है और आकाश की ओर धार धार तानना मूखता है।

"शाबाश।' उहान थपकी दकर कहा, "और प्रेम?"

मैंने कहा 'प्रेम में अधिकार भाटना नहीं हाती, दासता नहीं होनी, बंधन नहीं हाता, मोत नहीं होती, और जब काइ प्रेम को दास, विघबा या मत बनान का दुस्माहस करता है ता मोदय इस समार में ता क्या, परिस्तान में भी नहीं रटता और जोम की बूदा में छिप जाता है।'

शाबाश। यह कहकर व रास्त से हट गया। बाल, 'अब तुम जा सकत हो।

परतु मैं चलत चलत रुक गया। मन में एक प्रश्न उठा। पूछ लिया, 'परतु एक उलझन का तो समाधान कीजिए। मेरी समझ में यह नहीं आता कि इस सत्य के उपरांत भी राजकुमार की खोज क्या जारी है अब तक?'

वे हसकर कहने लग, 'अच्छा है, तुम प्रेम के वास्तविक रूप से अनभिन्न रहो। जिस दिन तुम इस भी जान लोगे, तुम्हें जिंदा रहने की जरूरत न रहेगी।'

घर

दिन को बबइ जाना पहचाना शहर मालूम होता है। उसकी गतिविधि, उसकी दौड धूप, उसकी चहल-पहल और उसके खेल-समाशे आखा मे रसे-बम मालूम होत हैं। परतु रात्रि के समय बबई मे सफर करना, और वह भी बारह घजे के बाद एसा है जेमे अनजान अजनवी समुद्र मे नाव खेना। पता नही चलता कि कहा पानी गहरा है, और कहा चट्टाने छिपी हुई हैं। कहा भयानक भवर पडत है, और कहा लहरें इधर मे उधर को घूम जानी हैं। देखन मे लगता है यह एक सीधा रास्ता है। यूनिवर्सिटी घाउड के किनारे से हाकर बडे तार घर को जाता है। उसके किनार एक अग्रेज विद्वान का वुत है, जिसके पास जामुन के दो पड खडे ह। परतु रात के समय यहा जेब कतरो की एक टोली होती है। आगे चलिए तो पारसिया का एक कुआ है। कहते हैं कि जब पारसी लोग ईरान से भागकर भारत क तट पर आय थे, तो बबई मे सबसे पहले उहोने इमी कुए का पानी पिया था। इस कारण इस कुए का पानी अब एक एतिहासिक और धार्मिक महत्त्व प्राप्त कर चुका है। इस कुए के चारो ओर अब एक मजबूत लोहे का जगला है। कुए के ऊपर एक ऊंची ककरीट की इमारत है। चांग ओर रोगनकी हुई बेंबें बिछी हुई हैं। कुए के पास एक जालीदार आला है, जिसमे बहुत से दीप जलने रहते हैं। इन दीपो का प्रकाश आले के बाहर लटके हुए फूतो के हारो से छन छनकर आता है। दिन का पारसी लोग बेंचा पर बठने हैं और कुए का पानी पीते हैं और भगवान की प्रायना मे सीन नजर

आते हैं। रात को इस कुए की छज्जे वाली इमारत व पीछे रामधन फट वाला सोता है और गुलाम अब्बास सिल्क क रुमाल और औरता की अगिया बचन वाला और यूसुफ सिधी फाउटन पेन बचने वाला और नयू चनेवाला और उसका प्रतिद्वंद्वी पंडित मुरलीधर।

प्रतिद्वंद्वी का नाम आत ही मैं चौका। गार और मैं इस रास्ते स जा रह थे। मैं फलोरा फाउटन जा रहा था, गोर का बड़े तार घर म बान था। इसलिए हम दोनो साथ साथ चल रहे थे और गोरे मुखे आम पाम का भूगोल समझा रहा था। 'प्रतिद्वंद्वी क्या?' मैंन गोर स पूछा, 'क्या दोना के बीच कोई औरत थी ?

नही — गोर ठाडी खुजलात हुए हसन लगा, 'दाना का सदाई औरत पर नही सतरी पर होती है। बात यह है कि कुए व पास जा चन वाला बठता है, उसकी काफी विनी होती है। दानो यहा चन बचत हैं और दाना चाहत है कि दोनो म से केवल एक यहा पर बंठे। इसलिए दाना चौक के सतरी का अपन अपन ढग से रिश्वत देत है। जिस दिन नयू अधिन पन दे दता है, उस दिन सतरी पंडित मुरलीधर को कुए पर स उठाकर गोखन के बुत के नीच बिठा दता है, जहा कबूतर दिन रात बीट करते रहत हैं। जिस दिन पंडित मुरलीधर का दाव चढ जाता है उस दिन नयू को कुए स हटाकर गोखल के बुत के नीच बिठा दिया जाता है। रात को दाना की दा-नीन घट लडाई होती रहती है और सदा जित्र उसी सतरी का होता है। इनकी लडाई बडी मनारजक होती है। ये नित-नयी गालियो का आविष्कार करत ह। चुनाचे गालियो की शा-दावनी म विशेष रुचि रखन वाल भापा विशपन बहुत दूर-दूर स इम दृश्य को दखन जात है। कभी-कभी बाच-बाच म राककर कभी एक फो, कभी दूसर का बड़ावा दत रहत है जिमम समा बघा रहता है। रात के बारह बजे क बाद यहा सचमुच बडी रौनक हाती है। परतु जिस दिन स यूसुफ सिधी की हत्या हुई है, उमी दिन स कुए का यह पिछवाटा उजड गया।

'यूसुफ सिधी की हत्या क्या हुई?' मैंन गार की बांह पकडकर उस ठहरा लिया। हम सोग उस समय ठीक कुए वाली इमारत क पास थ। वहा पर इस समय कोई नहीं सो रहा था। जगह बिलकुल छाता था।

गोरे के वाले हाठा पर एक कडवी सी मुस्कराहट आयी। उसने धूमकर हाकी ग्राउंड के पार उस नये रेस्तरा की ओर दखा, जिसे आल इडिया बीमम का फरेस के कायकर्ताआ ने सस्ता खाना और सस्ती चाय उपलब्ध बन के उद्देश्य से खाला था। फिर वह लोह के जगले में पीठ लगाकर खड़ा हो गया। उसने अपनी निक्कर की जेब से बीडी निकालकर सुलगायी। एक मुने दी। फिर मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोला, "घार, कभी तूने औरता के होटल में खाना खाया है?"

"हां।"

"कैसा होता है?"

"पहली बात ना यह है कि वह औरतो का पकाया हुआ नहीं होता। दूसरी बात यह कि फीका होता है, और मैं चटपटा, मसालेदार खाना खाने के हक म दू। तीसरी बात यह है कि उस समय तो पेट भर जाता है, पर थोड़ी देर बाद फिर भूख चमक उठती है। ऐसा लगता है जैसे कुछ खाया हो नहीं था, जम किसी ने भूख के साथ छल किया था।"

"विलगुल ठीक कहत हो," गोर ने मेरे हाथ पर हाथ मारकर कहा, "इंरोज सिनमा का पटान भी मुझे यही कहता था। और फिर आठ आन खाने के लत हैं। इसमें तो हमारी दो आन की मूमफली अच्छी। पेट में बस जरा-सा दद ही तो करती है।"

"पर वह हत्या।"

गोरे ने जार से कश लगाया। और बीडी को जलाकर आधा कर दिया। फिर मुह से धुआ निकानत हुए, धीरे धीरे कहने लगा—जस किसी बड़ी लबी यात्रा की, हजारों वष पुरानों, बथा कह रहा हा।

"वह सामन जो रेस्तरा है, उसमें एक लडकी बनन माफ करने का काम करती थी।"

"लडकी सुदर थी?" मैं पूछा।

"नहीं, गाली जवान थी। मगर साली क्या जवान थी—मैं खुद दो बार चाय पीने के बहान उसे देखने गया। रामधन फूटवाने की उस पर नजर थी।"

"यह रामधन फूटवाला कौन था?"

'माले को गुमने नहीं दिया ? अर, कितनी ही बार दिया था। साला उस पारसी कुए के पास फल बेचता था, जहाँ नरयू और मुरलीधर चले बेचते थे। उनके बीच में उनकी साइकिल-गाड़ी होती थी, जिस पर वह फट सजाकर बचता था—कश्मीर की नाशपातिया, बाबुल के अनार, चमत्त के अमूर। यह बेला, चीकू धीकू नहीं बचता था। साला बहुत कमाना था। और रिश्वत भी बहुत देता था, यह जगह भी बहुत मीके की है। चबाए के रास्ते पर जब बलक लाग दफ्तर से छूटत है, तो हजारों की सख्या में इस फुट पाथ पर उमकी साइकिल-गाड़ी के पास से गुजरत है। साल का आवाज भी नहीं दनी पडती थी। लोग आप ही रुककर उससे सींग मोल लेत लगत।

'हा, तो यह था—रामधन। उमका चेहरा आडू की तरह चमकता था। मिर घुटा हुआ था, जिस पर चुटिया सदा खड़ी रखता था। कल्ल म सदा पान रहता था। साले न थूक थूककर गाखल महाराज का चबूतरा गदा कर दिया है। किसी समय जाकर देखना। वही चाहने वाला था उस लडकी का। मगर साला बड़ा कजूस था। जब शाम को लडकी अपन काम-काज स निबटकर उधर उसके पाम आती, तो साला उसे कभी एक आडू या एक सब देता। बम, एक फल। और कभी तो वह उसम पम ही उधार माग लेता था। कहता, 'आज कमाई नहीं हुई।' बड़ा पक्का बदमाश था—एक नबर का। वह लडकी पहले तो अपन होस्टल के बरामद म सोती थी, फिर इधर फूट वाले की गाड़ी के साथ अपना बोरिया बिछाकर सात लगी और रोज रामधन स एक खाली लेने के लिए कहती। और रामधन उससे कहता कि खाली तो मेरे पास है उस पर ताला लगा हुआ है, और उमकी चाबी मेरे बडे भाई के पास है, जा अपने घर भेरठ गया हुआ है। जब वह लोटकर आयगा, अपने का खाली मिल जायेगी। फिर वह तुम्हारा घर होगा। लडकी घर का नाम सुनकर बडी हर्षो मन होती। इसी तरह तीन चार छ महीन बीत गये। रामधन का बड़ा भाई न आया, न चाबी मिली न खाली। कही पर खोली होती तो मिलती। वह साला ता उसे चकमा दे रहा था। एक दिन क्या हुआ कि "

'क्या हुआ ?

“वह लडकी न आयी।”

“नही आयी?”

“हा, रामधन रात के तीन बजे तक बाट देखता रहा। पर वह लडकी न आयी। यह साला बहुत चकराया। अपन पुलिस के दोस्तो को लेकर इधर-उधर घूमने लगा। दस बारह पशा कराने वाला के घर भी देख डाले। लडकी कही न मिली। लडकी मुदह को सौटी और बहुत पिय हुए थी।

“हा, बहुत पिय हुए थी और उसके मुह से बदबू आ रही थी। और वह लगभग ब मुध थी। रामधन न उसे बहुत पीटा “बता साली, किधर मर गयी थी?”

लडकी वाली, “एक मद के साथ गयी थी। वह कहता था—‘मैं तुझे अपने घर म रखूंगा’।”

“फिर साली उमक घर म क्या नहीं रही”—रामधन ने उस लात मारत हुए कहा, “यहा क्यों आ गयी?”

लडकी ने कहा, “वह मुझे अपने घर नहीं ल गया। वह मुझे एक होटल म ले गया।”

रामधन ने उसके सिर क बाल पकडकर उसे नीचे गिरा लिया और उसकी पीठ पर दा चार मुक्के जा म मार। लेकिन लडकी का जसे मालूम ही न था कि उसके साथ क्या व्यवहार किया जा रहा है। वह उसी शराब के नशे मे कह रही थी, “घर नहीं होटल, होटल नहीं बरामदा, बरामदा नहीं साइकिल गाडी। ह भगवान मुझे छाटा मा एक घर ले दो, एक नहा मुना सा घर, बिलकुल इतना छोटा घर, जितनी दूर तक मेरी बाह फल सकती हैं।”

फिर रामधन ने उस और पीटा, और पीटा, परतु लडकी मार खाने के बाद भी होश मे न आयी। उसी बे मुधी की अवस्था मे सो गयी और दापहरकी उठकर चुपचाप काम करन चली गयी, जसे कुछ हुआ ही नहीं।”

“फिर?”

‘फिर इस घटना के दा गिन बाद यूसुफ सिंधी इस फुटपाथ पर आ गया। यूसुफ को रामधन फ्रूटवाल की बगल म जगह मिली। वह वहा अपना कपडा बिछाकर सिल्क के रमाल बेचता था। कभी फाउटन पेन,

कभी जुराये, कभी लिपन ता कागज—बड़ा चालाक था। दुबला-पंसा,
 गोर रंग का लडका था। आँखें बड़ी नजी में इधर-उधर घूमती थीं।
 बड़ी जल्दी जल्दी बातें करता था। दूगर आदमी का गाँव का मोता
 ही न देता था। बड़ी जल्दी ही उमन यहाँ अपना रंग जमा लिया।
 पता नहीं, गाँव यहाँ गंभीरों निकालकर लाता था, बाजार स सदा
 मस्ता भाव हाता था। धडाधड उमकी सिन्धी हानी थी। इस फुट-पाय
 पर मैं बड़े बड़े तज बनन बान न्भ, पर यूमुफ सिंधी का जवाब न
 था। बस दो तीन घंटे दुकानदारी करता था। एक ता सुबह दस से
 ग्यारह तक द्मर शाम का चार म छ तक। बस, सारा मान उत्तम
 कर डालता था। फिर दिन भर बया करता था, हमका नहा मानूम।
 उस सान क पास भी मान का जगह न थी। वह भी रामधन के पास,
 इस कुए की दमारत क पीछे मोन लगा। धीर धीर उमन इस लडकी
 स मित्रता गुठ कर दिया। एक बार उम मित्र का न्माल दिया, फिर नौ
 गज की एक सूती साडी लाकर ली। माला था बड़ा फिजूल खर्च। रामधन
 की तरह कजूस न था। बहुत जल्दी उमन लडकी का अपनी ओर कर लिया।
 पर ईमान की बान कहता हूँ, यूमुफ उम लडकी क लिए ही था। बानता
 था मैं तुमम गान्गी करूँगा तरे लिए एक खाली लूगा, वहा एक रानी की
 तरह रखूँगा। अगर वह जिदा रहना ता वह सब कुछ करता। मगर
 बचारा मारा गया। जिन दिन सौ न्यय दर परल म एक खाली ली,
 उसी रान मारा गया। अगन दिन सुबह क अपनी खाली म जाने बान थे,
 जसा कि नत्थू चनेवाल न पुलिम म बयान दिया। व लोग उस रात बड़ी
 दर तक बान करत रह। दर तक धीमे धीमे मुरा म फिल्मी प्रेम गीत गाते
 रह। जमे उम रात सचमुच उनका ब्याह हो रहा हो। छ महीन की मेहनत
 के बाद यूमुफ न परेल म खानी ली थी। उस रात वह हाटल स बहुत मा
 खाना लाया था जिन लडकी, यूमुफ और नत्थू चनेवाल न मिलकर
 खाया। और मुरली ता पठिन था। इसलिए उमन नहीं खाया। और राम
 धन न तो कई महीना म वहा सोना छोड लिया था। अब वह अपनी
 माइकिल गाडी को गाँव के बून के पास रखता था और वही मोता था।
 जब कभी यूमुफ सिंधी मे नजर मिलता धूरकर अपनी चोटी को बल देने

लगता। मूछें तो साल के थो ही नहीं, कि उह बल देता मगर सिन्हे
 कुछ न कहता था। एक बार यहा तक हुआ कि यूसुफ 'न' उस लडकी क
 रामधन की गाडी स फल खरीदकर दिये। रामधन ने चुपचाप फल
 दिये। मुह से कुछ न बोला। वही बातें करन करते यूसुफ ने लडकी
 पूछा, "आज कौन सा सिनेमा देखेग?" हा यह बात तो मैं भूल गया
 रामधन लडकी को कभी सिनेमा न ले गया था। मगर यूसुफ ने तो नती
 लडकी का कितनी बार दिखाया था। उस रात का भी, जब वे सुबह
 अपनी खाली म जान वाले थे, यूसुफ उसे सिनेमा ले गण था। सिनेमा
 जान के पहल बडे गव से लडकी की ओर देखकर कहा था— देखा नत्यू, मैं
 यूसुफ हू, यह मेरी जुलखा है। सिनेमा स आकर दोना वही नत्यू क पास सा
 गय। नत्यू कहता है, उसन उह सिनेमा स लौटत समय नही देखा था।
 एकाएक आधी रान को उसकी नीद खुल गयी थी। लडकी चिल्ला रही थी
 और यूसुफ सिंधी का मिर धड म अलग उसके सामन पडा था। और सारी
 घरती जून म भरी थी।

"रामधन न मारा?" मैं पूछा।

गोरे न बीडी का कश लगाया, मगर बीडी चुन चुकी थी। उसन
 बाडी को घरती पर फेंककर मसल दिया। बोला मान को फासी होनी
 चाहिए। आआ, जाग चल।

हम दोना चुपचाप जगल के साथ साथ तार घर की आर बढ़त गय।
 फुट पाय पर चढकर एक पड आता है। उसके तने क नीचे एक औरत
 मायी पडी थी। गोरे न उसे देखा और फिर अपन पाम बुलाकर कहा,
 'देख लो, यह वही लडकी है। जब औरता के हाटन से निशाली जा
 चुकी है। कितन ही दिन हवालात म रही। कितने ही दिन जान बहा-बहा
 पागला की तरह घूमती रही। अब फिर यही आ गमी है। पर अब इसका
 निमाग ठीक नही है। यह दिन भर इस पड के नीचे बँठी उम कुए की ओर
 देखती रहती है जहा कभी यूसुफ सिंधी की हत्या हुई थी। इस जगह की
 घरती खादन लग जाती है। और जब लोग हमकर पूछन हैं, "पगली, तू
 क्या बूढ़ रही है?" तो चिल्लाकर कहती है कि 'मैं अपना घर बूढ़ रही
 हू।"

पट की काली छाया में वह काली लडकी सोयी पड़ी थी—छाया के तले एक गहरी छाया। उसके काले सूखे उलझे हुए बाल, उसके माथ और उसकी आंखों को छिपाये हुए थे। उसकी टांगें घुटनों तक नहीं थीं। पटी हुई साड़ी कमर पर उडसी हुई थी। और उसमें उसने कोई भारी बस्तु छिपाकर रखा रखा था।

मैं गोरे से पूछा, “इस साड़ी में क्या बांध रखा है? रोटी?”

नहीं, पत्थर। यह इधर उधर से पत्थर उठाकर लाता है। फिर वह कुछ के पानी से नहलाती है। और जब नोग पूछने हैं, “पगली, यह क्या कर रही है?” तो कहती है, “दखत नहीं हो—मैं अपने बट को नहीं रही हू। नहला घुनाकर मैं उस दूध पिलाऊंगी। और फिर उस स्कूल भेजूंगी।”

इस समय उस लडकी के दोनों हाथ खाली थे। उसका पट नगा था। और उसके चारों ओर धूल थी। यह अच्छा है कि मैं उसकी आंखें नहीं देख सका। शायद उन आंखों के अंदर कभी न झांक सकता। इतना साहस मुझमें नहीं था। वह आखिरी यदि कोई प्रश्न कर बैठती तो मैं क्या उत्तर देता? यह स्त्री जो तुलसी के पौधे की भाँति पवित्र और पूजनीय होती, यह स्त्री जो गुलाब की टहनियों की भाँति किमी आगमन मरुप रंग मुग्ध की कली महकती, यह स्त्री जो अपने जाचल की छाया में सक्ते बहारा का जन्म दे सकती थी, क्या इस समय अपनी छाती से एक पत्थर को चिमटाव घूल में कटा हुई टहनियों की भाँति पड़ी थी?

क्या?

क्या?

हवा के बेटे

बहुत समय हुआ, मैं एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें हवा के चार बेटे—पूर्वी बवंडर, पश्चिमी बवंडर, उत्तरी झंझड़ और दक्षिणी बवंडर। हवा के ये चारो बेटे एक बड़ी खोह में अपनी माँ के पास रहते थे। दिन भर ये चारो बेटे धरती और आकाश के बीच अंतरिक्ष में उछलते, कूदते कुल्ल भरते रहते और साथ ही अपनी माँ के पास आ जाते। और माँ उन्हें खाना खिलाकर अलग अलग थैला में बंद करके खोह के चारो कानों में लटकवा देती। चूँकि ये चारो बेटे नटखट थे, और खाना खाते ही लडन-भिडने लगते थे, और इस लड़ाई भिडई से दुनिया का बड़ी हानि होती थी इसलिए इनकी माँ ने इन्हें अलग अलग थैलो में बंद करने की युक्ति बूढ़ निकाली थी। उनकी माँ बड़ी विशालकाय थी। उसका अट्टहास मर्दों के बहकहकी तरह भारी और गरजदार था। जब वह अपने बेटों को डाटने के लिए अपना मुँह खान की मेज पर जोर से मारती, तो चारो झंझड़ डर के मारे अपनी कुत्तियाँ से उछल पड़ते। वह बड़ी अकखड, उग्र स्वभाव की और गरजदार सहजे में बात करने वाली औरत थी।

परंतु यह बहुत दिनों की बात है। उन दिनों मैं बच्चा था, और इस प्रकार की कहानियाँ पढ़ता था, और इनमें विश्वास रखता था। परंतु इस समय यह कहानी मुझे इसलिए याद आयी, कि उस शाम को, जिसका मैं उल्लेख कर रहा हूँ, मैं अपने एक मित्र के घर में चाय पीकर लौट रहा था। मेरे मित्र का घर मेरे घर से कोई दो मील दूर था। रास्ते में देवदार का

एक बहुत घना जंगल पडता था और गद नाले का ऊँचा पहाड़ी दर्रा था, जिस पर बारह महीने बर्फ पडी रहती थी। उस समय, बृकि सूय अस्त ही हुआ था। इसलिए पश्चिमी आकाश में उमकी लालिमा शेष थी। मेरे हाथ में एक मजबूत छडी थी। यद्यपि रास्ता बहुत कठिन था, परंतु यह मेरी आदत थी कि अपने मित्र के घर से अपने घर तक पदल सर करता आना था। इसलिए मैं उत्तरी क्षितिज में उठाकर आन बाल बादला का कुछ खयाल न किया और अपने मित्र से विदा लेकर, छडी घुमाता हुआ, अपने घर की ओर चल दिया।

पतनड के अंतिम दिन थे। किसानों ने अपनी फसलों काट ली थी और अब कहीं कहीं पहाड़ी ढलानों पर फसलों के पीत टुकड़े शेष रह गये। गहलो में चरवाहे, बजली बजाते हुए, डोर डगरो को वापस ले जा रहे थे। उनके जानवरों के गल में दही हुई घटियों की आवाज, उनके पावों से उड़ती हुई धूल में, सोने के मिक्को की खनखनाहट जैसी मृदु मालूम होती थी। हवा में एक प्राण पापक ताजगी थी। परंतु अभी शरद ऋतु की वह नहीं आयी थी जिसमें जब हवा चलती थी, तो एसा प्रतीत होता था, जैसे किसी ने नाक पर बर्फ की जगुली रख दी है।

यू ही छडी घुमाते हुए सीटी बजाते हुए, अपने आपमें बार्ने करत हुए, मैं आधा रास्ता तय करके दरवार के जंगल के पास पहुँच गया। जंगल में घुमते ही मेरी भेट डाक ढरकार में हुई उसने बताया कि वह मेरे लिए बहुत-सी डाक घर छोड़ के आया है। यह समाचार सुनकर मुझे और भी प्रसन्नता हुई क्योंकि इस पवतीय प्रदश में डाक, सप्ताह में केवल दो बार आती है। यहाँ बस्तियाँ बहुत दूर दूर हैं, और आन जान के साधन दुर्लभ। इसलिए दरस्य स्थान पर जब डाक आती है तो मानो शहरी जीवन का एक ताजा क्षाका आ जाता है और समय बड़े रामाच से कटता है। और जब डाक नहीं आती, तो आदमी यू अनुभव करता है जैसे किसी ने उस घड़ तक बड़े नात्र की बर्फ में गाड़ दिया है।

हरकारा मलाम करके अपनी घटी वाली छडी हिलाता हुआ, तज-तज कदमों में जंगल की गहराई में दृष्टि में ओझल हो गया। मैं उत्तरी आकाश की ओर दृष्टि उठायी, जिधर से काल बादल उमड़ रहे थे, और अपनी

फरगल को अच्छी तरह अपन शरीर पर लपट लिया। मैंने अपनी चात तज कर दी, क्योंकि हवा में शीतलता बढ़ती जा रही थी और उत्तरी आकाश में बादल भयंकर रूप धारण कर रहे थे, और बड़ी तजी से कड़े नाल के दरों की ओर बढ़ रहे थे। मैंने सोचा, यदि मैं इन बादलों के आने से पहले कड़े नाले को पार कर लूँ तो अच्छा हो, वरना बर्फ और जोली का सामना करना पड़ेगा।

थोड़ी देर में हवा तज चलने लगी। उसकी शीतल थपड़े में गालों को छूने लगे। और उसके तेज झोंके एक उमत्त आह्लाद से चीखत हुए, देवदार के वृक्षों में से गुजरने लगे। और इस समय मुझे एडरसन की वह कहानी याद आयी, जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया। मैंने मुस्कराकर तथा फरगल को अपन शरीर पर और अच्छी तरह लपटत हुए कहा, 'हवा का बटा, उत्तरी झक्कड़ आ रहा है।'

'गाव, गाव'—उत्तरी झक्कड़ देवदार के लटटुओं को गिराता हुआ, और उसकी टहनियाँ का तोटता शोध में गुर्राया। और फिर ओल पड़ने शुरू हो गया। ओल और वर्षा के बड़े बड़े छोट हवा के तेज फर्राट, 'तरड-तरड' देवदार के वृक्षों के गिरने की जावाजें 'धाय धाय' पानी गिरना और चट्टानों का टूटकर खड्डों में गिरना और इन सबके ऊपर उत्तरी झक्कड़ की विकराल चिंघाड़। प्रलय का दृश्य बघ गया।

थोड़ी देर में चारों ओर धुंध छा गयी। रास्ता दिखाई पड़ना बंद हो गया। कई बार मैं खड्डों में गिरते गिरते बचा। मेरे जूत भीग गए, मेरे थपड़े भीग गए, मेरा सारा शरीर भीग गया। फिर भी मैं चला जा रहा था। इस जगल में, इस तूफान से कहीं बचाव न था। दरों में भी कोई सुरक्षित स्थान न था। हाँ, अगर मैंने कड़े नाल का पार कर लिया, तो कम से कम दूसरी ओर मेरा घर होगा, दहकती अगीठी, आश्रय और आराम। इस विचार के आन ही मैंने अपनी रफ्तार और तज कर दी। यद्यपि धुंध गहरी हो रही थी, मगर रास्ता कहीं से जाना पहचाना था। मैं घर पहुँच ही जाऊँगा।

बहुत देर तक मैं धुंध में चलता रहा। धुंध गहरी होती गयी। अंधेरा बढ़ता गया। अंधेरे के साथ-साथ तूफान भी तेज होने लगा। पर न जगल परत हुआ न कड़े नाले का दर्रा दिखाई दिया।

‘वही मैं रास्ता तो नहीं भूल गया !’

बड़े नाल के दर्रे में एक विशेषता है। वहाँ पहुँचकर जोर में आवाज़ लगाओ आवाज़ गूँजकर, चार-पाँच चार घूम घूमकर वापस आना मानम होती है।

मैंने जोर में आवाज़ दी, “हा-हा आ।”

हा-हा आ। मेरी आवाज़ बारिश में भीगनी हुई, घायल पक्षी की तरह पड़पड़ती हुई, रात्रि के अधकार में खो गयी। वहीं से काई गूँज सुनाई न दी।

‘हा-हा आ’ मैं फिर जोर से चिल्लाया।

‘गाव, गाव’—उत्तर में उत्तरी झक्कड़ की चिंघाड़ आयी।

अब स्पष्ट हो गया कि मैं रास्ता भूल गया हूँ। मुझे कुछ पता न था, मैं कहा जा रहा हूँ, बिघर जा रहा हूँ। धुंध वृक्षों में भर गयी थी, झाड़ियाँ में भर गयी थी, खाई-खड्डा में भर गयी थी। और इस कारण खाई और खड्ड घाटी से समतल दिखाई पड़त थे। हर घड़ी खाई-खड्ड में गिर जान का खतरा था। हर कदम पर मौन के आचल की सरसराहट सुनाई पड़ती थी। मेरे सारे शरीर में सनसनी थी। मेरे दाँत किटकिटार रहे थे। फिर भी मैंने चलना न छोड़ा। यदि मैंने चलना भी बंद कर दिया तो ठंड के मारे मेरा रक्त भी जम जायगा।

थोड़ी देर चलने के पश्चात् मुझे सफेत् सफेत् धुंध में ऊँचा-सा द्वार दिखाई दिया। वह द्वार हवा में जैसे अधर था। उसके चारों ओर धुंध छापी हुई थी। मारे प्रसन्नता के मेरे मुख से चीख निकल गयी। दौड़कर मैं द्वार पर पहुँचा और जोर-जोर से द्वार खटखटाने लगा।

थोड़ी देर बाद द्वार खुला और एक बुढ़िया बाहर आयी। उसके हाथ में एक बड़ी लालटेन थी। उसने लालटेन उठाकर मुझे अच्छी तरह घूरा। फिर बड़े ककश स्वर में बोली, ‘क्या है?’

“मुसाफिर हूँ रास्ता भूल गया हूँ तूफान में घिर गया हूँ।”

उत्तरी झक्कड़ का एक शोका आया और द्वार जार से खुल गया। बुढ़िया ने अदर जाते हुए कहा, ‘अदर चले आओ।’

अदर गया तो एक बहुत बड़ी खोह दिखाई पड़ी—बहुत ऊँची और

बहुत गहरी। खोह की चट्टानें कई जगह से फट गयी थी, और प्राकृतिक रोशनदान से बन गये थे। इन रोशनदानों से ऊपर की चट्टाना पर जमी हुई बर्फ साफ दिखाई पड़ रही थी।

मैं खोह के इधर उधर दृष्टि दौड़ायी। कुछ जानी पहचानी-सी खोह प्रतीत हुई। एक कोने में झरना गिरकर खोह में जा रहा था। अंदर ही-अंदर बहुत सी चट्टाना पर विचित्र झाड़िया उगी हुई थी। छान से बर्फ के बड़े-बड़े झाड़ लटक रहे थे—बिल्लीर से भी अधिक सुंदर और श्वेत। खोह के बीच में एक बड़ी मेज थी और उसके सिरे पर एक भीमकाय युवक बैठा हुआ अपनी भूरी दाढ़ी खोजला रहा था। उसने सफेद समूर का एक फरगल पहन रखा था। जब वह मुस्कराता था, तो उसकी आँखें विजली की तरह चमक उठती थी, और जब वह कहकहा लगाता था तो उसके मुँह से ओल गिरते थे।

सहभा बुढ़िया ने कहा, “यह मेरा बेटा उत्तरी झक्कड़ है। अभी-अभी तुम्हारे साथ आया है।”

एकाएक मुझे सब कुछ याद आ गया। मैं हवा की खोह में था। यह मेरे सामने कुर्सी पर उत्तरी झक्कड़ बैठा हुआ मुस्करा रहा था।

‘रास्ते में मैंने तुम्हें खूब परेशान किया —उत्तरी झक्कड़ ने कहकहा लगाते हुए, बड़े प्रमत्तता भरे स्वर में कहा, ‘मैं तुम्हें एक गहरे खड्ड में फेंकने वाला था, पर मैंने तुमको छोड़ दिया—हा-हा-हा!’

“तुम इसे खड्ड में फेंक दते तो मैं तुम्हें तुरत इस थैले में बंद कर दता।”

अब मेरी दृष्टि दीवार पर लटके हुए बड़े-बड़े थैला पर गयी। चार पले थे।

मैंने बुढ़िया से पूछा, “तुम्हारे बाकी तीन लडके कहा हैं?”

बुढ़िया ने बड़ी कठोरता से कहा, “तुम्हें कैसे मालूम कि मेरे तीन बेटे और भी हैं?”

मैंने कहा, “मैं इससे पहले भी इस खोह में आ चुका हूँ।”

“कब? और कसे?”

“एक कहानी के साथ।”

बुढिया जोर से हसी।

“तुम्हारे जैसे भूख के लिए मेरे पास कोई पाचवा यला नहा है, वरना तुम्ह भी उसमे बद कर दती। इस खोह म कोई नही आ सकता। यह तो मेरे बेटे झक्कड के आने का समय था कि मैंने द्वार खोल दिया, वरना तुम्ह तो इसका द्वार भी न मिलता। चलो, कोई बात नही। तुम आ गय होत। इस बलाव के पास आ जाओ, नही तो तुम्हारी हडडी तक सर्दी म चक्क जायगी। मैं तुम्हार लिए दूध और शहद लाती हू।”

उत्तरी झक्कड न होठ चाटते हुए कहा, ‘मुझे भी भूख लगी है मा।’

“तुम्ह भी सब कुछ मिलेगा पर तुम अपन दिन भर क काम की रिपोर्ट तो दो न।”—बुढिया न मुझे दूध और शहद का भरा कटोरा दत हुए कहा।

उत्तरी झक्कड न कहा, “मैं उत्तरी ध्रुव से आ रहा हू। वहा देर तक आरोरा वाट पालिस की रोशनिया से खेलता रहा। सफे रातों का बर्फ पर दौडते देखता रहा। आइसबर्ग आधे से ज्यादा पानी म डूब हुए थे और एक समुद्री जहाज बर्फ को काटता हुआ धीर धीर आगे बढ रहा था। मैंने एक हवाई जहाज क साथ दौड का मुकाबला किया, जो पहला बार उत्तरी ध्रुव पर उडने आया था। वह तेज दौडा, तो मैं भी तब दौटा। जब वह मुझसे भी तेज दौडा तो मैं उससे भी तेज दौन। परतु अत म वह मुझसे जागे निकल गया। वह मानव का पहला जहाज था जो उत्तरी ध्रुव पर उडा और नयी दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच सबसे छोटा राम्ना मालूम किया।

बुढिया बडे ध्यान से सुन रही थी।

उत्तरी झक्कड ने कहा ‘वहा से नीचे आकर मैं साइबेरिया क टगा म चला गया और स्लजो को खींचने वाल द्रुतगामी कुत्ता क साथ दौडता रहा। टगा म नय नय शहर बसाय जा रहे थे। नय-नय कारखानों की चिमनियो से धुआं निकल रहा था और सक्डा-हजारो मील बजर सत्र म पहली बार फमल बायी जा रही थी। और साखा आग्नी कंधे सक्डा मिलाकर काम कर रहे थे।’

बुढ़िया की आँखें खुशी से चमकने लगीं। वह कुछ कहने वाली थी कि द्वार पर जोर से खटखटाहट हुई। वह मेरी आरंभ कर बोली, 'यह मरने के दक्षिणी चक्कड़ की खटखटाहट है। मैं इस खूब पहचानती हूँ। यह मेरा सबसे प्यारा और चहता बेटा है। यह दक्षिणी समुद्र पर से आता है और मेरे लिए सदा भाति भाति के उपहार लाता है।'

बुढ़िया भागी भागी द्वार की ओर गयी जहाँ उसका बेटा द्वार खटखटा रहा था। इतने में उत्तरी चक्कड़ अपनी कुर्सी से उठा और उसने दूध का भरा एक मटका उठाया और गटागट उसे खाली कर दिया। फिर उसने शहद का एक बड़ा मटका उठाया और उस भी एक क्षण में खाली कर दिया। फिर वह निश्चित हाँकर अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

इतने में द्वार पर चौंकार सुनाई पड़ी। हम दोनों न घबराकर उधर दखा। बुढ़िया घबरायी हुई, व्याकुल, अपने बेटे दक्षिणी चक्कड़ को सहारा देकर ला रही थी।

दक्षिणी चक्कड़ की आँखें नीली थीं। मस्तक चौड़ा था। सिर पर तोतल के हर पंखों की टोपी थी। गले में दक्षिणी समुद्र की द्वीपों के मूंगे और कौड़ियाँ की माला थी और लाल फूलों के हार। उसके विशाल बक्ष पर पान्पास घास उगी हुई थी। और जब वह चलता था तो उसकी पंख ध्वनि में लाखा चरागाहों के करोड़ों पशुओं के गला की घटिया का मधुर स्वर सुनाई पड़ता था।

परंतु आज उसके सिर पर तोतल के हर पंखों वाली टोपी जली हुई थी। उसके गले के हार के फूल मुग्धाय हुए थे। उसके बक्ष पर उगी हुई घास जल गयी थी। और जब वह चलता था तो उसके पंखों से मौत का राग सुनाई पड़ता था। वह धीरे धीरे अपनी माँ की बाँहों का सहारा लिए हुए मेज़ की ओर बढ़ रहा था, और मैंने देखा कि उसके शरीर के दाहिने अंग पर सब जगह आँखें ही-आँखें पड़े हुए थे।

उत्तरी चक्कड़ झटककर उठ खड़ा हुआ। उसका चहरा शोध से तपकर लाल सुख हो गया, 'तुम्हें किसने मारा है, भाई?' मैं उस पाँजे का भिर तोड़ दूँगा, उस जिंदा बर्फ में गाड़ दूँगा।'

दक्षिणी चक्कड़ हाँफता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया। माँ भागी भागी

उसके लिए दूध और शहद का भटका लायी। दूध और शहद पीकर उमका जी जरा सभला तो मा न पूछा, "मेर बट को लेकर घरती से आकाश तक आज तब कोई परास्त न कर सका। फिर बता वह कौन दुष्ट अयायी है, जिसन तर शरीर पर य धाव और आवल डाल। मैं उसका छून पी लूगी।'

दक्षिणी षक्मडे न मा को जबदस्ती कुर्मी पर विठाते हुए कहा, "आवेश मन आओ। पहल मेरी बात मुन लो। मैं दक्षिणी ध्रुव से आ रहा था। मैंन ह्वेल मछली का शिकार करने वाले जहाजों की मदद की। समुद्र मे लहरें पैदा की। लहरा मे रास्त बनाय। गम पानी की धारा को ठंडे पानी मे ल गया और फिर दोना का मिला दिया। फिर मैं दक्षिणी द्वीपा मे नारियल के बक्षा स खेलता रहा। सुन्दर स्त्रिया क हवाइयन नत्य दखता रहा। मैं बादला को उडाकर आजील के बना म ल गया और हवाना म लाखो घोडा की टापों क साथ दौडता रहा। दौडन दौस्त जब मैं थक गया और तीसरा पहर हान लगा तो मैंने घर की राह ला। होले होते चलता हुआ जब मैं नवादा के रेगिस्तान स गुजर रहा था, तो सहमा किमी ने एक गाला मेरे ऊपर फेंका। एक क्षण के लिए इतना प्रखर, प्रचंड प्रकाश फैला कि उसके सामन करोडा बिजलिया की कौध फीकी थी। अगल क्षण एसा ताप बढ़ा जैसे सूर्य पृथ्वी पर उतर आया हा। होल-हीने एक पाले, नारंगी और ऊँचे रंग का विपैला बादल उठा और मेरा गला घाटन लगा। मैं चीखता, चिल्लाता खासता नवादा रगिस्तान स भागा। लेकिन यह देखो, मेरे बदन पर फिर भी य धावले पड गय और भर सिर की खाल लाल हाकर उतरती जा रही है।

बूढी मा क नत्र सजल हा उठे। उत्तरी झक्कड भावना स विह्वल हाकर भाई की आर बढ़ा ही था कि दक्षिणी झक्कड चिल्लाया, 'मुने मत छूना, मेर पास मत आना। मा का सहारा राकर ही मैंन भूत की है। लोग कहते हैं उस विपले गोले का धुआ भी विपैला है। जिससे भी छु जाता है, उम भी गलान लगता है।'

मा कुछ कहने वाली थी कि द्वार पर फिर खटखटाहट हुई। मा मुडकर द्वार की आर जाने लगी। द्वार खुला और फिर एक चीत्कार, पहली से

भी अधिक मार्मिक और कातर सुनाई दी। हम सब द्वार की ओर दखन लग कि अब क्या आफत टूटी। मा फूट-फूटकर विलाप कर रही थी और अपना मिर पीट रही थी, और उसके पीछे पीछे उसका तीसरा बेटा पूर्वी पक्कड़, लगडाता हुआ चला आ रहा था। उमक सिर के बाल एकदम सफेद हो गये थे, और शरीर में खाल उतरकर लटक रही थी, और बाहों और टांगों से रक्त बह रहा था। और वह एक आँख से अधा हो चुका था।

पूर्वी झक्कड़ एक चीनी था। वह अपने घर में सबसे अधिक वृद्धिमान गंभीर और शांत-स्वभाव माना जाता था। उसकी रिपोर्ट, जो वह मा को सुनाता था, सबसे अधिक रोचक और विचारपूर्ण होती थी। उसने बहुत कुछ देखा सहा और अनुभव किया था—दासता और दरिद्रता, शोषण और विद्वेषी शासन लोह, कायल और चाय के लिए मानव का व्यापार। उसने बहुत में आसूँ देखे थे। बहुत सी कठिनाइयाँ झेली थीं। बहुत-सी छोटी छोटी प्रसन्नताएँ और नहीं नहीं मुस्कराहटें जैसे काम करने-करते धक जान पर जुगनू की भाँति दमकता हुआ गीत प्रेम से भरपूर एक लज्जिली दृष्टि यौवन की महक में बसा हुआ किसी का कपकपाता स्पष्ट। उसने जापान में चरी की बलिया से कहानियाँ सुनी थीं। हुआग हा के चीनी मल्लाहों से मेहनत का राग सुना था। बर्मा में धान के हर भर खता के बाला में बड़े प्रेम से उगलियाँ फेरी थीं। भारत के कारखानों में मजदूरों का इद्र धनुष से रंगीत वस्त्रों के तान-बान पूरत देखा था।

वह हर रोज़ आकर अपनी माँ को जीवन और श्रम, साधना और महनशीलता की कहानियाँ सुनाता था। उसकी मुस्कान में विशाद की एक हल्की सी धनक होती थी और उसके शरीर से लौंग, इलायची जीरा और उष्ण प्रवेशों के धने जगला में खिलन वाला अजनबी फूलों की महक आती थी। उसकी बाणी में बाती द्वीप की स्त्रियाँ के सौंदर्य की-सी कामलता थी, और जब किमी की देवफाई का जिश्र करता, तो उसकी जाग्रा में इटानशिपा के ज्वालामुखी पर्वतों का लावा चमकन लगता। यह तीसरा बेटा—पूर्वी झक्कड़, सचमुच सब बेटों से निराला अनोखा था। आज तक उस किसी ने लड़ते झगड़ते नहीं देखा था। उसने अपने को यह अवसर नहीं

दिया था कि वह उसे थैल में बद करे।

मा ने चिल्लात हुए कहा, 'यह तुम्हें हुआ क्या है? तुम तो कभी किसी से नहीं लडत थ। मैं तो तुम्हें अपना सबसे सभ्य और सहनशील बेटा कहती थी।

पूर्वी शक्कड ने कराहत हुए कहा, 'बडा दद हो रहा है, मा। एसा दद तो आज तक मैंन कभी नहीं महसूस किया। बडे-बडे दु ख उठाय है मैंन, पर एसा दु ख आज तक नहीं देखा।'

"किसन तुम्हें यद्द दु ख दिया?" उत्तरी शक्कड सहसा क्रोध म आकर मुक्का तानत हुए बाता।

"मुझे मालूम नहीं।

"कसे मालूम नहीं? तुम्हें मालूम होना चाहिए।' दक्षिणी शक्कड आग बढकर बोला।

पूर्वी शक्कड न हील हीले कहना शुरू किया, 'यह सब कुछ बहुत ही साधारण रूप म शुरू हुआ। मैं यानसी नदी के किनार किसाना को चावल के खेत तयार करत देख रहा था। फिर वहा से आकर जापान म एक चरवाहा की वासुरी का गीत सुनत लगा। फिर वहा से प्रशात महासागर चला गया। मैंन जापानी नौकाओ के वादवान खोल दिय और सहरा मे अठखेलिया करके मछलिया को बुलाने लगा। बडी सुहावनी घूप था। समुद्र इतना शात था, उसका रंग इतना निथरा निथरा नीला था कि मुझे उसकी गहरादया म रंग रंग क मूंगो के गलीच विछे देखकर नीद आत लगी। सहसा एक जार का विस्फोट हुआ। समुद्र का पानी हजार गज ऊपर को उछला। समुद्र म एक गहरा सा भवर नजर आया और ता, नारियल पुष्पा और नताआ, अबोध बालको और सुदर, कजरारनभनों वाली कामिनिया स सुसजित सुशोभित एक छाटा सा द्वीप, जिसक तटों स सौदय और श्रम की महक आती थी, सहसा मेरी आखा के सामन उत भवर क गभ म समा गया। मुझे अभी तक वहा क वासिया का हृदय-घाही चीत्कारें याद है।'

पूर्वी शक्कड न अपना सिर अपन हाथो मे ल लिया और मज पर मुक गया।

खोह में कुछ क्षणों तक पूर्ण निस्तब्धता रही। केवल धरने के गिरने की आवाज सुनाई देती रही।

कुछ क्षण पश्चात् उसने अपना सिर उठाया। उसकी एक आंख जल चुकी थी परन्तु दूसरी में एक आसू अभी तक झलक रहा था।

उसने धीरे से कहना आरंभ किया, 'दूसरे क्षण एक बहुत बड़ा बादल, गोभी के फूल की भाँति फैलता हुआ अतिरिक्त के बीच में चक्कर घाने लगा। उसका रंग पीला, नारंगी और ऊँचा था। उसमें विपला धुआँ भरा था। वह विपला धुआँ मेरा गला घाटने लगा और मैं वहाँ से चीखता-चिल्लाता भागा—कोरिया से जापान, जापान से फिलीपीन, फिलीपीन से सिंगापुर और सिंगापुर से आस्ट्रेलिया। अचानक आस्ट्रेलिया में एक रेगिस्तान में मैंने फिर वही विस्फोट देखा—वैसी ही चमक वैसा ही धाँका, वैसा ही धुआँ। यह जो तुम मेरी खाल जगह जगह में उपड़ी हुई देखत हो, यह उही विस्फोटों का परिणाम है।

सहमा दक्षिणी झक्कड़ अपने पूर्वी भाई के सामने जा पड़ा हुआ और उस अपने शरीर के घाव और आवले दिखाये।

"क्या तुम्हारे क्षेत्र में भी इसी प्रकार के विस्फोट हो रहे हैं?" पूर्वी झक्कड़ ने चौंकर पूछा।

दक्षिणी झक्कड़ ने खामोशी से अपना सिर झुका लिया। बूढ़ी माँ ने व्याकुल होकर बड़े चिंतित स्वर में कहा, "यह सत्कार को क्या हाता जा रहा है? हमने पहले भी मेरे बेटों ने मानव के युद्ध देखे हैं—जब हवा में तीर मनुमनात थे जब लोहे की गोलियाँ चीखती हुई वान के पास से गुजरती थी, जब गोले पटकर तवाही फैलाने थे। परन्तु मेरे बेटों के शरीर पर उनका कोई असर न हुआ था। अबकी धार यह कसी आग है, जो सैकड़ों मील तक सब कुछ धुलमा डालती है।"

"जब मैं सत्कार की सट्टि हुई है, हवा के बेटे आज तक घायल नहीं हुए।" उत्तरी झक्कड़ ने विस्मित स्वर में कहा।

"परन्तु अब क्या होने वाला है?"

'सब मर जायेंगे हवा के सब बेटे मर जायेंगे। हम सबने घूमकर देखा, यह हवा का चौथा बेटा, पश्चिमी झक्कड़

बोल रहा था। वह द्वार पर खड़ा, एक सुंदर सूट पहन और हाथ में हँड बैग पकड़े, हम सबकी ओर एक ध्येयपूर्ण मुस्कान के साथ देख रहा था। वह हवा के बेटे में सबसे अधिक सुंदर और सजीला था। उसकी बाणामें आकषण उसकी आंखों में नश की चमक, उसके होठों पर मुस्कान और उसके पांवों में नाच की धिरक थी। वह हिले हिले एक नयी धुन गूँथगूँथता हुआ खाट के पक्ष पर अपने नये बूटें बजाता हुआ, नाच की गत पर धिरकता हुआ हमारे पास आया। हमारे पास आकर उसने अपनी पतलून का जब से चांदी का एक प्लास्क निकाला, और उसे अपने मुँह से लगाकर गट-गट शराब पी गया। फिर एक सुगंधित रेशमी रुमाल से उसने अपना मुँह पाला और हमारी ओर देखकर नाटकीय ढंग से कहने लगा, 'सब मर जायेंगे हम सब मर जायेंगे, मानव। मानव ने मरने का निश्चय कर लिया है। वह इस युद्ध में हम सबका मारकर स्वयं मर जायेगा।'

'तुम क्या कह रहे हो, मर वच्चे? मा अत्यंत भयभीत और ध्वंसित हाकर जाती 'आज कौसी शाम आयी है? मेरा जो बेटा आ रहा है, मौत का संदेश लेकर आ रहा है।'

मंजिधर से आ रहा हूँ" पश्चिमी शकड़ उसी सहर में बानता गया। वही दिन रात मोर्चेबन्दिया हो रही है, खार्खा खोदा जा रही है, धरती के गभ में हथियारों की फक्टरिया स्थापित की जा रही है, बम-बार बार लडाकू हवाई जहाजों के लिए विशाल अड्डे बनाए जा रहे हैं कारखानों में विपली गैसों के सिलेंडर ढल रहे हैं। इस बार मानव जाति एक विस्फोट से अपने-आपका उड़ा देने वाली है। इसलिए पियो, मज से पियो, जी भर कर पियो।'

पश्चिमी शकड़ ने फिर वही चांदी का प्लास्क निकाला, और उसमें शराब उडेलकर फिर मुँह से लगा लिया।

मानव कहा, अगर हवा के बेटे मर गये, तो जिंदा कौन रहेगा?"

उत्तरी शकड़ बोला "हम धरती की क्रांति में बीज डालते हैं, फूलों में सुगंध पदा करते हैं। पहाड़ों पर जगल उगाते हैं और तरसते हुए मदाना पर वर्षा बरसाने हैं। हम शुष्क और उष्ण प्रदेशों में शीतल पवन का झोंक बनकर जाते हैं और जमा देने वाली सर्दियों को अपने साथ की आचरु

विषलान हैं। बहार हमार दम मे है, और वनस्पति का अस्तित्व हमारी सास से है। गटी का खमीर और अगूर की शराब हमार प्रभाव से है। जब कोई गिडगरी व नीचे घडा हाकर अपनी प्रेयमी के लिए वायलिन बजाता है, तो वायलिन के उस राग का हम उसकी प्रेयमी के वाना तक पहुँचात है। इसलिए रागिनी का अस्तिव हमार दम मे है और प्रेम के प्राण हमार दम से है। और मानव हमम इम प्रकार रहता है, जैसे मछली जल मे। इमलिए अगर उमन हम विष देगर मार डाला तो स्वयं भी एक क्षण जीवित न रह सकेगा।”

अब हवा व चारा बेट मरी ओर देख रह थे।

मा बोली, “हम तो हवा है, पर तुम मानव हो। तुम क्या कहत हो ? इस विपत्ति के टालन का उपाय क्या है ?”

“कोई उपाय नहीं, कोई उपचार नहीं। हम सब मर जायेंगे।’ पश्चिमी शक्कड शराब व नश म सहकर वाला।

उसकी मा न श्राध म उमका घूरा और वाली, “इसके बाद भी अगर तुमन अपनी बक्वाम बद न की तो मैं तुम्ह धैल म बद कर दूगी।”

पश्चिमी शक्कड न अपन हाठा पर जगुली रखकर कहा ‘शिशु। बहुत अच्छा मा, मरी अच्छी मा, अब मैं कुछ नहीं कहूंगा।’

अब हवा के चारा बेट मेरी ओर देख रह थे।

मैं अपनी कुर्मी पर बड़ी विकलता म बसमसाया। जत म मुझे बालना ही पडा।

मन कहा, “मैं अधिक कुछ नहीं जानता। परतु विद्वाना और जानी पुरुषा स सुना है कि इस धरती और आकाश के बीच म कही स्वर्ग है। उसके अदर एक वृक्ष है। यह पान का वृक्ष है।’

“वही पेड न, जिसका फल आदम न खाया था और फलस्वरूप स्वर्ग न निकाना गया था ?’

‘हा ! अगर तुम मुझे वहा ल चला, ता शायद उस वक्ष स इम सकट न बचन का कोई उपाय मालूम हो सक।”

“तो मू कहा कि तुम फिर उस व्रजित वक्ष का फल खाने पर तुले हुए हो।” दक्षिणी शक्कड न मेरा ओर गहरी दष्टि से देखत हुए कहा।

“कोइ हज नही है वरिक् मैं तो सम्यता हू कि मानव की महानता इसी मे निहित है।”

“पागल हुए हा ? मदा के लिए नरक म चोक दिये जाआगे।”

“इमकी तुम चिता न करो। केवन मुचे वहा ले जाआ। फिर मैं सब देख लूगा।”

उत्तरी बक्कड न अपनी भा की आग दखा। मा ने धीरे स अनुमति म सिर हिलाया। कहने लगी ‘यह इमके जीवन मरण का भी ता सवाल है। तुम इसे ल जाआ।’

दूमरी सुवह उत्तरी बक्कड ने मुचे अपन कधे पर बिठाया और मदानो, जगला, रगिस्ताना और पवता के ऊपर उडन लगा। यहा से समुद्र, ताल और नटिया चाप्ती की लकीरें निखाइ पडती थी। हम लाग हजारों मील ऊपर ही ऊपर चल जा रह य।

“क्या स्वग आकाश म ह ?”

नही वह धरता क भीतर है। परतु उसका पान बहुत कम लागा का है कयोकि उसका द्वार बहुत ऊचा है। उमक द्वार पर एक पक्षी का पहरा ह। इस पक्षी का एक पख जीवन जोर दूमरा पख मत्यु है। उम द्वार की आधी मेहराव बफ की बनी हुइ है और आधी धूप की। उस द्वार क दो पट हैं—एक दिन का दूमरा रात का। यह द्वार बडा ही विचित्र है। जब मनुष्य उसम म गुजरता है ता यू मालूम हाता है जम मौत क मुह म म गुजर रहा हो और जीवन की ओर जा रहा हा।’

मैंन कहा ‘मुचे पान का बन्ध दखने की बडी चाह है।’

उत्तरी बक्कड न कहा दखन म यह बक्ष खास विचित्र नही है। यह एक भीघा-साग बक्ष है पर बहुत ऊचा। इमका तना लबा और स्पहला है। सार तन पर कहा काद टहनी नही, जिमका महारा लकर मनुष्य इम पर चढ सक। बस दढ निश्चय जोर निरतर परिश्रम से इस पर चढना पडता है। चाटी क बिलकुल ऊपर जाकर इम बन्ध म एक टहनी फूटी है। इम टहनी के ऊपर केवल एउ पत्ता लगा हुआ है। यही वह बजिन फल है।’

“मुझे ले चलो, तुरत वहा ले चलो।” मैं अधीर हाकर बोला।

“अब हम अपनी मजिल के निकट आ रह हैं” — इतना कहकर उत्तरी झक्झक ने वादलो मे गोता मारा। और मुझे सुनाई पडा जैसे चारा ओर आगन बाजे बज रह ह। मैंने महसूस किया जैसे हल्की-हल्की सुगंध चारो ओर फैल रही है। घप और कपूर का घुआ चारा ओर स मेरी चेतना पर छाता जा रहा है। मेरी आंखें आप ही आप बंद होने लगी। थोड़ी देर बाद जब मेरी आंखें खुली तो मैंने अपने को स्वर्ग के उद्यान में पाया।

यहा जितने फूल थे, सबके आंखें थी। वे तितलिया की भांति अपनी टहनिया मे उड़ सकत थे, इसलिए उह तो तोड़न की आवश्यकता न पडती थी। यहा जितने पशु थे वे वक्षा स फलो की भांति लग हुए थे। यह मोर का वक्ष था। इसका हर पत्ता मोर का पख था। यह कोयल का वक्ष था, इसका हर पत्ता कोयल की भांति चहचहाता था। यह बदर का वक्ष था, इसका हर पत्ता बर की भांति एक टहनी से दूसरी टहनी पर उछलता कूदता फिरता था। यहा हर सुगंध का रंग था और यहा की परिया सुगंध के रंगीन वस्त्रा में लिपटी फिरती थी। उनका शरीर बिल्लो की भांति पारदर्शी थे।

परिया की रानी मेर पाम जायी। वाली “तुम ज्ञान का वक्ष देखना चाहते हो?”

‘ हा ’— मैंने मिर झिंझाकर उत्तर दिया।

“ज्ञान का वक्ष देखने का एक दंड होता है। तुम उस भागन का तैयार हो?”

“हा, वह दंड क्या है?”

“तुम्ह प्रेम त्यागना हागा।’

“त्याग दूगा।”

“विलास?”

“वह भी त्याग दूगा।’

‘ ध्यमन?’

“सब त्याग दूगा।

“देखो, ज्ञान के वक्ष पर चढ़ने चढ़त तुम्हारे वस्त्र तार तार हो जायेंगे

तुम्हारा शरीर काटा स छिन्न जायगा, तुम्हारी हृदयलिया और तुम्हारा तलवा न रक्त बहन लगगा । '

काई चिंता नहीं ।

तुम्हारे लिए दिन नहीं हागा, और रात नहीं होगी । तुम न धूप म बैठ सकाग न छाव म, न राग दख सकोग, न नृत्य दख सकाग । "

मुये सब कुछ मजूर है । '

तो आओ मर माथ । '

ज्ञान का वृक्ष बहुत ऊंचा निकला—मेरी कल्पना, मरे अनुमान स भी बहुत ऊंचा । बादल उसक मध्य म मडरा रहे थे, और वह उनसे भी बहुत ऊपर आसमानों म बात करता दिखाई पडता था । उसकी चाटी पर एक टहनी बाह की तरह निकली हुई थी, और उसक साथ एक पत्ता लटक रहा था—पान की शकल का, या जादमी के दिल की शकल जसा । '

यही वह वजित वक्ष है ।' परिया का रानी वाली "और इसी क पत्ते पर तुम्हारे प्रश्न का उत्तर लिखा है । "

उत्तरी पक्कड न कहा, "हवाए मर जायेंगी, अगर तुम इस प्रश्न का उत्तर नहीं लाओग ।

पान के वक्ष पर चढना अत्यंत कठिन था । दा हाथ ऊपर चढता था, ता एक हाथ नीचे फिसल आता था । बीच म बड़ी बड़ी रकावटें आयी । पहले ता प्रेम आया जा मेरे नयना की ज्योति और आत्मा का शृंगार था और जिससे मेरा जीवन स्पन्दित था । उसे छोडकर आगे बढना पडा । आखा के सारे जामू पटक देन पडे । एक को छाडकर शेष सब इच्छाए, कामनाए त्यागनी पडी । फिर चारो ऋतुए आयी और अपन समूचे हथियार लायी । वहार क फूला न इशारे किये । फिर गर्मी एक चिलचिलाती प्यास की भाति शरीर क अग जग म घुसकर बछिया का तरह वार करती रही । फिर जाडा जाया और हडिडया को वजान लगा और वर्षलि भाला से शरीर को गोदन लगा । फिर शहतूत की सुगन्ध आयी और अपन पास बुलान लगी ।

' हवाए मर जायेंगी हवाए मर जायेंगा —नीच स उत्तरी पक्कड चिल्लाया ।

जब शहतूत की सुगंध आयी तो बहुत से विचार आय, बहुत स सशय, बहुत-सी शकाए आयी—‘इस तपस्या का कोई लाभ ? इस बलिदान का कोई उद्देश्य ? इस उम्र को यूँ गवाने का कोई फल ?’ और कानो में भाति-भाति के सगीत बजन लगे, कितन ही कमल से सुंदर पगो के पायल जनक उठे कितनी ही निगाहा की कोमल भावनाआ का माह्न लगी, कितन ही खजाना के मोती परो में बिखर गये ।

मोह और माया की स्रमस्त मोहकताए, अपना जाचल पसारकर खड़ी हा गयी ।

परतु उत्तरी शकड की आवाजें बराबर कानों में आ रही थी, ‘हवाए मर जायेगी, हवाए मर जायेगी ।’

चटत चढते जब सब छूट जात है, और माग म कोई नहीं आता तो नीरवता और निम्त-धता आती है । एसा अनुभव होता है जैसे सब कुछ समाप्त हो गया है, सब कुछ शून्य के गव म समा गया है, कोई साथी नहीं, कोई सगी नहीं कोई साथ में साम लेने वाला नहीं । तुम हो, और कोई नहीं है । मनुष्य जब इस अनुभूति से गुजर जाता है तो बुढापा आता है । शरीर शिथिल और अग नि शक्त हा जाते हैं । मजिल एक गज रह जाती है परतु साहस जवाब दे जाता है—‘छोड दो, विश्राम करो । छोड दो विश्राम करो ।’

चाटी एक फुट रह जाती है परतु सकल्प जी छाड बढता है— छाड दो, विश्राम करो छाड दो, विश्राम करो । जाखें बढ कर ला और इस तन स नीचे रपटते चल आओ । नीचे रपटत चले जाने म कितनी राहत, कितना जानद है !”

‘हवाए मर जायेंगी, हवाए मर जायेंगी ।’

मैंने अतिम प्रयत्न किया हाथ बढाकर कपकपाती अगुलियो स टहनी का पत्ता तोड लिया ।

पत्ते का तोडना था कि ज्ञान का बक्ष बढता चला गया, धरती के गभ में धसता चला गया । उसकी ऊचाइया धरातल में समाने लगी । और दूसर क्षण मुझे महसूस हुआ, मैं उसी खोह में हूँ । मेर हाथ म इसान क दिल की शकल का एक पत्ता है । और पत्ते पर केवल एक शब्द लिखा हुआ है ।

“शाति ।”

“शाति ?” मैंने निराश होकर कहा, “इस एक शब्द से क्या होगा ?”

“मुझे दिखाओ”—मेरे कानों में एक मधुर-भी आवाज आयी । मैंने मुड़कर देखा परिया की रानी खड़ी थी । मैंने पत्ता उमके हाथ में दिया ।

परी ने उस पत्ते पर अपने हस्ताक्षर किये और मुझसे कहने लगी, “अब इस पत्ते को तुम सारी दुनिया में ले जाओ और घूम घूमकर लोगों में हस्ताक्षर कराओ ।”

“मगर हस्ताक्षरों से क्या होगा ?” मैंने फिर निराशा के स्वर में पूछा ।

परी ने मुस्कराकर कहा, “जब शब्द में शक्ति जुड़ता है तो कालिदास और शैब्यपीयर बनते हैं । पत्थर में पत्थर जुड़ता है तो ताजमहल बनता है । जब हस्ताक्षर में हस्ताक्षर जुड़ेंगे, तो वह जजियत तयार होगी, जिसमें सत्कार के मारे युद्ध चाहने वाले बध जायेंगे ।”

महमा मेरी समझ में सब कुछ आ गया । मैंने शाति के उस पल्लव को अपने बन्ध में लगाया और खोह में बाहर निकल आया ।

खाह के बाहर तूफान थम चुका था । चारा और मुनहरी धूप खिली हुई थी । दूर दूर तक घाटियों में शाति की घटिया बज रही थी ।

प्रखर ज्योति

बचपन की कहानी है। मेरे माता पिता मर चुके थे और मैं अपने बाबा के पास रहता था। बाबा गांव के स्वामी थे और उनकी गणना गांव के धनी जमींदारों में होती थी। उनके व्यक्तित्व की छाप आज भी हृदय पर अंकित है। याद आती है ता शरीर में एक झुरझुरी-सी दौड़ जाती है। गंठा हुआ शरीर, लंबा कद, गलगुच्छे, आंखें कबूतर की तरह लाल-लाल और बाणी में शेर की सी गरज—एक मनुष्य को देखते ही मन पर आतंक-मा छा जाना है। आजकल ऐसे आदमी कम ही देखने में आते हैं। मुझे याद है जब गरजकर वे मुझे डांटते थे, तो मेरा सारा शरीर धर्रा उठता था, और यदि हमारा बूढ़ा नौकर जुम्मेन मुझे न बचा लिया करता, तो अब तक मैं अवश्य ही दूसरे लोक में होता।

उन दिनों मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मेरे दादा मुझे किसी के साथ खेलने नहीं देते थे। मेरा घर दूसरा में बिलकुल अलग थलग, एक ऊंच टीले पर था। मेरे बाबा दिन भर शराब पीते थे और जब शराब नहीं पीते थे, तो हुक्का पीते थे, और जब हुक्का नहीं पीते थे तो सोते थे। इतने बड़े घर में दो नौकर और एक भाई थी, जिसका पीला मुरझाया चेहरा देखकर चुड़ला की याद आती थी। प्रायः वह बैठी बड़बड़ाती और अपने से बातें करती थी और कभी अपने पीले गंदे दात निकालकर ऐसा बह्मि-याना कहकहा लगाती थी कि मेरे शरीर के रोगटे खड़े हो जाते। अक्सर वह मुझे स्वप्ना में दिखाई देती। मेरे ऊपर अपने पीले-पीले दात

निकाले चढी चली आती। जब वह दिखाई न देती, तो दादा की साल लाल त्रोधित आँखें धूरती दिखाई देती। मैं चीख मारकर बिस्तर से उछल पड़ता। फिर जुम्नन मुझे पुचकारकर मुझाता और घटा तक मेरे पास बैठा रहता था। मैं अपनी नही-नही उगलिया से उसका जगूठे को पकड़कर साने की कोशिश करता और अंत में उसकी घपकिया स गहरी नींद मो जाता।

मैं अपने पिता को न देखा था। जब उनकी मृत्यु हुई, तब मैं माता के गम में था। जब मेरी माता चल बसी, तब मैं केवल तीसरी कक्षा में आया था। इसलिए माता पिता के लाड-प्यार से मैं वंचित ही रहा। मा की याद भी बहुत धुधली धुधली है। बार-बार कोशिश करता हूँ, परंतु उनकी जाहृति आखा के सामने नहीं आती। मैं याद नहीं कर सकता कि वे कसी थीं। केवल उनकी गम गम गुदगुदी गोद की कल्पना कर सकता हूँ और उनके भरे भरे स्तनों की जिनसे मैं दूध पीता था, और उन मुगध को सूध सकता हूँ, जो उनके शरीर से निकलती थीं। यह सुगंध अभी तक, बद्ध अवस्था के बावजूद मेरे नयुनो में बसी है।

परंतु जब मैं बच्चा था, तब माता पिता की याद नहीं सताती थी। एक नीरवता, एक जधकार, इस घर में छाया मालूम हाता था। कमर बहुत लंबे चौड़े दरवाजे बहुत ऊंचे ऊंचे और छतें जाकाश स बाते करती मालूम होती थीं। हर समय ऐसा लगता था जैसे सब कुछ टूटकर गिर पर गिर पड़ेगा। इस प्रकाशहीन भूनेपन में अपना मास भी अजनबी मालूम हाता था।

घर से कुछ दूर नदी किनारे एक पनचक्की थी। पानी उसके पाटो के तले से निकलता था, और दूसरी ओर ढान पर सफेद झाग उडाता हुआ ओमीले मोतियों की फुहार बिखेरता, नीचे घाटी की ओर बहता था। पन चक्की का पाट अब चलते न थे। पर किसी जमाने में यह पनचक्की चलती थी। परंतु मेरे दादा को सहन न था कि उनके घर के इतने निकट पन चक्की हों और गरीब किसान और नीच जाति के लोग आकर अपना आटा पिसवायें स्त्रिया बहा इकट्ठी होकर बातें करें, ठिठोली करें और शोर मचायें। इसलिए पनचक्की बंद ही चुकी थी, और पनचक्की के अंदर

भाग की झाड़िया उगी हुई थी, जिनमे नीलराज की कोमल बेल क चौड़े-चौड़े पत्ते और बड़े बड़े फूल विस्मय स आखे खोले दिखाई पडत थ । कदाचित वह यह न मालूम कर सके थे, कि वे यहा क्या खिले है, जहा कोई उह नही देख सकता । यदि व किसी वाग म, किसी चश्मे क किनारे, किसी बाट म उग होन तो भी कोई बात होती । परंतु यहा में अवश्य इहे देखता था । माझ के विपादपूण वातावरण म जब हवा के थाक हल्की हल्की मिसकिया लेत है, और दिन भर की थकी हारी तितलिया भग के चामल तुरयो और नीलराज के फूलो से लिपट जाती है, उनकी मादक सुगंध से वे मुग्ध होकर सो जाती हैं तब में घास पर लेटकर उह देखता । मैं उनकी गहरी नीद के नशे को अपनी पलको पर महसूस करता । फिर शीगुर और मजीर बोलने लगते । पानी के किनारे मडक टरनि लगत । और यह नशीला, गुजारभय उदास वातावरण मेरी पलका को इतना भारी कर दता, कि मैं वही सो जाता । जुम्न ने बहुधा मुझे वही, चक्की क पास नोया पाया था । वह मुझे य् सोता देखकर चुपक स गा म उठा लता और घर लाकर विस्तर पर मुला दता । और सुबह जब मैं उठना, तो यह जानकर बडा हैरान होता कि मैं घास पर नही, मखमल के गद्दे पर साया पडा ह । न पानी है, न फूल है, न मडक है न तितलिया है । वही साय-माय करता हुआ घर है, वही ऊची ऊची दीवारें हैं, और वही बावा की लाल-लाल डरावनी आंखें है ।

कभी कभी म पतचक्की स भी आगे चला जाता था । घाटी पर चढ कर, और पुराने मंदिर की टूटी फूटी इमारत स गुजरकर, उस बडी चट्टान के पास जा पहुचता, जो नदी के पश्चिमी किनार पर थी । चट्टान खडी थी और पानी, बूद-बूद करक, ऊपर से नीचे गिरता था । इस पानी म गंधक और चूना घुला हुआ था, जिसस धरती पर तिकोनी और चौकानी शकने बन गयी थी । चट्टान पर इतनी काई जमी हुई थी कि छून म मखमल और साबुन के झागा-सी कोमल लगती थी । काई कहीं स हरी, कहीं स ऊदी, कहीं से गहरी कासनी थी । महा पर एक छाटी-सी खोह भी थी, जिसके अदर किमी ने चारो ओर सिंदूर पात रखा था । मैं अन्तर सिटलो और छिपकलिया को यहा सोत हुए देखता । कभी कभी काई जगली

खरगोश अपन लवे लवे कान खडे किये हुए हवा को सूघता दिखाई देता और फिर एक छपाके में, सफेद ऊन का गाला बना हुआ, दौड़ता हुआ आखों से ओझल हा जाता ।

बस, यह पनचक्की, यह बूद बूद गिरता पानी और यह छोह—मेरे एकांत के साथी थे । यही मेरे सगी, सहचर और स्नही थे । घर में मेरा जी न लगता क्योंकि बाबा स्कूल के लड़कों के साथ भी खेलने न देते थे । घर से बाहर किसी मनुष्य की शकल दिखाई न देती थी—इतना अलग-थलग था यह घर । यह भी पता न लगता था कि स्कूल से लौटने के बाद लड़के कहाँ समा जाते हैं । क्या उनके घर में भी यही भयानक एकांत है ।

एक दिन की घटना है कि मैं दोपहर तक अपन सायिया के साथ खेलता रहा । एस समय पट का हर पत्ता, घाम का हर गुच्छा, जगल का हर टिड्डा मेरा मित्र बन जाता अपन और जगल के जीवन के उन रहस्या का उदघाटन करता, जो मानव न आज तक काना में नहीं सुने और आँखों से नहीं देखे । कितनी रोचक कितनी महत्त्वपूर्ण आर कितनी बहुमूल्य होती है वे कहानियाँ, जिन्हें हम बड़े होकर भूल जाते हैं । काश, हम उन्हें याद रख सकें उन्हें उमी भ्रम, उसी सच्चाई, उसी भावपूर्ण ढंग से ससार के सामने रख सकें, जिसे हमने बचपन में उन्हें सुना था । तब शायद यह जीवन बदल जाये यह सारा विश्व बदल जाय, उसका अधापन, उसकी प्रकाशहीनता उसकी अनानतापूर्ण स्वाथपरता बदल जाय, वह एक नय प्रकाश, नय रूप और नय जाह्लाद में जगमगा उठे । काश, मानव बचपन की उन कहानियों को याद रखे जीवन के उस रोमाञ्चकारी रहस्य को याद रखे जो उमन जल की कापती हुई क्वारी बूद से, नीलराज की अलझली क्ली से घास के कोमल अकुर से और हवाआ में उड़ते हुए पतझड़ के अतिम पत्ते से सुना था । मडक अब भी टरते हैं नीलराज के फूल अब भी मुस्कराते हैं, चट्टानों से पानी अब भी बूद-बूद टपकता है, परतु मानव के कान बहर हा चुके हैं, आँखें अंधी और बुद्धि मंद हो चुकी है । अब वह खरगोश और फूल से नहीं, बारूद और खून से खेलता है, और रात दिन रोना है और नहीं जानता कि वह क्या राता है । वह नहीं जानता कि उसने अपन बचपन के सायिया के साथ धोखा किया है । उस

मालूम नहीं, उसकी आत्मा में किस गद्दारी का जहर छलकता है, उसकी आखा में किस टीस के आसू है। वह अघा हो चुका है और अघेणन में जिन भयानक स्वप्ना का दखता है, उन्हें अपने जीवन में व्यवहार का रूप देता है।

यद्यपि मैं अब बूढ़ा हो चुका हूँ, और जीवन अस्ताचल की तालिमा की भाँति प्रति क्षण डूबता चला जा रहा है तो भी मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है, जब मैं इतवार के दिन अपने साथिया के साथ खेलता रहा। मैं अपने साथिया से कहा था कि मुझे भूख लगी है, मैं घर जा रहा हूँ। मुझे याद है, उस टिड्डे ने मेरा मजाक उड़ाया था। उसने कहा था कि वह तो घास के गुच्छा पर फुदकत फुदकत अपना नास्ता कर लेता है। फूल एस मुस्कराया था, जम कह रहा हो कि वह तो खाना ही नहीं खाता। हवा में कपकपाता पत्ता कह रहा था कि वह तो हवा ही से अपना भोजन प्राप्त कर लेता है। उसने मेरा मजाक उड़ाया कि हम खाना आग पर जलाकर बनाते हैं, तरह-तरह की गंध के यघार देते हैं और इस जल गंध-पूण खान को खाकर दिन भर खट्टी-खट्टी डकारें लते हैं। और इस पर अपने का बुद्धिमान, सभ्य और स्वस्थ समझते हैं। सब मानिए वचन में मैं सब कुछ सत्य अपने साथिया से सुन धे। परंतु अब मैं कुछ नहीं सुनता, अब मैं गद्दार हूँ, वे मुझसे बातें नहीं करत।

खर, मुझे बड़े जोरों की भूख लगी थी और मैं वहाँ से चले दिया। भगवान जान यह कस हुआ कि मैं रास्ता भूल गया और घाटी के नीचे आने के बजाय, घाटी पर आ निकला। यह अजीब स्थान था—मुनमान और बीरान, पथरीला और खुश्क। चारों ओर लाल लाल बजरी फली हुई थी। सिरे पर सूरज चमक रहा था और पानी का कहीं निशान न था। मेरे निकट शीशम का एक पड था। जड के पास से उसके दा तने हो गए थे। ऐसा लगता था, जस में दो तने नहीं हैं, दो आदमी हैं जो उकड़ू बठे मुर्गी हलाल कर रहे हैं। मैंने देखा कि मैं रास्ते से बहुत दूर आ गया हूँ। रास्ता, जो मेरे घर को जाता था, बहुत नीचे रह गया था।

मैंने इस पड का सहारा लिया और इसके दोनों तनों के बीच से फसाग कर आगे बढ़ा। यहाँ पर कभी विटग का घुसा रहा हागा, परंतु किसी ने

इस वक्ष को काटकर जला दिया था। धरती में कायले दबे पडे थे और आस पास की मिट्टी भी जली हुई दिखाई देती थी। विटग का वृक्ष यद्यपि जल गया था, फिर भी उसकी जड़ें फूट आयी थी। उन्होंने अपनी नन्ही-नन्ही लचकीली कोमल बाह धरती से बाहर निकाल ली थी। और वे बाह अब हरे-हरे पत्ता के झुरमुटो में छिप गयी थी।

मेरे लिए यह स्थान, यह दृश्य, यह वातावरण बिलकुल नया था। मैं घुटनो के बल बैठकर इन हरी भरी टहनिया की ओर बढ़ा। सहसा हवा चलने लगी और विटग के पत्ते हूप स नाच उठे। मैं जब उठा हरी भरी टहनिया के समीप पहुँचा तो जैसे सारा ससार ज्योतिमय हो उठा। कोई गान लगा कोई नाचन लगा, किसी के पायल झनक उठे, शहनाई बज उठी, और कुमारिया के कहकहा के स्वर बिखर गये। यह सब कुछ मैंने अपने कानों से सुना। और आँखा से जिज्ञासा और मन में खोज की मनसनी लिय मैं टहनिया की ओर बढ़ता गया। मुझे अपनी ओर आन दायकर विटग की टहनिया सहसा बोल उठी, "आओ आओ, नह बालक, तुम भी इस हूप, इस उत्साह, इस अनंत नृत्य और असीम जाह्लाद में लीन हो जाओ।"

मैं और आगे बढ़ा। मैं देखना चाहता था कि ये शहनाइया के स्वर और कुमारियों के कहकहे कहाँ से आ रहे हैं।

मैंने पत्तों का इधर उधर हटाकर अदर झाँका।

क्या दृश्यता है कि इन पत्तों के बीच बाल चमडे का एक पुराना बकना पड़ा है और उम बकम के अदर साबले-से रंग का एक प्यारा-सा बच्चा पड़ा है। बच्चे के बाल घुघुराने थे। आँखें छोटी छोटी थी। परन्तु उन आँखों में निकलती निगाह इतनी पनी थी कि हृदय में बरमे की तरह घुंसी जाती थी। उमके मुँह पर मुस्कान न थी, विपाद भी न था, जिज्ञासा भी न थी। बस, वह चुपके से नेटा था और जब मैंने उसे अपनी बाँहा में लना चाहा, तो वह बड़े शान भाव से मेरी गाद में धा गया। उमका भरा भरा मागल शरीर मेरी प्यारी आत्मा को सपन करता चला गया। मैंने अनुभव किया कि बच्चे का गाद में लन ही नृत्य की शकार बंद हो गयी थी। शहनाई के स्वर मौन हो गये थे। कुमारियों के कहकहा एक माय निस्तब्धता में बदल गये थे।

बच्चा अब मेरी गोद में था। मैं बच्चे से पूछा, "तुम कौन हो?"

बच्चे ने बड़े शांत स्वर में कहा, "मैं प्रेम का देवता हूँ।"

मैंने पूछा, "तुम यहाँ अकेले कैसे रहते हो? तुम्हें डर नहीं लगता? मुझे तो अपने कमरे में भी डर लगता है।"

उसने कहा, "मैं क्या करूँ, मुझे यहाँ अकेला छोड़ दिया गया है।"

मैंने उसे उठा लिया और चलन लगा। चलते चलते मैंने उससे कहा, "मैं भी अकेला हूँ। आओ, हम तुम इकट्ठे रहें।"

एकाएक उसने पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है?"

मैंने उगली के इशारे में अपना घर दिखाया, "वहाँ हमारा घर है। यहाँ से जो पगडंडी नीचे की जाती है, यही हमारे घर की जाती है। मैं अपने बाबा के पास रहता हूँ।"

उसने कहा, "ओह, तुम अपने बाबा के पास रहते हो?"

मैंने कहा, "हाँ, मेरे माता पिता मर चुके हैं।"

वह बोला, "मेरी माँ भी मर चुकी है।"

मैंने देखा उसकी आँखों में आसूँ छनक आये।

मैंने उसे जार से छाती से लगा लिया और कहा, "चलो हमारा घर। हम दोनों साथ रहें।"

उनके होठों पर एक विषादपूर्ण मुस्कान आयी। उसने धीरे से कहा, "मैं तुम्हारे घर नहीं जाना चाहता। मैं यहीं रहूँगा।"

यह कहकर वह मेरी गोद से उतर गया और फिर टहनीयों के झुरमुट में लोप हो गया।

मेरा विचार है उस समय मैं उसके जो बातें करने और इस प्रकार चले जाने पर तनिक भी विस्मित नहीं हुआ। मैंने कदाचित्त यह भी नहीं सोचा था कि यह इतना नरम सा बच्चा कैसे बोलता है या किस प्रकार चलकर झुरमुट में गायब हो सकता है। मैंने उसके एक उजाड़ स्थान पर मिलने से, मैं उसके बातें करने से विशेष अवरज हुआ। मैंने यह भी ध्यान नहीं किया कि प्रेम का देवता भी कोई विशेष व्यक्ति होता है। मैंने प्रेम के देवता का उसका नाम ही समझा। मुझे उसकी यह बात भी असाधारण नहीं लगी कि उसने मेरे घर जाने से इकार किया। सच पूछो तो मेरा भी जी उस घर में रहने को नहीं

चाहता था। इसलिए मुझे इस घटना में कोई रहस्यपूर्ण बात मालूम न हुई। हा, इस बात पर अचरज अवश्य हुआ कि मुझे आदमी का बच्चा मिला था, और वह भी सिर से पाव तक नगा, और इतना प्यारा, और भरे जगल में बिलकुल अकेला।

घर जाकर मैं बाबा से इस घटना का जिक्र किया। जुम्नन भी वही खड़ा था और बूढ़ी माई भी आकर यह किस्सा सुनने लगी। वे सब लाग चुपचाप मेरी बात सुनते रहे। मैं देखा उन दोनों में से किसी ने मेरी बात का प्रतिवाद नहीं किया। मेरा विचार था, मेरे बाबा मुझे पीटेंगे। परंतु वह कुछ न बोले।

कुछ ठहरकर जहाँन पूछा, 'वह नहा सा बच्चा तुमने कहा देखा था? वह जगह ठीक ठीक बताओ।'

मैं वह जगह बताना भूल गया था।

मैंने कहा, 'उधर घाटी में एक जगह है जहाँ चारों ओर लाल लाल बजरी बिखरी हुई है। वहाँ घास का एक तिनका भी नहीं है। हा, शीशम का एक पड़ है और बिटग का एक जला हुआ बक्ष, जिसकी जड़ में से अब नयी-नयी टहनियाँ फूट आयी हैं।'

'बिटग का जला हुआ बक्ष यह सुनते ही मेरे बाबा का रंग उड़ा। फिर वे घड़ाम से घरती पर गिर गये। जुम्नन भय से धिधियाने लगा और बूढ़ी माई—वह हसने लगी। ऐसी भयानक वृत्तियाना हसी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं सुनी। न ऐसी हसी फिर कभी सुनने की इच्छा रखता हूँ।

उसी रात बहोशी की हालत में बाबा चल बसे। बूढ़ी माई बिलकुल पागल हो गयी और कपड़े फाटकर गाव में फिरने लगी। बाबा के बाद मैं ही गाव का स्वामी था। नबरदार और जेलदार भी। जुम्नन अब मेरे कमरे में मेरे साथ सोता था क्योंकि बाबा और बूढ़ी माई के चले जान के बाद मुझे इस घर में अधिक डर लगने लगा था। कभी कभी जुम्नन मुझे अजीब सी दृष्टि से देखता और पूछता, "क्या तुमने सचमुच उस बच्चे को देखा था?"

और मैं कहता, "मैं कोई झूठ बोलता हूँ? चला, फिर किसी दिन

वहा चले। मेरा विचार यह है वह बच्चा अभी तक वहीं होगा—बिटग की टहनिया के पीछे। तुम चुपके स पीछे पीछे आना। मैं उस बच्चे को ढूँढ करूँगा। फिर मैं उसे गो म उठा लूँगा। तुम आकर उसे मुझे खोज लेना।”

अत एक दिन मैं और जुम्मन वहा गये। परंतु प्रतीक बात थी कि न अब वहा पत्ते नाच रहे थे, न शहनाइयो के स्वर और न कुमारियों के कहकहे सुनाई दे रहे थे। मैंने बार बार टहनिया और पत्तों को हटाकर देखा, वहा कुछ न था। बस एक ओर भिड़ी में दवा वाले रंग का बमडे का बक्सा पड़ा था, चारों ओर लाल लाल वजरी थी और शीशम का पेड़ और बिटग का जला हुआ वृक्ष, और वही पगडडी जो मेर बाबा के घर की मार जाती थी।

जुम्मन का रंग पीका पड़ गया। उसने मुझमें कुछ न कहा। थोड़ी दर बाद बोला “चला पर चले।”

फिर समय बीतता गया। और मैं बड़ा ही गया। तब मुझे बताया गया, मेर बाबा को गाव की एक कुमारी से प्रेम हो गया था—गगाध प्रेम। कुमारी गभवती हो गयी। सहमा बाबा को दो-तीन मास के लिए बाहर जाना पड़ गया। लौट तो पता लगा कि उनकी प्रेमिका क बच्चा हाने वाला है। किसी ने बच्चा दिया, यह बच्चा उनका नहीं, किसी और का है मेरे बाबा बड़े सदेही, मकीण हृदय और काना के बच्चे थे। एक दिन जब वह लडकी मेरे बाबा स मिलन उभी घाटी पर बिटग के वृक्ष के नीचे आयी, तो मेर बाबा ने सप्रेम, भाव और ईर्ष्या भाव के अधीन उसे वही मार डाला। वे नगरदार थे, जेलदार थे, मक्के घनी जमीनार थे, इसलिए बच गये। किसी को उनके विरुद्ध बोजन का साह्य न हुआ। मेरे बाबा न बिटग का वह वृक्ष भा जला डाला, जिसक तले वे मिला करते थे, जिससे उसकी काई भी निशानी शेष न रहे। उनकी प्रेमिका इसी बिटग के वृक्ष के नीचे मारी गयी थी। वह प्रेम का स्वप्न कदाचित् वही बालक होगा, जा उस स्त्री के पेट म था और जा कई वर्ष बाद मुझे जने हुए बिटग की टहनिया क बीच मिला।

और वह लडकी उस बूढी माई की बेटो थी, जा अब पागल हो चुकी थी।

वह हरी भरी घाटी उसी दिन से बीरान हो गयी । वहा घास तक पैदा न हाती थी । पहाड की चाटी से लकर घाटी क उस कोने तक, घाटी का वह भाग वनस्पति से पूणतया वचित हो गया । कितन अचरज की बात है कि लोग इस बात पर विश्वास नही करत । उह यह कहानी सुनाता हू ता व समझत है कि मैं शायद स्वप्न दखा था । मैं बच्चा था, ब्रिटग की टहनिया म सा गया और फिर इस खूनी काड न स्वत मेरी उप चतना म करवट ली ।

परतु यदि यह स्वप्न भी हो, ता भी मैं इस यथाय से अधिक स्पष्ट और विश्वसनीय रूप म दखा । कस अपनी आखा पर विश्वास न करु ? मैं वहा उस बच्चे के अतिरिक्त, न उस लडकी को दखा, न छुरे को न जलत हुए ब्रिटग का । अब साचता हू शायद वह प्रेम का दवता ही था, जिसन मेरी छाती से लगाकर अपना तीर बाबा की छाती म पार कर दिया और वे इस चोट को सह न सक । परतु मेरा विचार है, मेर बाबा इसस पहले ही मर चुके थ । वे जीवित भी थे, तो मुदों स बदतर । और आज हमार बीच लाखो कराडो एस आदमी है, जो रात दिन प्रेम का सहार करत ह— किसी ब्रिटग के नीचे, किसी सोफे के किनारे किसी घर की चारदीवारी मे । व अपनी प्रेमिका की हत्या कर देत है, और नही जानत कि ऐसी हर हत्या कही न कही किसी हरी भरी घाटी को बीरान कर देती है । वे किसी निर्दोष असहाय और अबोध बालक को अकेला छाड दत है, और वे नही समझ पात कि उनके लिए जीवन और ससार इतना सीमित क्यो हा गया है चारा आर लाल लाल बजरी बयो है, धरती के सोत क्या सूख गये है और उसका कण कण क्या कस्ण श्रदन कर रहा है ।

य लोग कुछ नही समझ सकत और अंधे पथिको की भाति उस बजर, बीरान पथरीली पगडडी पर चलत चले जात है, जो मेर बाबा क घर को जाती है ।

परमात्मा

परमा मा की आँखें काँप स लालहा गयी । उसने क्रोध भरी दृष्टि स स्वग के बडे पुजारी की आर दखकर कहा, "हमीरपुर ग्राम म पासी किसान और उसका परिवार कितने दिना स फाके कर रहा है, और तुमने अभी तक उसके लिए कुछ नहीं किया ?"

बडा पुजारी धर धर कापने लगा । हाथ जोडकर बोला, "प्रभा, मन तो बडी चेट्टा की है, कितु क्या करू, बेचार का भाग्य ही एसा है । कोई युक्ति कारगर नहीं होती ।"

"कस नहीं होती ? परमा-मा ने अपने दड को फश पर मारकर कहा, और समस्त ब्रह्माड म प्रकाश बर्पा-सी हो गयी । 'चला, हम देखत हैं, पासी किसान हमारा भवन है । वह प्रत्यक् समय हम याद करता है । यह हमारा धम है कि हम बिपत्ति के समय उसकी सहायता करे ।'

"सत्य वचन प्रभा ।' बडे पुजारी ने माथा टककर कहा ।

पासी किसान ने द्वार खोला ।

बडे पुजारी ने अपन साथी की आर सकत करके कहा, "यह परमात्मा है ।" पासी किसान परमात्मा के चरणो में गिर पडा ।

"भेरे घम, मेर मान क रक्षक ! मुझ पर दया करा । दो दिन स बच्चे भी भूखे हैं । उनका बिलखना मुजसे दखा नहीं जाता । अपने भक्त की

सहायता कीजिए ।”

परमात्मा न पूछा, ‘तुम्हारे पाम अनाज था वह क्या हुआ ?”

बड़े पुजारी न खाता देखकर कहा, “तुम्हारे पाम दम बीघे भूमि है । इस वष हमने वर्षा भी काफी मात्रा में स्वीकार की थी । वह सबकी सब तुम्हारी भूमि पर पड़ी । इस खात में वर्षा का मारा हिमाव लिखा है । इस वष बजट में हमने अकाल भी नहीं रखा, बवल किमाना की भलाई के लिए, ताकि वह किसी प्रकार की शिकायत न रहे । इस पर तुम कहत हो कि तुम भूखे हो ।

किमान न हाथ जोड़कर कहा “प्रभा ! मैं पाम धाडा-मा अनाज वचा था, वह भी बनिया उठाकर ले गया ।”

परमात्मा ने अपना दंड फश पर मारा और धरती भय से कांप उठी । कड़ स्याना पर भूकंप के झटके आये और हजारों मिट्टी के घर गिर पड़े । परमात्मा ने क्रोध भरी दृष्टि में इधर उधर देखा फिर कहा ‘पुजारी, हम उस बनिय के घर ले चला ।’

जा आना !’ बड़े पुजारी न हाथ जोड़कर, माथा टक्कर कहा ।

बनिया धबकाकर बाहर निकला ।

बड़े पुजारी न कहा “आप परमात्मा हैं ।

‘जी’ बनिय ने बत्तीसी बाहर निकालत हुए कहा ही, ही, ही । चींटी के घर भगवान आय है । निधन, भूखा बनिया, भला क्या सेवा कर सकता है ! किंतु फिर भी जो कुछ है, भगवान का दिया है । आइए, भीतर आइए पधारिए ।’

कुछ क्षणों में परमात्मा के चारा ओर बनिय के बच्चे-बाल इकट्ठे हो गये और नाचने लगे । एक बच्चा कंधे पर चढ़ बैठा और एक ने जेबें टटोलनी आरंभ कर दी । तारों के जवाहरात ओस के मोती, चादनी के तार सूय का सोना सब कुछ जेबा में स निकाल लिया और फिर अपनी मा की गोद में डाल दिया ।

बनिये और उसकी पत्नी ने भगवान को आसन पर बैठाया और गल

मे हार डाले, और फिर बोले, “भगवान ! हम आपके लिए इस गाव मे एक तिमजिली धमशाला बनवाना चाहते ह, परतु हम निधन हैं। हम इतना धन दीजिए कि हम ।”

एकाएक भगवान की आँखें अगारे की भांति चमकने लगी। उन्होंने शोध म वापते हुए स्वर म बनिये को टाककर कहा, “तुम्ह लज्जा नहीं आती ? तुमने पासी किसान के घर से अनाज उठा लिया। अब बेचारा भूखा मर रहा है।”

बनिय ने दडवत की और धरती पर सिर रखकर बोला, “मेरे पास जो कुछ है भगवान का है। किंतु एक वितती है। पिछले वष अकाल पडा था, तब मैंन पासी किसान का चार मन गेहू उधार दिया था। पासी ब्याज समेत मूल चुकान की राजी था। इसलिए जब फसल तयार हुई, तो उसन अपनी इच्छा से मुये अनाज लौटा दिया।’

‘ चार मन गेहू पर ब्याज कितना होता है ?” परमात्मा ने पूछा।

“कवल चार मन, भोले बादशाह ! दीनदयाल, वस चार मन !”

परमात्मा ने बडे पुजारी की ओर देखा। उसने खाता खोला और पने पलटकर बोला, “इतना ब्याज उचित है। खात मे लिखा है।”

बनिय न प्रसन्न होकर कहा, “मैं भगवान के आदेशो के विरुद्ध कोई काम नहीं करता। हा, वह जो गाव का जमीदार है, वह बडा अत्याचारी है। किमानो का बडा दु छ देता है। बलपूर्वक अनाज हडप कर लेता है।”

परमात्मान बडे पुजारी का आज्ञा दी कि वह जमीदार के यहा चले।

परमात्मा को जाते देखकर बनिया गिडगिडाया और बोला, ‘ और देवता, वह मेरी तिमजिली धमशाला ।”

जमीदार के घर मुजरा हो रहा था। वह बडे आदर से पेश आया।

“आइए, आइए, परमात्मा जी। यहा इस कुर्सी पर बठिए—इस कुर्सी पर, मेरे निकट। यह देखिए, मैंन जयपुर से नयी नाचने वाली बुलायी है। इसकी कमर का लोच देखिए। इसका नाच—हाय-हाय ! बडे दिनो के

बाद आपकं दर्शन हुए हैं। बचपन में एक दो बार माक साय मंदिर गया था, (हसकर) आपकी मूरत अवतो पहचानी नहीं जाती। कई दिना स साच रहा था कि मंदिर में आपकी नयी मूर्ति की स्थापना करा दू, परंतु क्या करू, लडाइ के कारण खच इतन बढ गये हैं कि । खर, मैं प्रण करता हू कि अगले वष आपकी नयी मूर्ति अवश्य स्थापित करा दूगा ।'

परमात्मा ने कहा, ' हम उस पासी किसान के बारे में ।'

'हाय, हाय क्या अदा है ।' जमीदार ने नाचन वाली की ओर देखत हुए कहा ।

भगवान न बडे पुजारी की ओर घूरकर देखा, किंतु वह नाच देखने में इतना लीन था कि उसन कोई ध्यान न दिया ।

साचार परमात्मा का फिर कहना पडा, "उस पासी किसान के सबध में हम ।'

'अजी आप किस कमीने की बाते करत है ? वह तो साला बडा बदमाश है । उसके पास भूमि है, वह वास्तव में मेरे पिता की दी हुई है । मेरे पिता ने प्रस न होकर दी थी । वास्तव में मेरे पिता को धरती देने का कोई अधिकार ही न था । सयुक्त परिवार की सपत्ति किसी गैर किसान को कस दी जा सकती है ? यह तो मरसूर गैर कानूनी कायवाही है । मगर वह तो ऐसा जानिए कि मैं जरा आपका भक्त हू । कबल अपना भाग लेता हू—अनाज में से केवल एक तिहाई भाग । करना देखा जाय ता वह भूमि मेरी है ।

परमात्मा न पुजारी स कहा, "खाता देखो ।'

"अय ?" बडा पुजारी अभी तक नाचन वाली की आर देख रहा था ।

परमात्मा ने चिढकर कहा, "खाना देखो, यह भूमि किसकी है ?'

बडे पुजारी ने खाता देख भाल कर कहा, "जमीदार सच कहता है । धरती का मालिक वही है ।'

जमीदार ने कहा "देखा भगवन, आपका दास भला काह का मूठ बोलेगा ? अरे ! आप ता उठ खडे हुए । जरा गाना सुनिए । अरे भई मुन्नु, जरा पान बनवा लाना । वह जरा अररर, उधर न जाइएगा हजूर । उधर पर्दा है । हा यह रास्ता है ।' वास्तव में मैं स्वयं चाहता

हू कि किमाना की सहायता करू। परतु क्या करू साहब, मालगुजारी इतनी है कि तोबा भली। इलायची लीजिए। तनिक रियासत के हाकिम स मिलिए। यदि वह मालगुजारी कम कर द तो सारी कठिनाइया दूर हा जायें।”

चपरामी ने कहा “इस पर्चे पर अपना नाम, पता और काम लिख दीजिए। साहब इस समय सर फराटा मुक्जर्जी से बातें कर रहे है।”

भगवान ने पर्चे पर अपना नाम लिख दिया।

चपरामी पर्चा लेकर भीतर गया। थोड़ी देर बाद वाहर आया।

बोला, “साहब बालते हैं, पाच मिनट ठहरो। वे अभी खाली होत हैं। साहब न बडे पुजारी को भी सलाम बोला है।”

पाच मिनट बाद पशी हुई।

रियासत के हाकिम न बडे कोमल और दिनयमूण स्वर म कहा, “वास्तव मे सर फराटा मुक्जर्जी स भेंट का यही समय निश्चित हुआ था। इसीलिए आपको प्रतीक्षा करनी पडी। नही ता, क्षमा कीजिए, मैं तो आपकी प्रजा का सेवक हू।”

‘पासो किसान भूखा है। आप, मालगुजारी बहुत लेत है। यह बहुत बुरी बात है।’

“दखिए देखिए, आवश में न आदए।’ हाकिम बडे मग्न स्वर म बोला, ‘मुये रियासत का राज काज चलाना है। इमक लिए रुपया चाहिए। रुपया कहा से आयेगा, यदि मैं किसाना से मालगुजारी न लू? आजकल चारो आर की रियासतें वैरी हो रही है, इसलिए शस्त्र बनाने वाले कारखाने लगान पड रहू है। इन सब टर्चों को पूरा करन के लिए मालगुजारी और लगान बडा दिय गय है। इसमे आधि र पासो किसान ही का लाभ है। नही तो रियासत के साथ साथ उसकी धरती भी दूसरी रियासता के पास चली जायेगी।”

बडा पुजारी बोला, ‘हाकिम ठीक कहत हैं।’

हाकिम बोला, “म तो सदा स आपका सेवक हू। किंतु यह तो

सोचिए कि क्या यह मेरा धर्म नहीं है कि मैं रियामन की रमा मनुओं के हमले से करूँ ?”

बड़ा पुजारी बोला, “हाकिम ठीक बहत है।”

चौबे जी मंदिर के द्वार पर बड़े हुए भग घोट रह थ। मंदिर के चारो ओर फलदार वक्षो का बाग था और बाग में मिली पाच एकड भूमि, जिसमें अनाज, सब्जी-तरकारी सब कुछ होता था।

परमात्मा ने कहा, “यह अनाज तुम पासी किसान को दे दो।”

चौबे न भग का सोटा चढाने हुए कहा, “बाबल हुए हैं आप ? यह अनाज यह फल, यह फुनवारी सब भगवान के अर्पण है। और जो वस्तु एक बार भगवान के अर्पण कर दी जाय उसे कोई दूसरा मनुष्य नहीं ले सकता। क्या आप परमात्मा होकर इनका भी नहीं जानते ?”

परमात्मा न बड़े पुजारी की ओर देखा, और बड़े पुजारी ने परमात्मा की ओर। फिर बड़े पुजारी ने मिर हिताकर कहा, “चौबे जी ठीक कहन हैं। खान म एसा ही लिखा है।”

सायकाल को थके हारे दोनो सायी पासी किसान क द्वार पर वापस पहुच गये। पासी के घर के भीतर में रोन पीटने की आवाजें आ रही थी। छोटा लडका भूख से निढाल होकर मर गया था।

और किसान की पत्नी अग्नी छाली पीट रही थी।

पासी किसान ने पूछा “अनाज लाये ?”

परमात्मा ने सिर झुका लिया।

बड़ा पुजारी बोला, “धोरज धरो पासी किसान—गोरज के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं।”

‘हाय मेरा लाल ! हाय मेरा न हा चाद !’ पासी की स्त्री बिलब उठी।

एकाएक परमात्मा का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उसने सिर

ऊँचा करके कहा, "पासी किसान, आओ हम तुम्ह और तुम्हारे समस्त परिवार को स्वर्ग ले चलते हैं।"

पासी किसान बाला, "वहाँ खान को क्या मिलेगा?"

पुजारी ने कहा, "वहाँ खाने को कुछ नहीं मिलता। वहाँ केवल परमात्मा के रूप की छटा-ही छटा है।"

पासी किसान ने कठोर स्वर में कहा, "परमात्मा के रूप की छटा तो यहाँ भी है।" और यह कहकर उसने द्वार जोर से बंद कर लिया। परमात्मा और बड़ा पुजारी चकित और दुःखी होकर बाहर खड़े रह गए।

जब वे दोनों विभिन्न लोको से हात हुए अपने स्थान पर वापस आए तो बड़े पुजारी ने चुपके से परमात्मा के कान में कहा, 'देखा आपने ये किसान कितने वृत्तन्त हैं? स्वर्ग में भी नहीं आना चाहते।'

परमात्मान ने रोषपूर्ण स्वर में कहा, 'दफा करो, नरक में डाल दो सबको।'

बड़े पुजारी ने मुस्कराकर कहा, "इसका धर्म पहले ही से प्रबन्ध कर दिया है।"



